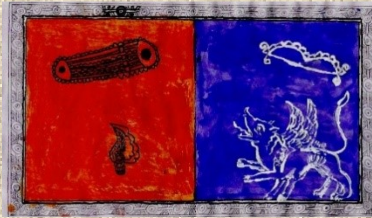
ISSN 2229-547X VIDEHA

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯: 𑓓𑓕𑓖 𑒧 𑒁𑓀𑒏 𑓑𑓕 𑒁𑒏𑓂𑒙𑒴𑒥𑒩 𑓒𑓐𑓒𑓒 (𑒫𑒩𑓂𑒭 𑓑𑓕 𑒧𑒰𑒮 𑓑𑓗𑓘 𑒁𑓀𑒏 𑓓𑓕𑓖)

(𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 www.videha.co.in)

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒂𑒢𑓂𑒠𑒼𑒪𑒢: 𑒧𑒰𑒢𑒳𑒭𑒲𑒧𑒱𑒯 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒰𑒧𑓂



𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯- 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒧 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒰𑒏𑓂𑒭𑒱𑒏 𑒃-𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰

𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏: 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩



 http://www.geocities.com/.../bhalsarik_gachh.html , http://www.geocities.com/ggajendra आदि लिंकपर आ अखनो ५ जुलाइ २००४ क बाद http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html धरि इंटरनेटपर मैथिलीक प्राचीनतम उपस्थितिक रूपमे विद्यमान अछि *(किछु दिन लेल http://videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html लिंकपर, आर्काइव wayback machine of https://web.archive.org/web/*/videha 258 capture(s) from 2004 to 2016- http://videha.com/ भालसरिक गाछ-प्रथम मैथिली ब्लॉग / मैथिली ब्लॉगक एग्रीगेटर)।* ई मैथिलीक पहिल इंटरनेट पत्रिका थिक जकर नाम बादमे १ जनवरी २००८ सँ 'विदेह' पड़लै। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि, जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब "भालसरिक गाछ" जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि।

(c)२०००-२०२२। विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर। Editor: Gajendra Thakur.

पत्रिकाक मासक १ आ १५ अंक निकलैत अछि आ मासक १ आ १५ तिथिकेँ www.videha.co.in पर ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

Videha e-Journal: Issue No. 356 at www.videha.co.in



सम्मानार्थ धन्यवाद

चित्रकार- *चिर विदेह सम्मानसँ सम्मानित श्री धनकलाल मण्डल द्वारा*

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत्। हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्॥

[illegible]

[illegible]

मान भाषया क्वंगी द्यका निमात का॰ भाइयान (गद्य-पद्य क्वंगी)
मंथ ऊँ ने वाक्य ज्या तँ थ्व त्रिभुवनक्वंगी ग्रन्थ भाषा कीतिक्वंगी
लिपी का ना यमबन।

अनुक्रम

थ्व ग्रंथया अङ्गः-

१.१.कविलब्बर नाउतक ६ ला कक्षा- कक्षा-१ ज्ञक्षपन
सम्पादकीय समीक्षा संयोजकीय सम्पादकीय धूम्र पत्र

१.२.कविलब्बर नाउतक ६ ला कक्षा- कक्षा-२ ज्ञक्षपन
सम्पादकीय समीक्षा संयोजकीय सम्पादकीय धूम्र पत्र

१.२.कविलब्बर नाउतक ६ ला कक्षा- कक्षा-२ ज्ञक्षपन
सम्पादकीय समीक्षा संयोजकीय सम्पादकीय धूम्र पत्र

१.४.कुमार मनाज कश्यप- ऽला लक्ष्मीकक्षा

१.५.जगदीश प्रसाद मण्डल- विद्यानन्द प्रबलता

१.६.जगदीश प्रसाद मण्डल- भाउपन (धाराबाहिक उपन्यास)

१.७.भारतीय मनोविज्ञान- ग्रंथ- पवंपनानाशी नाउन (पक
नाथ)

१.स्नमन्तंकन या "पवन"- पञ्चधनक ढबता संत नाना कसं
छिनदन

𑓒.𑓑𑒛𑒰. 𑒫𑒱𑒣𑒱𑒢 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒗𑒰- 𑒧𑒯𑒰𑒏𑒫𑒱 𑒦𑒰𑒮 𑒣𑓂𑒩𑒝𑒲𑒞 𑒏𑒩𑓂𑒝𑒦𑒰𑒩𑒧 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠 (𑒦𑒰𑒑-𑓓)

𑓒.𑓔.𑒩𑒫𑒲𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩- 𑒧𑒰𑒞𑒵𑒦𑒴𑒧𑒱 (𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮)- 𑓓𑒧 𑒐𑒹𑒣

𑓒.𑓔.𑒛◌ॉ 𑒬𑒹𑒤𑒰𑒪𑒱𑒏𑒰 𑒫𑒩𑓂𑒧𑒰- 𑒣𑒳𑒩𑒰𑒢 𑒮𑓂𑒧𑒵𑒞𑒱𑒏 𑒠𑒩𑓂𑒠 (𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝)

𑓒.𑓖.𑒛◌ॉ 𑒬𑒹𑒤𑒰𑒪𑒱𑒏𑒰 𑒫𑒩𑓂𑒧𑒰-𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒮𑒲 𑒧𑒖𑒠𑒴𑒩𑒏 𑒣𑒲𑒩 𑒂 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒱

𑓒.𑒥𑒩𑓂𑒭𑒰 𑒧𑒹𑒒

𑓒.𑓑𑒩𑒰𑒖 𑒏𑒱𑒬𑒼𑒩 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩- 𑒅𑒣𑒏𑒰𑒩

𑓒.𑓒.𑒣𑓂𑒩𑒠𑒲𑒣 𑒣𑒳𑒭𑓂𑒣- 𑓒 𑒙𑒰 𑒑𑒖𑒪

𑓒.𑓒.𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩 𑒁𑒢𑒱𑒪- 𑒑𑒲𑒞 [𑒨𑒹𑒥𑒩 (𑒖𑒢𑒫𑒰𑒠𑒲)
𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰]

𑓒.𑓓.𑒔𑒢𑓂𑒠𑒢𑒰 𑒠𑒞𑓂𑒞- 𑒥𑒰𑒙𑒱 𑒂 𑒥𑒱𑒏𑒰𑒩

𑓕.𑓖.𑒩𑒰𑒧𑒏𑒵𑒭𑓂𑒝 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒰𑒝𑒲- 𑓖 𑒙𑒰 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰

𑓕.𑓖.𑒁𑒧𑒱𑒞𑒰𑒦 𑒩𑓀𑒖𑒢 𑒗𑒰 '𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒮𑒲'- 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒂𑒩 𑒞𑒱𑒩𑓀𑒑𑒰/ 𑒔𑒰𑒢𑒠𑒪 𑒣𑒩𑒰𑒢- 𑒥𑒰𑒪 𑒑𑒲𑒞/ 𑒥𑒠𑒧𑒰𑒪𑒲- 𑒥𑒰𑒪 𑒑𑒲𑒞

𑓕.𑓗.𑒅𑒠𑒨 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒮𑒱𑓀𑒯 𑒢𑒔𑒱𑒏𑒹𑒞𑒰- 𑒖𑒹 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒪𑒱𑒐𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒣𑒪𑒱𑒞 𑒏𑒣𑒩

𑓕.𑓘.𑒁𑒩𑒫𑒱𑒢𑓂𑒠 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩- 𑒏𑒞𑒨 𑒑𑒪𑒯𑒳 𑒂 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒏 𑒪𑒰𑒪

𑓕.𑓙.𑒧𑒧𑒞𑒰 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒲- 𑒧𑒻𑒨𑒰 𑒂𑒥𑒱 𑒥𑒮𑒪 𑒕𑒟𑒱

𑓕.𑒮𑒘𑓂𑒖𑒨 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩- 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒪𑒱𑒨𑒻 𑒞𑒰𑒢𑒰, 𑒂𑒥 𑒮𑒳𑒢𑒥𑒻 𑒞𑒰𑒯𑒩 𑒧𑒢 𑒦𑒰𑒨

𑓖.𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞 𑒐𑒝𑓂𑒛

𑓖.𑒛𑒰. 𑒠𑒲𑒣𑒏- 𑒣𑒘𑓂𑒔𑒧𑒰𑒠𑒱𑒞𑓂𑒨𑒔𑒩𑒱𑒞𑒼 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮𑓁 (𑒞𑒵𑒞𑒲𑒨𑒼𑒪𑓂𑒪𑒰𑒮𑓁)

𑓖. 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒮𑒴𑒔𑒢𑒰 𑒮𑓀𑒣𑒩𑓂𑒏 𑒁𑒢𑓂𑒫𑒹𑒭𑒝



𑒋 𑒁𑓀𑒏𑒧𑒹 𑒁𑒕𑒱:-

𑓑.𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩- 𑒢𑒴𑒞𑒢 𑒁𑓀𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏𑒲𑒨

𑓒.𑒁𑓀𑒏 [illegible]

𑓑.𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩- 𑒢𑒴𑒞𑒢 𑒁𑓀𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏𑒲𑒨

𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩

𑓑

𑓒𑓙 𑒥𑒩𑒐𑒏 𑒑𑒰𑒢𑒲 𑒑𑒰𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒏𑒹𑒿 𑒋 𑒥𑒮𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒣𑒯𑒱𑒪𑒳𑒏 𑒢𑒰𑒙𑒏 𑒠𑒳𑒩𑒢𑓂𑒡𑒩 𑒠𑒹𑒐𑒰𑒏। 𑒕𑒰𑒨𑒰 𑒁𑒖𑒱𑒞 𑒑𑒩𑒳𑒖𑒧𑒲 𑒏𑒪𑒏। 𑒁𑒖𑒱𑒞 𑒑𑒩𑒳𑒖𑒧𑒲 𑒂𑒚𑒧𑒿 𑒋𑒯𑒱𑒢 𑒩𑒫𑒲𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒢𑒰𑒟 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒑𑒰𑒏𑒪 𑒑𑒲𑒞𑒧 𑒑𑒰𑒢 𑒑𑒰𑒛़𑒪𑒏।

"𑒞𑒱𑒞𑒪𑒲 𑒢𑒰𑒧 𑒕𑒻, 𑒩𑒓 𑒑𑒰𑒕𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒮 𑒂𑒥𑒏𑒰 𑒪𑒑 𑒮𑒧𑒨 𑒮𑒧𑒨 𑒁𑒕𑒲।"

𑒑𑒰𑒢𑒲 𑒑𑒰𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒋𑒯𑒱𑒢 𑒂𑒑𑒧𑒏𑒥𑒰𑒑𑒧𑒏 𑒄𑒨𑒧𑓂𑒧𑒰𑒮 𑒪𑒱𑒐𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒮𑒳𑒢𑒰 𑒢𑒲𑒞𑒳 𑒂𑒰 𑒧𑒰𑒢 𑒂𑒰 𑒧𑒰𑒢 𑒮𑓀𑒩𑒏𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒨 𑒪𑒑𑒪𑒲𑒯।

𑒋 𑒥𑒢𑒥 𑒢𑒰𑒙𑒏 𑒠𑒳𑒩𑒢𑓂𑒡𑒩 𑒥𑒱𑒓𑓂𑒏𑒢𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒮 𑒮𑒯𑒰 𑒠𑒳𑒢𑓁 𑒠𑒥𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒂𑒢𑒳𑒥𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒥𑒼𑒡 𑒪𑒪 𑒥𑒠𑒳𑒞 𑒥𑒱𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒠𑒪 𑒥𑒼𑒪।

𑓒

𑒏𑒣𑒱𑒪𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒩𑒰𑒅𑒞𑒏 𑓕 𑒑𑒼𑒙 𑒪𑒒𑒳𑒏𑒟𑒰 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩𑒏 𑒙𑒱𑒣𑓂𑒣𑒝𑒲।

Five Stories- Kapileshwar Raut

The snakebite, a local game which takes toll of a young boy, the old technique of farming and need for innovation, the feast of hermits, the language

of animals, the little and great traditions, caste class and power, the feminism, rich and the poor, but no sign of despair, bold discussions on the epic stories, on cults, the language and vocabulary aptly used for describing all these, a language which is hard to translate as these things can be written in Maithili only ...

Welcome to the mystical world of Parallel Literature in Maithili. Here you are reading five stories of Kapileshwar Raut which he has himself adjudged as his best.

Kumari Bhojan (Feast for the Girl Child) begins in a festive atmosphere. During 10 day Durga Puja festival people bring special kind of glossy soil. The soil is used for making Earthen Mahadev and earthen lamp. The lady Siyawati got widowed when a snakebite took life of her husband. After three daughters a son was born to her. So he was very young as compared to his sisters. Siyawati got trapped in loan, as marriage of daughter costs much. And after all this description ensues a

discussion which revolves round the actual meaning of tales, how a collective effort led to killing of Mahisasur.

In Tharthari (Trembling) another discussion ensues, in a cold winter night, among the Zamindar and the tillers. And the setting is the open-land where Zamindar visits to oversee how the farming is being carried out.

Barka Kheera (The big cucumber) delves deep into traditional and modern knowledge in carrying out farming. The boy who wandered calling ihait-ihait (a call to male animal for conjugation of their female cow or buffalo for procreation) became an agricultural scientist.

The story Punarnava will remind you of "Jalikattu" game of Tamilnadu. During Jurisheetal festival a game of man-to-man combat causes a death and Basuni gets widowed. The feminists will search for

the theories of feminism when the women starts taking decisions.

And finally in "Bhumhur Aagi" you will again get test of local culture. The caste layers ... Chetan Das is from Mushar community. He got in touch with a hermit from Keot caste and became a hermit himself. He went to Ajab Das, who is apt in singing devotional songs, for inviting him for a grand feast meant for the hermits. But he puts conditions.. and Vivek Kumar says that it is all stratification, even he or Chetan Das would put the same conditions in case of people below in hierarchy.

१४. संग ९७३ घर निपत्ता

जितमोहन झा, विनयानन्द मधीकान्त मनिमाला, विनाम मण्डल

पञ्जीक पातक तितिरालाकान्तानन कात समुत अछि। निश्चान्ती मन लल बातऽ प्रमुख सामिग्री अछि। विन्दनक ममम कतक जेहि बात मदन लाककँ पता चलती। अनेय नुनकामना।

अनोक अविनल

माल्लक कथा मावुवाद।

भारतीय मनविज्ञान

नंदु कुमार सिंह जीक कथा "भीमक भोज" लीकसँ हटि कऽ अछि। जादन कथा मैथिलीम लिखल कताक पानी।

ममता कुमारी जीक आभा रचना पठनाक इच्छा अछि।

९.ज्योतिरीश्वर ठाकुरक ६ टा कथा- कथा-१ साहित्यक मध्यकालीन समीक्षा संस्कृतीय मध्यकालीन ग्रन्थ पर विदेहक लेखकक सम्मिलित रचना आ शास्त्रक सम्मिलित समीक्षकक समीक्षा मीमांसा म सहज धरि सभटा पढ़ौं-

१ कामिनीक बाँह टा कविता आ शास्त्रक मधुकान्त झाक टिप्पणी

Videha_01_09_2016

९. जगदानन्द झा "मनु"क "माटिक बासन"पर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_353

९. मुन्नी कामतक बालकंकी "तिन्नगीक माल" आ शास्त्रक गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

VIDEHA_354

𑒄 𑒮𑓀𑒏𑒪𑒢 𑒂𑒑𑒰𑒿 𑒮𑒧𑒰𑒢𑒰𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒡𑒰𑒩𑒰𑒏 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒑𑒝𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩𑒮𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒢𑒖𑒩𑒱𑒧𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒔𑒨𑒢 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒬𑓂𑒩𑒹𑒭𑓂𑒚 𑓕-𑓕 𑒙𑒰 𑒏𑒟𑒰 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒱𑒪𑒱𑒞 𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒕𑒟𑒱:-

𑓑𑒏𑒣𑒱𑒪𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒩𑒰𑒅𑒞

𑓒.𑒅𑒧𑒹𑒬 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪

𑓓.𑒩𑒰𑒧 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮 𑒮𑒰𑒯𑒳

𑓔.𑒩𑒰𑒖𑒠𑒹𑒫 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪

𑓕.𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮 𑒩𑒰𑒨

𑓖.𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪

𑓗.𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪

𑓘.𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪

𑒄 𑒮𑓀𑒏𑒪𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒏𑒣𑒱𑒪𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒩𑒰𑒅𑒞𑒏 𑓕 𑒙𑒰 𑒏𑒟𑒰, 𑒖𑒏𑒩𑒰𑒣𑒩 𑒯𑒧𑒩 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒮𑓀𑒏𑓂𑒭𑒱𑒣𑓂𑒞 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏𑒲𑒨 𑒣𑒵𑒭𑓂𑒚 𑒣𑒩 𑒁𑒕𑒱।- 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏

𑒏𑒣𑒱𑒪𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒩𑒰𑒅𑒞 𑒏𑒩 𑒣𑒰𑒿𑒔𑒙𑒰 𑒏𑒟𑒰

𑒏𑒟𑒰 𑓑

𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒱 𑒢𑒰𑒅𑒢

मदनाक माय मिथ्यावती छुआछूतक माँझ कट्टर कतौमँ रहथि
रहिथा सिकनी माथि घनन बहला। कलनत्थावनामँ रहिन रहक
छिन छूआ नातल छती गा गादी छिनमँ छूआछूतनम माँझ-बाती
रहता। मिथ्यावती गरीब छूतक छीगल बहल रहकला बला तल
बहै, बाद माँझकलीम मनि बालथिन। तीनला बलीग तल बहैना।
छमत कतीन धौमत बहूक बहैना। बाछून-बूता कमि कऽ गूछन-
बमत कबै छली। कना तबहँ तीनू-बलीकँ बिगाद कलैना। बली
मत मामुन बमगा लगली। मदना छहनि बछ बहथि तहिगामँ
छूगाछीकँ छूछ कबै छलथिन। मनम बहैन बछा मत तबहँ निबाग
गा छूदी मघून बहता। मुना तीनू बलीकँ बिगादक दछम तना
न कना ताछि छलबैन छ छमीन्नाबक बंगुलम बाँमि बाला।
छमीन्नाब छूनूकन बाबू तहन न बंग छ छन बानिहाबकँ गामि
बाछहैत, लान लालब कछै दऽ कऽ बामौन बहै छला। तबापि
मिथ्यावती घबन नम-लाम नै छाछै छली। छहनि बाछून-बूताक
धौकाद नै बहलैन तँ बमीकल छूछ बाछम बितबै छली। बला
मदना बाछून कमि कऽ गानगा तहनि गूछन कबगा। मदना
छालि बला बहन बिगाद नै कन बहगा। बला धमि बातक मधूत
बहगा छ मागकँ मागा बुझैता। घहूनक मछदून छकँ नै छ
कमा कऽ घबै गा घहलामँ बाछिल ताछीग-बाबाम दछ कऽ
लैता। तँ गामकना बीछी बीबेक गाहति बहै, मता ममेमाँ।
कलनत्थाबनक बाद दछ्मी छिन मान बलनाती छिन, मन्नमीकँ
नगवतीकँ छिम्हा रहैता। माँछि छला बछाति घम्हामी छिन

[illegible] सन्ध्या। सभक माँझ ओहिठाम सियावती माँझ ठाऽ ठाऽ वाली तँ संजय पुछलखिन-

"काकी, तूँ तँ सभ दिन दुर्गास्थान माँझ रहैत छह छी। केह तँ माँझ रहैत छह भगवतीमे कि सभ कहै छी?"

सियावती बजली-

"तूँ की बुझबहिन, छहिन भना छैक।"

संजय-

"ने काकी कहबा पड़ता, केह न देखहू दुर्गाजीसँ माँगि लेब।"

सियावती-

"ने, नञ कहबा।"

संजय-

"ने, कहबा पड़ता।"

तखन किछुकाल-किछु भऽ गेल। तखन सियावती कहब लगलखिन-

"की कहबै, कहै छिऐ जे ई दुर्गा महरानी विद्या-बुद्धिकेँ सभकेँ दिअ, विद्या दिअ, धन दिअ, सम्पति दिअ, देखबा निकाम करिऔ। सभटा सभ कहै छिऐ।"

संजय बाजल-

"काकी यौ, बिना कहना करू कान सभटा दुर्गाजी ठऽ देख लिअन, तँ ताका की भलौं जे भय-त्रास छाड़ि पूजा-पाठ करै छी, से तँ छाड़ू तकर जगदम्बासँ बुझाया छाड़िना छी। तावत दिन किया छाड़िन भेल छी?"

सियावती बजली-

"नौ छौड़ा, तूँ बड बातूनी छँह। बच्चा बनी बजैत लाज-सरम

𑒢 𑒏𑒯𑒢𑒹 𑒕𑒲!"

𑒮𑓀𑒖𑒨-

"𑒖𑒹 𑒥𑒰𑒥𑒲, 𑒞𑒰𑒥𑒲 𑒏𑒯𑒞 𑒢 𑒧𑒰𑒢𑒏 𑒣𑒴𑒖𑒰-𑒣𑒰𑒚𑒞𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒢𑒧𑒹 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒧𑒰𑒢𑒻𑒞 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒞𑒏𑒩𑒰𑒧𑒹𑒿 𑒏𑒲 𑒦𑒹𑒪𑒻?"

𑒮𑒱𑒪𑒰𑒫𑒞𑒲 𑒁𑒢𑒰 𑒠𑒱𑒢𑒧𑒹 𑒞𑒥𑒡𑒢 𑒑𑒱𑒢𑒨 𑒪𑒑𑒪𑒲। 𑒏𑒱𑒢𑓂𑒞𑒳 𑒥𑒖𑒻𑒞 𑒢 𑒏𑒯𑒹 𑒮𑒏𑒪𑒲। 𑒞𑒹𑒨 𑒏𑒯𑒱 𑒮𑓀𑒖𑒨 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒏𑒻𑒢-

"𑒍𑒏𑒩 𑒏𑒱𑒨𑒰 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒻। 𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱𑒏 𑒥𑒰𑒥𑒏𑒰 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒏 𑒏𑒯𑒹 𑒕𑒱𑒨𑒾। 𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱 𑒧𑒱𑒚𑒳𑒂𑒏 𑒧𑒰𑒨 𑒠𑒳𑒪𑒰𑒩𑒲 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝𑒲 𑒢𑒰𑒅𑒢 𑒂 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒱 𑒢𑒰𑒅𑒢 𑒏𑒯𑒥𑒻𑒞 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒂𑒨𑒪 𑒕𑒪। 𑒂𑒥𑒏𑒰 𑒮𑒥𑒢𑒰 𑒣𑒯𑒱𑒧 𑒣𑒴𑒖𑒰 𑒪𑒪 𑒮𑒥𑒰𑒯𑒢𑒲𑒂 𑒮𑓂𑒢𑒰𑒢 𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒲 𑒞𑒿 𑒥𑒞𑒲𑒥𑒰𑒣𑒴𑒧𑒹𑒿 𑒏𑒞𑒹𑒏𑒼 𑒦𑓄 𑒥𑒰𑒏 𑒣𑒨𑒪𑒲 𑒡𑒰𑒢 𑒮𑒳𑒠𑒱𑒣𑒥 𑒮𑒢𑒢 𑒕𑒪 𑒂𑒥𑒏𑒰 𑒮𑒥𑒢𑒧𑒹𑒿 𑒣𑒴𑒖𑒰 𑒏𑒳𑒪𑒪𑒏 𑒂 𑒣𑒯𑒲𑒧 𑒥𑒖𑒻𑒨𑒰 𑒏𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒩𑓂𑒠𑒱𑒧𑒏 𑒣𑒴𑒡 𑒞𑒲𑒢 𑒏𑒱𑒪𑒰 𑒮𑒢𑒪𑒏 𑒂 𑒠𑒯𑒲 𑒣𑒲𑒅𑒪𑒏। 𑒥𑒰𑒥𑒢𑒧𑒹𑒿 𑒖𑒲𑒢𑒲 𑒮𑒢𑒪𑒏 𑒂 𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱 𑒮𑒦𑒰𑒧𑒲 𑒠𑒱𑒢 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝𑒲 𑒢𑒰𑒅𑒢 𑒂 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒱 𑒢𑒰𑒅𑒢 𑒏𑒯𑒥𑒻𑒞 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒰। 𑒮𑓀𑒑 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒣𑒰𑒞𑒰 𑒥𑒲𑒥𑒯𑒴 𑒮𑒯𑒰 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒹 𑒅𑒏𑒩 𑒅𑒮𑒥 𑒥𑒰𑒥𑒯 𑒧𑒰𑒪 𑒂 𑒣𑒰𑒞𑒲 𑒅𑒪𑒲 𑒅𑒏𑒩 𑒅𑒮𑒥 𑒮𑒰𑒣 𑒧𑒰𑒪 𑒕𑒪𑒹 𑒅𑒯𑒰 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒰। 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒧 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒱 𑒢𑒰𑒅𑒢, 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝𑒲 𑒢𑒰𑒅𑒢, 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰𑒏 𑒢𑒰𑒅𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒞𑒏 𑒢 𑒢𑒲𑒅 𑒕𑒪𑒹 𑒮 𑒏𑒯𑒪 𑒢𑒹 𑒅𑒨𑒰! 𑒥𑒰𑒏-𑒥𑒰𑒏𑒢𑒰 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝𑒲 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒱 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰𑒏 𑒠𑒮 𑒑𑒼𑒮𑒰𑒏 𑒢𑒰𑒞 𑒧𑒰𑒢𑒢 𑒕𑒪 𑒠𑒯𑒱𑒂𑒏 𑒪𑒰𑒢𑒧 𑒁𑒢𑒰 𑒅𑒢𑓂𑒢𑒻𑒠𑒱𑒨𑒰 𑒣𑒞𑒰𑒪 𑒏𑒯𑒏𑓂𑒭! 𑒞𑒪 𑒏𑓂𑒭𑒴 𑒅 𑒠𑒳𑒪𑒰𑒩𑒲 𑒅𑒚𑒢𑒱 𑒮𑒥𑒢𑒰 𑒣𑒳𑒥𑒯𑒲𑒞𑒏𑒿 𑒑𑒼𑒣𑒥 𑒢𑒰𑒥𑒏 𑒠𑒱𑒅 𑒥𑒢𑒰 𑒏𑓄 𑒣𑒴𑒖𑒰 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒱, 𑒣𑒴𑒖𑒰 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰𑒏𑒿 𑒏𑒥𑒰𑒏 𑒣𑒰𑒢𑒣𑒥 𑒅𑒪𑒰, 𑒠𑒯𑒲, 𑒔𑒱𑒢𑒲 𑒠𑓄 𑒞𑒑𑒥𑒞𑒲𑒏𑒿 𑒢𑒰𑒑 𑒪𑒑𑒾𑒪𑒏𑒰 𑒪𑒓𑓂𑒏𑒰 𑒣𑒴-𑒣𑒴𑒖𑒰 𑒠𑓄 𑒅𑒚𑒢𑒱 𑒂 𑒪𑒰𑒏𑒻𑒢 𑒢𑒰𑒅𑒢 𑒏𑒥𑒨𑒰 𑒪𑒑𑒪𑒯𑒱𑒢 𑒂𑒥𑒱𑒏

मोती सानी कहए लगलै नानी हमहूँ बुच्चा-बच्ची खेलौं। मुदा बुलाकी मोतीकेँ गामघर गाछ चमरा लगा कहलकै जे नाचलि, ऊप यदिन बाम्हन नाचन कते जे सगरते तब नाबा कहलौं। मोती कहा-सुनाक तऽ कऽ कनरा लगलै। कहाब-कहाब सुताँ तकै जे कानबा कानरा। बाम्हन पुरहीत जे कुमारि बिना बिजु माघन निराह सकें छाटत बहला। गाकबती कया ने गलै सालीयन! मवाल पान्ता तऽ सासत छथि, तँग तुहीं कह, की साली कुमारि ने रहल? की नीरुद्ध बन्नाक ने रहल? सहनि कि नाम्हा-पुरानम लिखल छथि कम बबद मोनी बसाम्हबाला नाछमँ यदिन कना सनिक लसकी कुमारि छथि। कुमारि नाचन कनील स महेत छथि। छू तँ कुमारि नाचनबला नहा जे नानी, गाकना खीब ब्रह्मना कहलियौ स बिजु स्नीगत धनुक 'नालीक जे बिजु स्नीगत बबछू 'नालक छयन धिया-पुताकेँ लऽ कऽ कुमारि नाचन खाती दूगाम्हानम कनीलक। बाम्हनो सन तँ छयन धिया-पुताकेँ कुमारि नाचन कनबेत छथि। कह तँ गोम कान धँच छै स बाम्हनोना कँ धिया-पुताकेँ कुमारि जे बन्नाक कहल सासत छथि?"

"हौ मंजय, कहै तँ छीनी नीक।"

मंजय पान कहए लगल-

"हौ नानी, सछू दूगाकेँ तूँ गातक नम-नामसँ सजना कनै छीनी तकना नानम बिजु बनिता छिदिन मादि नतिया धमान सकँ मनकेँ कहै छिनी तँग तहूँ कनना लगैत छँह?"

सुन मनिमाधव, तूंत, निरंत तँ गहन मातानामी नाछ छल स ककना नीह-बनीकेँ छछात मावकं लूनि लछू छलौ। यहूलक

[illegible]

[illegible]

𑒧𑒱𑒟𑓂𑒨𑒰𑒫𑒞𑒲 𑒥𑒖𑒪𑒲-

"[illegible]"

𑒮𑓀𑒖𑒨 𑒏𑒯𑒨 𑒪𑒑𑒪-

"[illegible]

कुमारि साहस कएल आदि युद्ध-खाद कएल, तीक्ष्ण-तिन कएल, जय-हाय कएल सहला अवध पुत्रिन-विवह कहल कलो। ककरा कह्म ने कहलनि, ओतँ तक तऽ सबटा ककरा उपचार कऽ कहलनि सयाह सासमँ योग्य कर्म छियो। कान युद्ध-युद्धिक व्याहल यहल बहै छैँह।"

मिथिलावती बजली-

"हे हेमा, यतक ओ युद्ध-खाद आदि धवस-कवस ताऽ छे सत युद्ध छियो की?"

संजय पुनः कहए लगले-

"हे माता, साथ तहस पुत्री ओ गन्धारीसँ पकान दिन आने सयाह तल युद्धकँ ताहिक गह्व गा तीक कहल न धर्म ताऽ छऽ। भगवानक कतो गहना छे गा तँ ताना हमरा गागाम रहे छलिन। रह तँ ररहारीक क्षन छी, ताम्र-पुनातास लिहल गहि ओ भगवान कता-कतास तास कहेत गहि तँ कि हमरा ताना छाति क?"

ऐ रचनापर अपन

मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

𑓒.𑓒.𑒏𑒣𑒱𑒪𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒩𑒰𑒅𑒞𑒏 𑓖 𑒙𑒰 𑒏𑒟𑒰- 𑒏𑒟𑒰-𑓒 𑒛𑒰𑒏𑓂𑒙𑒩𑒏 𑒧𑒡𑓂𑒨𑒫𑒩𑓂𑒑𑒲𑒨 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒮𑓀𑒫𑒹𑒠𑒢𑒬𑒲𑒪 𑒧𑒡𑓂𑒨𑒫𑒩𑓂𑒑𑒲𑒨 𑒥𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒫𑒩𑓂𑒑

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒏 𑒪𑒹𑒐𑒏𑒏 𑒂𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒫𑒰 𑒂𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒂𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒏𑒏 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒮𑒲𑒩𑒲𑒖 𑒮 𑒮𑒠𑒢 𑒡𑒩𑒱 𑒮𑒠𑒰𑒿 𑒣𑒜𑓃𑒪𑒾𑓀-

𑓑 𑒏𑒰𑒧𑒱𑒢𑒲𑒏 𑒣𑒰𑓀𑒔 𑒙𑒰 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒫𑒰 𑒂𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒧𑒡𑒳𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒗𑒰𑒏 𑒙𑒱𑒣𑓂𑒣𑒝𑒲

Videha_01_09_2016

𑓒. 𑒖𑒑𑒠𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒗𑒰 "𑒧𑒢𑒳"𑒏 "𑒧𑒰𑒙𑒱𑒏 𑒥𑒰𑒮𑒢"𑒣𑒩 𑒩𑒰𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒣𑒰𑒚𑒏𑒏 𑒙𑒱𑒣𑓂𑒣𑒝𑒲

VIDEHA_353

𑓑. 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒏𑒰𑒧𑒞𑒏 𑒣𑒼𑒟𑒲 "𑒖𑒱𑒢𑒑𑒲𑒏 𑒧𑒰𑒪" 𑒣𑒩 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩𑒏 𑒙𑒱𑒣𑓂𑒣𑒝𑒲

VIDEHA_354

𑒃 𑒬𑒵𑓀𑒐𑒪𑒰𑒧𑒹 𑒂𑒑𑒰𑒿 𑒮𑒧𑒰𑒢𑒰𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒡𑒰𑒩𑒰𑒏 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒑𑒝𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩𑒮𑒿 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒢𑒖𑒩𑒱𑒧𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒩𑓂𑒫𑒬𑓂𑒩𑒹𑒭𑓂𑒚 𑓕-𑓖 𑒙𑒰 𑒏𑒟𑒰 𑒂𑒧𑓀𑒞𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒏𑒋𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒟𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒕𑒟𑒱:-

𑓑𑒏𑒣𑒱𑒪𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒩𑒰𑒅𑒞
𑓒.𑒅𑒧𑒹𑒬 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪
𑓓.𑒩𑒰𑒧 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮 𑒮𑒰𑒯𑒳
𑓔.𑒩𑒰𑒖𑒠𑒹𑒫 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪
𑓕.𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮 𑒩𑒰𑒨
𑓖.𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪
𑓗.𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪
𑓘.𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪

𑒃 𑒮𑓀𑒏𑒪𑒢𑒧𑒹 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒏𑒣𑒱𑒪𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒩𑒰𑒅𑒞𑒏 𑓕 𑒙𑒰 𑒏𑒟𑒰, 𑒖𑒏𑒩𑒰𑒣𑒩 𑒯𑒧𑒩 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒮𑓀𑒏𑓂𑒭𑒹𑒣𑒧𑒹 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏𑒲𑒨 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒠𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱।- 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏


𑒏𑒣𑒱𑒪𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒩𑒰𑒅𑒞 𑒏𑒹𑒩 𑒣𑒰𑒿𑒔𑒙𑒰 𑒏𑒟𑒰

कथा ९

थरथरी

ओना तँ ऋतु छहटा होइत अछि। ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर आ वसन्त। मुदा व्यवहारमे लोक तीनटाकेँ मानै छै गरमी, वर्षा आ जाड। सभ ऋतुकेँ अपन अलग-अलग गुण अवगुण होइ छइ। मुदा जाडकेँ एकटा अपन अलगे गुण अवगुण अछि। कोन भगवान जाडकेँ जनम देलनि से नै कहि। आन ऋतुमे तँ लोक हर्ष-विलास, रंग-रभस आ वर्षाक फुहारक आनन्द लऽ कऽ बिता दइ छइ। मुदा जाड तँ कतेकेँ कँपा दइ छइ। गरीब लेल मारंदे आ धनिकक वास्ते विलासक ऋतु बनि जाइछ। छुटार एक दिन एहन सनीस सुरुजनारायणक देत ई मनहेप कन छल पटावेल गेल। समय छलै माघ मासक शुरुआतक। जहिना १९६७ ई.मे शीतलहरी छलै तहिना एहू बेर भेल। पछिया बहैत जाड सुसकारी दैत रहय। सुरुज भगवान कतय नुका रहला तकर ठेकान नहि। कुहेस लागल रहय। पानिक बून जकाँ वर्षा होइत रहय। लोक हरदम घूर लग आगि तपैत रहै छल। ठिठुरल खान-पान देलासँ माल-जालकेँ पीठ पाँजर बोरा गेल। आ बिमारी पसरय लागल। तकर चिडै-चुनमुनी सभ जाडि पटापट मरय लागल। साँप सभ कोना बिलमे तँ कोना आडिक कातमे मूइल पड़ल। जीनाइ लोककेँ कठीन भऽ गेल। एक पनरहियासँ ई शीतलहरी चलल से टरल नहि गेल।

[illegible]

𑒕𑒻𑒞𑒾।"

𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒩 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒯𑒾 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏, 𑒑𑒩𑒲𑒥𑒏 𑒖𑒱𑒢𑒑𑒲 𑒏𑒳𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒖𑒱𑒢𑒑𑒲 𑒕𑒻𑒏। 𑒨𑒋𑒯 𑒞𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒱𑒨𑒾 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏 𑒕𑒲, 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒧𑒰𑒨𑒥𑒰𑒣𑒏 𑒥𑒩𑒧𑓂𑒯𑒰 𑒞𑒐𑒢 𑒢 𑒕𑒻 𑒖' 𑒏𑒲 𑒏𑒩𑒥। 𑒏𑒧𑒰𑒨 𑒪𑒿𑒑𑒼𑒙𑒲𑒥𑒪𑒰 𑒂 𑒠𑒰𑒑 𑒡𑒼𑒞𑒲𑒥𑒪𑒰। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒦 𑒕𑒻𑒏 𑒖𑒞𑒢 𑒏𑒩𑒞𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒯𑒱𑒨𑒿 𑒥𑒰𑒪𑒱𑒏 𑒖𑒹𑒯𑒢 𑒑𑒳𑒠𑒩 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒲। 𑒮𑒳𑒐𑒥𑒰𑒪𑒲 𑒣𑒩𑒮𑒾𑒞𑒲 𑒢𑒻 𑒁𑒕𑒱। 𑒨𑒋𑒯 𑒥𑒛𑓃𑒹𑒏 𑒮𑒳𑒐 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒏𑒩𑒲 𑒂 𑒑𑒰𑒨 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒨𑒋𑒯 𑒏𑒢𑒧 𑒖𑒩𑒢𑒱-𑒏𑒩𑒲 𑒥𑒕𑒹 𑒕𑒲। 𑒧𑒞𑒰 𑒥𑒏𑒩𑒲𑒥𑒪𑒰 𑒮𑒳𑒐𑒏 𑒪𑒰𑒪 𑒑𑒳𑒠𑒩 𑒁𑒕𑒱।"

𑒧𑒳𑒢𑒱𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒞𑒥 𑒞𑒿 𑒥𑒛𑓃 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞 𑒪𑒑𑒻𑒞 𑒯𑒹𑒞𑒾?"

𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒩-

"𑒯𑒾 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏, 𑒏𑒲 𑒏𑒯𑒾। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒪𑒑𑒻𑒋। 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒧𑒢𑒪 𑒞𑒿 𑒨𑒋𑒯 𑒅𑒣𑒩𑒥𑒪𑒰 𑒕𑒻𑒏। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒯 𑒨𑒋𑒯 𑒥𑒰𑒞 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒲 𑒖' 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒢 𑒏𑒩𑒞𑒰 𑒪𑒑𑒰𑒨𑒥, 𑒥𑒱𑒖𑒪𑒲𑒏 𑒑𑒩𑒧𑒲𑒧𑒹 𑒯𑒠𑒥 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒞𑒲𑒢𑒥𑒩 𑒁𑒯𑒴𑒿 𑒧𑒢𑒏𑒿 𑒖𑒹𑒞 𑒨𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩𑒰𑒥𑒩 𑒏𑒥𑒞𑒰।"

𑒧𑒳𑒢𑒱𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒯𑒏𑒣𑒏𑒰𑒞 𑒥𑒳𑒗𑒪𑒰-

"𑒏𑒢𑒰 𑒑𑒾।"

𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒩-

"𑒢𑒹 𑒥𑒳𑒗𑒻 𑒕𑒱𑒨𑒾, 𑒢𑒥𑒰𑒥, 𑒡𑒰𑒏 𑒂 𑒖𑒰𑒞𑒰 𑒪𑒑𑒻𑒥𑒻 𑒏𑒯𑒪𑒧।"

𑒧𑒳𑒢𑒱𑒥𑒰𑒥𑒴-

"𑒚𑒲𑒏 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒾𑒿।"

𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒩-

"𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏, 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒧𑒢𑒏𑒿 𑒏𑒯𑒢 𑒁𑒕𑒱। 𑒠𑒴𑒩 𑒧𑒰𑒪𑓂𑒨𑒑𑒩 𑒏𑓄 𑒪𑒰𑒥 𑒥𑒲𑒕।

दक्ष छियौ लोकक मेँ ज्ञाता लोका दक्ष छियौ आ बड्डेक आगि लक्ष्मी आ तखना ऊँ ओत ज्ञानक तँ सभ्यतामेँ धनलता दखिया-बोनाक आगि लक्ष्मी। धरलम बोधदनी आ दुकनन-मननकेँ आखिया कऽ पढ़न पढ़े ्मी ने गल तँ आकमा धनोक दक्ष छियौ। नाक बाति सुनबोत पढ़ल स्वर गतमामल पढ़ला। सतौंकेँ तँ कुम्ले दगत ओ बाेमतक आगि कदन ताक्ष स्वक्षा। बाधमँ सुते ्मी।"

सुमनबाबू-

"तखन तँ सासुर-कुम्बीनन धना कऽ स्वरम पढ़े ्मीँ। धओ नीक आदिना ओतमँ धँवेक कानिन कादिँ। ने तँ मना ओम्हाब ओकेँ दता◌ि, धजाना कालिदिन येदानामँ आगल, कलधन कुमोत कानित पढ़ग आखिक धँना माखि दलके। गाँग-गाँग कऽ ओम्हाब लग लऽ बोलौ। तँग ककलिया ओ ओतमँ धँपि कऽ पढ़िँ। धकनी आ गागकेँ मना सानी आनना कऽ पढ़िँ।"

सुनी ओलबेत स्वनाब बाओल-

"नीक कहे ्मी मानिक।"

सुमनबाबू-

"ना स्वनाब, दिया-सुताकेँ नाँपि-दबाबि दिलेन ओ धँनामँ धँपि कऽ पढ़ना।"

स्वनाब-

"म ्मीओ मानित न आज्ञा। दन सुन्नी ओम्हा, दन छिकनप तँ दन कबड्डी छेलाक्षत पढ़ेथा। की कबो। दम तँ कदब न कबो मानिक।"

सुमनबाबू-

"सपाट हम कहबा ना।"

झुम्मन-

"हम तँ नहि दिन राति-धन्धामे लागल रहलौं। शहरी सबहक वैमनस्यपूर्ण बातसँ आगाँ उठाबि जीव-जान कऽ लेने छी। ओकरा संग काम करैत रहैत रहैछ। आ राति कऽ बीचमेमे आबि गपशप रहैत।"

मुखनबाबू-

"ठीक कहै छी। जखन छी तँ जनतैन छी। नहि ने तँ किछु नहि। अपना बाहरमे कहि जे आगामन कहै छी आखिर ने?"

झुम्मन-

"यो मालिक, हम मूढ़ आदमी की जनबै बोलिबो आगामन आखिर पहिनियाम। हमरा मनमे एहि धरती आगामन आ पहिनियाम छाछ छाछ। किछुनीक मेँ न एहि उपाछत रहैत।"

मुखनबाबू बजला-

"ठीक बात ठीक छी।"

झुम्मन- "मालिक अपनेक मारि-धुक्कम कऽ कमलौं, ठूर धान करलौं जकरा सबहक बाहर कपी धाना आबि आ खोजक बाजबा आबि। खेतमे खेसारी साग, बथुआ साग, सरसो साग, तोरी साग सबहक तीमन कऽ लेने छी। कदिमा केर अल्लू, कोबी, तारा, मुरै सेहो सबहक तीमन छा लेने छी आ रस-रस कहैत रहै छी।"

मुखनबाबू-

"तखन तँ ठीके वस्तु सब खाछ छी।"

𑒮𑒳𑒧𑒢- "𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒦 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒏𑒲 𑒁𑒤𑒮𑒩𑒰, 𑒑𑒰𑒧-𑒒𑒰𑒧 𑒕𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒴𑒩-𑒠𑒹𑒬𑒲 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒰 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒞𑒐𑒢 𑒥𑒛𑓂𑒛 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒰 𑒮𑒦𑒯𑒏 𑒜𑓀𑒑 𑒞𑒿 𑒥𑒹𑒧𑒰𑒩-𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒯𑒼𑒃, 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏𑒏 𑒥𑒛𑓃𑒰 𑒂 𑒧𑒰𑒕 𑒧𑒰𑒧𑒏 𑒖𑒰𑒛𑓃𑒼𑒿 𑒥𑒰◌𑒏𑒰𑒥𑒪-𑒞𑒞𑒰𑒥𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒦 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒏𑒲 𑒑𑒰𑒕𑒏 𑒣𑒜𑓃𑒪𑒏 𑒥𑒰𑒿𑒮 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒢𑒹 𑒢 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒞𑒰𑒏𑒞 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒰 𑒏𑒯𑒪𑒰 𑒞𑒲𑒥𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒯𑒖𑒹 𑒠𑒹𑒐𑒰 𑒪𑒱𑒐 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒥𑒰। 𑒯𑒿 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒦 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒣𑒰𑒥𑒲-𑒣𑒞𑒢𑒰 𑒢𑒹 𑒢 𑒣𑒯𑒰𑒢 𑒕𑒲। 𑒮𑒦𑒙𑒰 𑒚𑒹𑒞 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒢 𑒁𑒥𑒹 𑒕𑒲।"

𑒏𑒯𑒱 𑒚𑒹𑒞 𑒕𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒐𑒰𑒧𑒢 𑒏𑒱𑒕𑒰𑒩𑓂𑒑𑒰𑒧 𑒣𑒰𑒢𑒱 𑒕𑒼𑒪𑒱 𑒣𑒰𑒥 𑒮𑒴𑒥 𑒞𑒥 𑒣𑒪𑒱 𑒕𑒰𑒥𑒰𑒪 𑒂 𑒑𑒣-𑒮𑒣𑓂𑒣 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒯𑒾 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏, 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒦 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒏𑒲 𑒠𑒹𑒐𑒥𑒰 𑒮𑒥 𑒥𑒲𑒐 𑒚𑒹𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒪𑓄 𑒠𑓄 𑒏𑓄 𑒁𑒣𑒢 𑒠𑒹𑒮 𑒏𑒯𑒰 𑒚𑒹𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒞𑒲𑒧 𑒞𑒥𑒏𑒰𑒩𑒲-𑒣𑒰𑒖𑒏𑒰𑒩𑒲, 𑒏𑒞𑒲𑒧 𑒥𑒪𑒱𑒠𑒢-𑒞𑒪𑒠𑒢, 𑒏𑒞𑒲𑒧 𑒮𑒰𑒑-𑒣𑒰𑒞 𑒏𑒢 𑒕𑒲। 𑒡𑒰𑒢-𑒑𑒯𑒳𑒧 𑒞𑒿 𑒁𑒯𑒲𑓀 𑒮𑒦𑒯𑒏 𑒚𑒹𑒞𑒧 𑒮𑒢𑒚𑒹𑒣 𑒏𑓄 𑒏 𑒑𑒳𑒖𑒩 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒲।"

𑒮𑒳𑒥𑒢𑒥𑒰𑒥𑒴- "𑒥𑒰𑒥𑒯𑒰 𑒏𑒯𑒰𑒥𑒞 𑒕𑒻 𑒖𑒹 𑒪𑒞𑒰-𑒣𑒞𑒰 𑒡𑒢 𑒣𑒰𑒕𑓂𑒕𑒰 𑒥𑒹𑒚 𑒠𑒹𑒑𑒰 𑒥𑒻𑒢𑒰। 𑒠 𑒥𑒛 𑒖𑒛 𑒪𑒰𑒕 𑒕𑒻 𑒖𑒪𑓂𑒠𑒲 𑒚𑒹𑒞 𑒣𑒯𑒰 𑒪 𑒂 𑒮𑒴𑒥𑒣𑒥 𑒖𑒰। 𑒠𑒹𑒮𑒯𑒴𑒿 𑒂𑒥 𑒁𑒡𑒱𑒏 𑒮𑒴𑒧-𑒧𑒱𑒛 𑒢𑒹 𑒏𑒥𑒥 𑒮𑒴𑒥𑒣𑒥 𑒖𑒰𑒕 𑒕𑒲।"

𑒮𑒳𑒧𑒢 𑒏𑒯𑒪𑒏-

"𑒖𑒿 𑒑𑒣-𑒮𑒣𑓂𑒣 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒲 𑒞𑒿 𑒥𑒰𑒥𑒯𑒰 𑒑𑒣 𑒥𑒲𑒔𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒪𑒱𑒁। 𑒠𑒹𑒮 𑒞𑒿 𑒮𑓀𑒖𑒥-𑒢𑒑𑒰𑒩𑒲 𑒕𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒠𑒱𑒪𑓂𑒪𑒲-𑒥𑒧𑓂𑒥𑒆 𑒢𑒹 𑒢 𑒏𑒧𑒰𑒕𑒪 𑒥𑒰𑒪𑒲। 𑒠𑒹𑒚𑒹 𑒕𑒱𑒥𑒹 𑒖𑒹 𑒞𑒰𑒑𑒰𑒠𑒱 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒪𑒰𑒏 𑒐𑒰𑒧𑒢 𑒮𑒳𑒖𑒳𑒏 𑒖𑒰𑒕𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒿 𑒂𑒞𑒥𑒰𑒧𑒿 𑒣𑒰𑒕 𑒞𑒿 𑒁𑒥𑒻𑒑 𑒮𑒳𑒯𑒰 𑒣𑒥𑒱𑒥𑒰𑒥𑒧𑒿 𑒠𑒹𑒮𑒪 𑒥𑒯𑒻𑒨𑒰। 𑒖𑒥𑒰𑒏𑒱

𑒮𑒥𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒹𑒙𑒲𑒣𑒩 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮 𑒕𑒱𑒌𑒢 𑒏𑒯𑒪𑒐𑒱 𑒏𑒯𑒰। 𑒥𑒹𑒩 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡-𑒏𑒟𑒰 𑒣𑒚𑒹𑒪 𑒕𑒟𑒱 𑒏𑒰𑒢𑒱𑒞𑒰𑒣𑒩𑒏 𑒥𑒖𑒻𑒞। 𑒏𑒯𑒱 𑒛𑒧𑒩𑒴 𑒢𑒢 𑒞𑓀𑒑𑒲 𑒞𑒿 𑒥𑒩𑒰𑒞 𑒏𑒯𑒞 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒧𑒰𑒩𑒰-𑒏𑒰𑒙 𑒮 𑒠𑒹𑒯𑒢 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒟𑒱। 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏 𑒮𑒯𑒲 𑒮𑒥𑒯𑒢 𑒠𑒹𑒐𑒰 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒢, 𑒖𑒞 𑒥𑒹𑒩 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒫𑒱𑒩𑒰-𑒥𑒰𑒞𑒰 𑒮𑒢 𑒫𑒱𑒠𑒢𑒰𑒧 𑒢𑒰𑒪𑒏𑒲 𑒏𑒯𑒻𑒞। 𑒧𑒰𑒪𑒏𑒱𑒢 𑒥𑒳𑒞𑒰𑒧 𑒏𑒯𑒰 𑒏𑓄 𑒯𑒰𑒢𑒮 𑒯𑒰𑒞 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒮 𑒥𑒩𑒰𑒞 𑒛𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒲।"

𑒮𑒳𑒢𑒢𑓂𑒠𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒥𑒖𑒪𑒰- "𑒮 𑒞𑒿 𑒚𑒲𑒏 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒲। 𑒏𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒐𑒰 𑒮𑒢𑒮 𑒠𑒰𑒕𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒛 𑒏𑒯𑒲𑒪 𑒖𑒞 𑒏𑒯𑒪𑒾 𑒂 𑒖𑒞 𑒛𑒧𑒰 𑒏𑒯𑒪𑒾। 𑒮𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒕𑒼𑒩 𑒕𑒴 𑒮𑒞 𑒥𑒰𑒞𑒰 𑒠𑒹𑒮 𑒛𑒕 𑒫𑒱𑒮𑒰।"

𑒏𑒯𑒱 𑒮𑒳𑒢𑒢𑓂𑒠𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒕𑒞 𑒠𑒱𑒮 𑒫𑒱𑒠𑒰 𑒦𑒹𑒪𑒰। 𑒂 𑒕𑒳𑒙𑒰𑒩 𑒮𑓀𑒞𑒱𑒧 𑒥𑒱𑒕𑒰𑒫𑒲𑒮 𑒨𑒰𑒢𑒱 𑒏𑒯𑒰𑒩 𑒪𑒑𑒪𑒰।

-

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।

𑓑.𑓑.𑒏𑒰𑒧𑒱𑒢𑒲𑒏 𑓖 𑒙𑒰 𑒏𑒟𑒰- 𑒏𑒟𑒰-𑓑 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏𑒲𑒨 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒮𑓀𑒠𑒹𑒬𑒱𑒧 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏𑒲𑒨 𑒬𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒣𑒩

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒏 𑒪𑒹𑒐𑒏𑒏 𑒦𑒰𑒭𑒱𑒏 𑒔𑒨𑒢 𑒂 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒰𑒫𑒪𑒲 𑒦𑒰𑒭𑒱𑒏 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰𑒏 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒮𑒲𑒧𑒼𑒏𑒹 𑒮 𑒁𑒑𑓂𑒩𑒹𑒢 𑒡𑒢𑒱 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒣𑒜𑓃𑒪𑒾-

𑓑 𑒏𑒰𑒧𑒱𑒢𑒲𑒏 𑒨𑒰𑓀𑒞𑓂𑒩 𑒙𑒰 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒂 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒰𑒫𑒪𑒲 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏 𑒮𑒰𑒩𑒏 𑒢𑒱𑒭𑓂𑒏𑒩𑓂𑒭

Videha_01_09_2016

𑓑. 𑒖𑒑𑒠𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒗𑒰 "𑒧𑒢𑒳"𑒏 "𑒧𑒼𑒯𑒱𑒢𑒲 𑒫𑒰𑒧𑒢"𑒣𑒩 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩𑒏 𑒢𑒱𑒭𑓂𑒏𑒩𑓂𑒭

VIDEHA_353

१. मुन्नी कामतक बालकथा "जिनगीक गीत" क अंग्रेजी अनुवाद गजेन्द्र ठाकुरक विवेचना

VIDEHA_354

ई संकलनमे आगाँ समानान्तर धाराक किछु गद्यकार्य कथाकारसँ हुनक नवकथा हुनकाक चयन समकालीन ६-६ टा कथा सम्मिलित कएल गेल अछि। कथाकारक नामक सूची:-

कोशिकन्हाक बाउत

१.उमेश मण्डल

२.राम विलास साहु

३.राजदेव मण्डल

४.नन्द विलास राय

५.जगदीश प्रसाद मण्डल

६.दुर्गानन्द मण्डल

७.रामानन्द मण्डल

ई संकलन प्रस्तुत अछि कोशिकन्हाक बाउतक ६ टा कथा, उत्कृष्ट कथाक समीक्षा संग्रहमे सम्पादकीय रूप मे अछि- सम्पादक



𑒏𑒣𑒱𑒪𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒩𑒰𑒅𑒞 𑒏𑒹𑒩 𑒥𑒰𑒿𑒏𑒪 𑒏𑒟𑒰

𑒏𑒟𑒰 𑓙

𑒥𑒛𑓃𑒏𑒰 𑒚𑒲𑒏𑒰

𑒏𑒯𑒥𑒲 𑒕𑒟𑒱, 𑒠𑒳𑒢𑒏𑒠𑒏 𑒞𑒰𑒑 𑒂 𑒖𑓂𑒘𑒞𑒲𑒏 𑒁𑒥𑒱𑒪 𑒏𑒯𑒹𑒢 𑒥𑒯𑒻𑒪 𑒖𑒑𑒰𑒞 𑒞𑒏𑒩 𑒏𑒰𑒢 𑒩𑒼𑒏𑒢𑒰। 𑒮𑒑𑒰𑒠 𑒞𑒪𑒲 𑒠𑒳𑒑𑒞𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒕𑒱𑒢𑒑𑒲𑒧𑒰। 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒏𑒹𑒏𑒿 𑒞𑒲𑒢𑒙𑒰 𑒥𑒙𑒲𑒨𑒢 𑒮𑒿 𑒮𑒰𑒏𑒙𑒰 𑒥𑒙𑒰 𑒞𑒪𑒹𑒢𑒰। 𑒮𑒠𑒱𑒪 𑒠𑒳𑒪 𑒞𑒢 𑒮𑒥𑒱𑒢𑒰𑒮𑒹𑒧 𑒠𑒳𑒮𑒲𑒏 𑒧𑒰𑒞𑒲𑒪 𑒥𑒢𑒱 𑒩𑒼𑒪। 𑒥𑓂𑒪𑒔𑒱𑒞𑒰𑒩 𑒕𑒱𑒢 𑒮𑒧𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒞𑒲𑒢 𑒩𑒼𑒙𑒰𑒮𑒿 𑒧𑒰𑒢𑒱 '𑒢𑒰𑒪𑒏𑒲-𑒏𑒞𑒧𑒰𑒪𑒱' 𑒂 𑒧𑒚𑒱𑒢𑒰 𑒪𑓄 𑒑𑒿𑒑𑒢𑒰𑒧 𑒢𑒰𑒔𑒩𑒰 𑒪𑒑𑒪। 𑒏𑒢𑒰 𑒢 𑒮𑒧𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒑𑒥𑒻𑒞 𑒑𑒰𑒛𑓃𑒰 𑒞𑒿 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒚𑒢 𑒂 𑒑𑒚𑒰𑒧𑒲-𑒮𑒚𑒰𑒧𑒲𑒮𑒿 𑒮𑒴𑒥-𑒮𑒞𑒰 𑒪𑒑𑒥𑒻𑒞 𑒥𑒯𑒻𑒨𑒰। 𑒮 𑒞𑒢𑒏 𑒪𑒑𑒱𑒞 𑒮𑒠𑒳𑒿𑒥 𑒩𑒼𑒪। 𑒏𑒯𑒢𑒰 𑒥𑒕𑒻𑒨𑒰 𑒑𑒲𑒞 𑒞𑒿 𑒏𑒯𑒢𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥, 𑒏𑒯𑒢𑒰 𑒮𑒮𑒢𑓂𑒯𑒲𑒢 𑒑𑒰𑒥𑒩𑒰 𑒪𑒑𑒪। 𑒑𑒿𑒑𑒢𑒰𑒧 𑒪𑒰𑒏𑒏 𑒢𑒲𑒏 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒩𑒼𑒪𑒏। 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒏𑒏 𑒏𑒢𑒰 𑒞𑒢𑒠𑒿 𑒑𑒰𑒏 𑒮𑒑𑒰 𑒏𑒿𑒙𑒻𑒨𑒰 𑒂 𑒮𑒢𑒰 𑒕𑒱𑒪𑒰 𑒑𑒥𑒢𑒰 𑒩𑒰𑒅𑒞 𑒢𑒱𑒯𑓂𑒧𑒲𑒥𑒮 𑒠𑓄 𑒮𑒧𑒢𑒱𑒨𑒰𑒏𑒿 𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒪𑒹𑒢𑒰।

𑒕𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒚𑒰𑒧𑒲 𑒢𑒲𑒔 𑒠𑒪𑒏𑒻𑒢-

"𑒞𑒰𑒧 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥 𑒮𑒢𑓂𑒯𑒥𑒮𑒩 𑒠𑒳𑒢𑒱 𑒅𑒢𑒧𑒪 𑒯𑒢 𑒞𑒿𑒑 𑒠𑒮𑒙𑒰 𑒮𑒰𑒡𑒳-𑒮𑒢𑓂𑒞𑒏𑒿 𑒂 𑒑𑒚𑒰𑒧𑒲-𑒮𑒚𑒰𑒧𑒲𑒏𑒿 𑒢𑒰𑒞 𑒠𑓄 𑒢𑒰𑒔-𑒢𑒰𑒞 𑒠𑒳𑒑𑒰𑒥𑒩, 𑒅𑒪𑒙𑒰𑒮𑒿 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰𑒏𑒿 𑒂𑒮𑒱𑒩𑒥𑒰𑒠 𑒠𑒹𑒞 𑒞𑒿 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰𑒏 𑒢𑒲𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒻𑒏।"

𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒏𑒰 𑒏𑒯𑒪𑒰- "𑒚𑒲𑒏𑒹 𑒕𑒻।"

𑒕𑒼𑒙𑒏𑒰𑒥𑒏 𑒥𑒰𑒞𑒱𑒧 𑒠𑒧𑒪𑒰 𑒧𑒰𑒡𑒳-𑒧𑒢𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒂 𑒠𑒧𑒪𑒰 𑒑𑒳𑒛𑓂𑒛𑒲𑒧𑒱𑒨𑒰-𑒧𑒯𑒰𑒧𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒰𑒞 𑒠𑓄 𑒢𑒧𑓂𑒯𑒰𑒢𑒏 𑒕𑒳𑒢𑓂𑒢𑒯𑒧 𑒏𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒕𑒼𑒙𑒏𑒰𑒥𑒏 𑒥𑒱𑒡𑒱-𑒥𑒥𑒯𑒰𑒩 𑒢𑒪𑒰 𑒥𑒰𑒠 𑒥𑒰𑒢𑒰-𑒥𑒰𑒢𑒲 𑒥𑒧𑓂𑒯𑒰𑒏 𑒢𑒰𑒧𑓂𑒯𑒰𑓀 𑒥𑒠𑒪𑒻𑒢 𑒯𑒳𑒑𑒞𑒪𑒰𑒪। 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒢 𑒞𑒢 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒰𑒯𑒲-𑒧𑒰𑒧𑒰-𑒥𑒪𑒼𑒏 𑒂 𑒑𑒰𑒏 𑒧𑒫𑒰 𑒪𑒰𑒏 𑒠𑓄 𑒥𑒱𑒠𑒰 𑒏𑒹𑒪𑒻𑒢।

𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒏𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒰𑒢 𑒑𑒰𑒏 𑒢𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒦𑒹𑒪। 𑒑𑒰𑒥𑒱 𑒏𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒑𑒼𑒧𑒰𑒧 𑒑𑒰𑒿𑒏𑒲 𑒡𑒢𑒠𑒥। 𑒏𑒢𑒰 𑒠𑒴-𑒨𑒰𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒞𑒿 𑒏𑒢𑒰 𑒑𑒰𑒏-𑒨𑒰𑒧𑒱𑒪𑒰। 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒢𑒫-𑒢𑒫 𑒞𑒥𑒱𑒏 𑒑𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒢𑒰 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒏𑒰 𑒠𑒳𑒥𑒢 𑒢𑓀𑒑𑒧𑒿 𑒦𑒹𑒪𑒲 𑒏𑒥𑒹𑒯। 𑒕𑒠-𑒧𑒰𑒞 𑒑𑒼𑒪𑓂𑒯𑒰𑒏 𑒨𑒥𑒱𑒥𑒰𑒥 𑒪𑒪 𑒢𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒢𑒥𑒱 𑒦𑒹𑒪 𑒏𑒧 𑒢𑒹 𑒢𑒪𑒰। 𑒯𑒳𑒿 𑒦𑒹𑒪𑒲 𑒏𑒥𑒹𑒏 𑒬𑒰𑒯𑒥 𑒂 𑒨𑒰𑒢𑒱𑒏 𑒧𑒰𑒡𑒢 𑒥𑒠𑒥𑒰। 𑒥𑒹𑒯𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒞𑒥𑒱𑒏𑒧𑒿 𑒦𑒹𑒪𑒲 𑒏𑒥𑒹𑒏 𑒪𑒳𑒥𑒱𑒏 𑒑𑒢𑒰𑒥 𑒕𑒪𑒻𑒢 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒏𑒰𑒏𑒹𑒿। 𑒞𑒹𑒨𑒥 𑒧𑒿 𑒨𑒥𑒳𑒞𑒱𑒏 𑒨𑒳𑒏𑒨 𑒧𑒢𑒰। 𑒏𑒢𑒰 𑒧𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒢𑒲 𑒞𑒿 𑒏𑒢𑒰 𑒧𑒰𑒪 𑒥𑒼𑒢𑒲 𑒬𑒪𑒥𑒰 𑒞𑒥𑒰𑒠 𑒏𑒢𑒰। 𑒞𑒕𑒰𑒥𑒱 𑒨𑒥𑒱𑒥𑒰𑒥𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒢𑒰 𑒞𑒥𑒠𑒿 𑒯𑒱𑓀𑒑𑒹𑒞 𑒨𑒪𑒹 𑒕𑒪𑒰। 𑒑𑒰𑒧𑒰𑒏 𑒪𑒰𑒏 𑒧𑒞 𑒠𑒳𑒥𑒢 𑒢𑓀𑒑𑒧𑒿 𑒦𑒹𑒪𑒲 𑒏𑒥𑒹𑒞 𑒥𑒠𑒥𑒰।

𑒨𑒥𑒱𑒥𑒰𑒥 𑒧𑒰𑒪 𑒧𑒰𑒞 𑒑𑒼𑒪𑓂𑒯𑒰𑒏। 𑒑𑒨𑒢 𑒯𑒳𑒢𑒴 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒪𑒲, 𑒥𑒱𑒞𑒰 𑒥𑒰𑒧𑒡𑒢 𑒂 𑒧𑒰𑒞𑒰-𑒮𑒳𑒧𑒱𑒞𑒰, 𑒂 𑒞𑒲𑒢𑒪𑒰 𑒡𑒱𑒨𑒰-𑒣𑒳𑒞𑒰। 𑒑𑒰𑒏𑒪𑒰 𑒥𑒪𑒲 𑒧𑒰𑒮𑒳𑒥 𑒥𑒧𑒹𑒞𑒰। 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒏𑓂𑒏𑒰𑒏 𑒧𑒢 𑒕𑒪𑒻𑒢 𑒯𑒳 𑒥𑒪𑒰 𑒨𑒞𑒱-𑒪𑒱𑒥𑒱 𑒏𑓄 𑒯𑒳𑒢𑒥𑒰𑒢 𑒥𑒢𑒑𑒰, 𑒮𑒳𑒢𑒰 𑒑𑒨𑒢𑒰 𑒧𑒰𑒨𑒪𑒰𑒧𑒿 𑒏𑒲 𑒠𑒑𑒰𑒞। 𑒯𑒳𑒏𑒥𑒰 𑒨𑒞𑒱 𑒠𑒧 𑒯𑒳 𑒧𑒰𑒥𑒹 𑒕𑒲 𑒞𑒏𑒥𑒰 𑒧𑒢 𑒂 𑒪𑒑𑒢 𑒬𑒰𑒠𑒢 𑒢𑒰𑒕 𑒞𑒠𑒢 𑒢𑒰। 𑒯𑒰𑒠𑒱𑒢𑒰 𑒯𑒳𑒑𑒳𑒂 𑒢𑒰𑒪 𑒞𑒢 𑒥𑒱𑒧𑒰𑒢 𑒞𑒿 𑒡𑒰𑒢𑒏 𑒢𑒲𑒠𑒹𑒢 𑒦𑒹𑒞𑒧 𑒠𑒧𑒰 𑒪𑒹𑒞 𑒬𑒥𑓂𑒠𑒱 𑒂 𑒥𑒰𑒢𑒲 𑒢𑒪𑒰𑒨𑒥 𑒥𑒑𑒰𑒠 𑒢𑒲𑒠𑒹𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒪𑒫𑒰 𑒨𑒯𑒹 𑒕𑒻। 𑒧𑒑𑒰𑒠 𑒢𑒰𑒪 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒏𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒪𑒹𑒢।

𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒮𑒳𑒑𑒢𑒪𑒰𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒜𑓃𑒻𑒪 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪 𑒣𑒚𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒐𑒱𑒢। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒳𑒑𑒢𑒪𑒰𑒪 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒏 𑒥𑒠𑒪𑒰 𑒥𑒮𑓂𑒞𑒧 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒏𑒥𑒛𑓂𑒛𑒲 𑒞𑒿 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒞𑒰𑒧-𑒞𑒰𑒧 𑒞𑒿 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒑𑒼𑒪𑒲-𑒑𑒼𑒪𑒲 𑒐𑒹𑒪𑒋 𑒪𑒑𑒻𑒞। 𑒑𑒢𑒥𑒳 𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒥𑒠𑒩𑒰। 𑒂𑒪𑒱-𑒏𑒪𑒻𑒢 𑒏𑒯𑒢 𑒞𑒿 𑒏𑒯𑒢𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒑𑒼𑒠𑒢 𑒨𑒰𑒏𑒪 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧 𑒏𑒱𑒨𑒰 𑒢 𑒪𑒰𑒏𑓂𑒭 𑒮𑒳𑒑𑒢𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒪𑒪 𑒞𑒰𑒓𑒢𑒰𑒏𑓂𑒭 𑒥𑒰𑒧𑒰 𑒪𑒰𑒥𑒏 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒰। 𑒏𑒯𑒥𑒰 𑒥𑒰𑒚𑓃𑒲-𑒗𑒰𑒚𑓃𑒲𑒧 𑒪𑒞𑒰𑒧𑒏 𑒑𑒰𑒕𑒧𑒿 𑒪𑒞𑒰𑒧 𑒏𑒯𑒳𑒢𑒰 𑒞𑒰𑒚𑓃𑒱 𑒮𑓀𑒑𑒲-𑒮𑒰𑒟𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒐𑒱𑒂 𑒠𑒻𑒞। 𑒏𑒯𑒢𑒰 𑒣𑒱𑒙𑓂𑒚-𑒏𑒳𑒢𑒧𑒳𑒢𑒲𑒏 𑒐𑒹𑒪 𑒮𑒏𑒰𑒪 𑒑𑓂𑒧𑒞𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒕𑒳𑒪𑒱 𑒧𑒞𑒰 𑒠𑒏𑓂𑒭𑒞। 𑒏𑒱𑒨𑒰 𑒑𑒰𑒨 𑒥𑒰 𑒢𑒹𑒧𑒏𑒹𑒿 𑒨𑒰𑒪 𑒕𑒳𑒮𑒻𑒪 𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒕𑒳𑒮𑒨 𑒮𑒰 𑒮𑒳𑒑𑒢𑒪𑒰𑒪 𑒮𑒿 𑒠𑒻𑒞 𑒞𑒿 𑒮𑒰𑒏𑒩 𑒮𑓀𑒑 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒏𑓂𑒭𑒻𑒞-𑒏𑓂𑒭𑒻𑒞 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒥𑒳𑒥𑒨। 𑒑𑒰𑒥𑒩-𑒢𑒹𑒧𑒥𑒰𑒥𑒧𑒿 𑒏𑒯𑒥𑒰 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒢𑒲𑒏 𑒧𑒰𑒿𑒞-𑒨𑒰𑒥𑒰𑒧𑒿 𑒨𑒰𑒪 𑒕𑒳𑒮𑒰𑒞 𑒮𑒏𑓂𑒭𑒧𑒿 𑒥𑒰𑒕𑒰 𑒕𑒳𑒮𑒨 𑒮𑒰𑒏𑒱 𑒥𑒰𑒕𑒲, 𑒨𑒰𑒥𑒰 𑒕𑒳𑒮𑒨 𑒮𑒰𑒏𑒱 𑒨𑒰𑒥𑒲 𑒢𑒲𑒏 𑒢𑒢𑓂𑒪𑒏 𑒠𑒨𑒰𑒞, 𑒮𑒳𑒡𑒑𑒩 𑒧𑒰𑒪 𑒠𑒨𑒰𑒞, 𑒢𑒯𑒱 𑒞𑒿 𑒕𑒳𑒗𑒑𑒩 𑒥𑒰𑒕𑒰 𑒥𑒰 𑒢𑒹𑒧 𑒠𑒨𑒰𑒞। 𑒨𑒥𑒹 𑒞𑒥𑒹𑒿 𑒏𑒯𑒢𑒰 𑒢 𑒏𑒯𑒢𑒰 𑒮𑒥𑒥𑒰𑒑, 𑒮𑒪𑒠𑒢 𑒧𑒰𑒨-𑒥𑒰𑒥𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒢 𑒠𑒱𑒢 𑒮𑒳𑒢𑒨 𑒨𑒞𑓂𑒞। 𑒞𑓀𑒑 𑒢𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒧𑒰𑒨-𑒥𑒰𑒨।

𑒮𑒳𑒑𑒢𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒮𑒧𑒩 𑒮𑒰𑒩 𑒥𑒰𑒩𑒠-𑒋𑒠𑒠 𑒥𑒗𑒏 𑒢𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪। 𑒮𑒠𑒱𑒢𑒰 𑒨𑒠𑒱𑒪 𑒧𑒲𑒜 𑒏𑒯𑒥𑒰 𑒧𑒰𑒨-𑒥𑒰𑒨𑒧𑒿 𑒢𑒞𑓂𑒞 𑒕𑒻, 𑒠𑒰𑒧𑒩 𑒧𑒲𑒜 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧𑒿 𑒮𑒰 𑒞𑒧𑒩 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪 𑒮𑒰 𑒠𑒢-𑒥𑒱𑒠𑒢𑒧𑒿 𑒢𑒞𑓂𑒞 𑒕𑒻, 𑒞𑒏𑓂𑒭𑒧 𑒮𑒏𑒩 𑒕𑒳𑒡𑒱, 𑒥𑒱𑒥𑒏, 𑒏𑓂𑒭𑒢 𑒮𑒯𑒢 𑒥𑒠𑒹 𑒕𑒻 𑒮 𑒑𑒨𑒢𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒰𑒏𑓂𑒭 𑒏𑓀𑒨𑒧 𑒖𑒰𑒪𑒱 𑒪𑒏𑓂𑒭𑒨। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒳𑒑𑒢𑒪𑒰𑒪 𑒪𑒪 𑒡𑒢𑒱𑒧𑒢। 𑒑𑒪𑒱-𑒑𑒳𑒪𑒱 𑒏𑓄 𑒧𑒞𑒧𑒰 𑒞𑒏 𑒨𑒖𑒪𑒏। 𑒏𑒱𑒨𑒏 𑒞𑒿 𑒧𑒥𑒏𑒰 𑒠𑒱𑒧𑒧𑒿 𑒧𑒰𑒮𑓂𑒞𑒩 𑒧𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒰𑒠𑒢 𑒢𑒞𑓂𑒞𑒪 𑒕𑒻 𑒮 ’𑒏𑒯𑒥𑒰 𑒨𑒰𑒪 𑒢𑒹 𑒏𑒨𑒪 𑒮𑒨।’

𑒮𑒧𑒨 𑒥𑒲𑒞𑒻𑒞 𑒑𑒹𑒪, 𑒮𑒯𑒢 𑒮𑒳𑒑𑒢𑒪𑒰𑒪 𑒧𑒰𑒪𑒠-𑒧𑒞𑒥𑒠 𑒥𑒗𑒏 𑒢𑒪

𑒞𑒿 𑒧𑒰𑒨-𑒥𑒰𑒣 𑒮𑒩𑒮𑓂𑒫𑒞𑒲 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒲 𑒢𑒰𑒧𑒏 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒲𑒮𑒿 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒏𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒻। 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒏𑓂𑒏𑒰𑒏 𑒧𑒢𑒮 𑒢𑒯𑒱𑒢 𑒕𑒻 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒏𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒥𑒻 𑒞𑒿 𑒏𑒯𑒲𑓀 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒲 𑒣𑒜𑓃𑒰𑒃𑒮𑒿 𑒮𑒳𑒡𑒩𑒱 𑒖𑒰𑒋𑒞। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒞𑒯𑒱 𑒕𑒪𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒞𑒿 𑒏𑒵𑒭𑓂𑒝𑒪𑒰𑒪 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒮𑒿 𑒪𑓄 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒑𑒲𑒞-𑒢𑒰𑒠𑒏 𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢𑒮𑒿 𑒣𑒛𑓃𑒋 𑒪𑒑𑒪। 𑒧𑒰𑒨-𑒥𑒰𑒣 𑒮𑒼𑒔𑒻𑒞 𑒕𑒻 𑒖𑒐𑒢 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒰𑒢𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒢 𑒮𑒰𑒟𑒱 𑒠𑒹𑒥𑒻 𑒮𑒰𑒢𑒱 𑒠𑒰𑒿𑒞-𑒠𑒹𑒫𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒥𑒻 𑒞𑒿 𑒏𑒯𑒲𑓀 𑒏𑒩𑒞𑒼 𑒢𑒰𑒑𑒱 𑒢 𑒖𑒰𑒨। 𑒧𑒢 𑒧𑒧𑒰𑒧𑒱 𑒏𑓄 𑒥𑒯𑒱 𑒖𑒰𑒨।

𑒮𑓀𑒨𑒼𑒑 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒩𑒯𑒪 𑒠𑒱𑒢 𑒣𑒯𑒪- 𑒏𑒵𑒭𑓂𑒝𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒣𑒱𑒞𑒰- 𑒣𑒰𑒏𑒪 𑒣𑒱𑒕𑒴 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒑𑒰𑒕𑒏 𑒥𑒪𑓂𑒪𑒰 𑒏𑒰𑒪𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒕𑒪𑒰। 𑒏𑒵𑒭𑓂𑒝𑒪𑒰𑒪 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰। 𑒠𑒹𑒐𑒪𑒏 𑒖𑒹 𑒣𑒱𑒕𑒴 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒥𑒪𑓂𑒪𑒰𑒏𑒿 𑒏𑒪𑒏𑒞𑒱𑒨𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒑𑒰𑒕 𑒪𑒑 𑒑𑒰𑒕𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒻 𑒮𑒹 𑒏𑒪𑒏𑒞𑒱𑒨𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒢𑒲𑒔𑒪𑒰 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩 𑒣𑒔𑓂𑒕𑒳𑒧𑒿 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒿 𑒥𑒲𑒪𑒱 𑒏𑓄 𑒮𑒹 𑒮𑒩𑒮𑓂𑒫𑒞𑒲𑒏𑒿 𑒮𑒯𑒰 𑒥𑒲𑒪𑒱 𑒣𑒳𑒢𑒴𑒏𑒿 𑒮𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒏𑓄 𑒥𑒰𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒻। 𑒏𑒢𑒲 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒣𑒜𑓃𑒰𑒞𑒱 𑒣𑒱𑒕𑒴 𑒮𑒳𑒞𑒲𑒏𑒿 𑒥𑒢𑓂𑒠𑒪𑒰𑒠𑒰𑒧𑒿 𑒏𑒢𑒲 𑒣𑒳𑒩𑒢 𑒏𑒰𑒪𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒻। 𑒮𑒰𑒪 𑒩𑓄 𑒥𑒰𑒪 𑒮𑒩𑒮𑓂𑒫𑒞𑒲𑒧𑒿 𑒏𑒪𑒧𑒲।

𑒏𑒵𑒭𑓂𑒝𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒮𑒰𑒯𑒰𑒮 𑒕𑒢𑒰 𑒣𑒰𑒪𑓂𑒯 𑒣𑒛𑓃𑒪। 𑒕𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒮𑒰𑒧𑓂𑒩𑒏 𑒖𑒱𑒞𑒪𑒠𑒑𑒲𑒧 𑒏𑓄𑒑𑒰𑒕 𑒫𑒲𑒠 𑒚𑒑𑒱𑒞 𑒮𑒢 𑒫𑒲𑒠 𑒞𑒰𑒨𑒪 𑒢𑒲𑒫𑒲𑒞 𑒮𑒧𑓂𑒯𑒱, 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒵𑒭𑓂𑒝𑒪𑒰𑒪𑒏𑒿 𑒢𑒪𑒗𑒰 𑒥𑒰𑒚𑒲𑒧 𑒣𑒰𑒥𑒱𑒪𑒰 𑒮𑒯𑒮𑒲𑒢𑒏 𑒑𑒰𑒕 𑒞𑒲𑒢-𑒔𑒰𑒩𑒱 𑒞𑒰𑒧𑒏 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒻 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒿 𑒠𑒹𑒪𑒱 𑒏𑓄 𑒞𑒲𑒢 𑒥𑒼 𑒫𑒲𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒑𑒲 𑒕𑒪𑒻 𑒣𑒳𑒩𑒰 𑒠𑒴 𑒞𑒲𑒢 𑒞𑒰𑒧𑒏 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒪𑒗𑒰। 𑒮𑒯𑒮𑒲𑒢 𑒮𑒹 𑒫𑒲𑒥𑒰, 𑒣𑒳𑒢𑓂 𑒪𑒑𑒲𑒏𑒿 𑒮𑒳𑒞𑒥𑒲𑒧𑒿 𑒥𑒰𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒻। 𑒕𑒚𑒱𑒏 𑒢𑒑𑒪𑒮 𑒮𑒯𑒪𑒰𑒪𑒰 𑒥𑒼𑒠𑒩 𑒠𑓄 𑒮𑒰𑒞𑒱 𑒣𑒞𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒻। 𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒞𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒠𑒹𑒞𑒏𑒿 𑒣𑒰𑒪𑒧𑒪𑒱𑒨𑒰 𑒥𑒼𑒠𑒩 𑒮𑒯𑒰 𑒏𑓄 𑒥𑒲𑒪𑒢 𑒕𑒪𑒰 𑒮𑒹 𑒠𑒹𑒞 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒢 𑒕𑒪𑒰। 𑒠𑒲𑒚𑒰𑒏 𑒣𑒳𑒮𑓂𑒞𑒏 𑒕𑒰𑒥 𑒣𑒯𑒱𑒢 𑒢𑒲𑒧𑒏 𑒣𑒧𑒰𑒏𑒿 𑒮𑒯𑒰, 𑒞𑒧𑒰𑒏𑒳𑒪𑒏 𑒚𑒰𑒿𑒏𑓂𑒯𑒿

जाहि, गाछसभक छाँहक संग मिला कऽ ठेहस जीवन भेल। सङ्गीत आ लीला उनक लक्ष्मी नागरक नलक्षा बनमातक बुन्नायाक समय भेल। यानिक जलाशन कम बड़ल। जब श्रवन सन कहना कहुनक दिस आयू नै बन्नात, ताब शनक जब-जबबहनीसँ बुधिक गरमी नै न बुले भक्षा बीस-पचीस दिनक बाद सङ्गीनक मुहीक बन्दलातहँ बाक बुन्नी उपरसँ कानि हलकै आ लीलाक मुहीकँ बहऽ हलकै। नीक जकाँ जबन गाछ लागि बेलै आ फूल-बतियाक समय बेलै, तखैन गाछक जड़िम हन्ना बीत दहना कऽ डी.ए.पी खाद लगनग सब गाम सन्ना भीटि हलकै आ खेतक पानि हलकै। बक-बक लाबसँ उपरक लीला पाछलै।

गन्हासी-बन्हासी सबानसँ लगबलल लीला पाछल हवै तँ विसबास न लाछ जे लीला छिये आकि बेता आकि सङ्गीनक बतीसा। मुहा जखन लग जे कऽ हवै तँ भगुन्ता लगि जाइ। पिताकँ फुल्का भाती जुलाछ जे आब बुझि पड़ैय जुगतलाल मुखरता।

सबकाब दिससँ आती माल मधुबनी म्लाडियसम पाल-फूल, तबकरी-पाडकरीक प्रतियागिता, डिला मतबयब आयाजन कएल बेल भेल। सबकारक उदस भेल हरित क्रान्ति दिस किसानकँ प्रात्साहित कऽ हुन्नकँ आयू बन्नायक। डिला नबिक किसान श्रवन-श्रवन जे नीक कदीमा, सङ्गीन, मुरै, आल, मिरचाछ इत्यादि सन तरकरक तरकरी लऽ लऽ पहुँचल भेल। सन किया श्रवना-श्रवना आगुस जकर जे सामान भेलै ए लऽ कऽ बैसल भेल। मुरैया भेलै तँ दू-दू हाथक, सङ्गीन भेलै तँ

𑒠𑒴-𑒠𑒴 𑒯𑒰𑒟𑒏, 𑒏𑒯𑒲𑒮 𑒕𑒪𑒻 𑒞𑒿 𑒞𑒲𑒮-𑒞𑒲𑒮-𑒔𑒰𑒪𑒱𑒮-𑒔𑒰𑒪𑒱𑒮 𑒏𑒱𑒪𑒼𑒏, 𑒐𑒰𑒪 𑒞𑒿 𑒣𑒔𑒣𑒢𑒮𑒿 𑒥𑒲𑒮-𑒥𑒲𑒮 𑒏𑒱𑒪𑒼𑒏। 𑒧𑒱𑒩𑒔𑒰𑒃𑒏𑓂𑒨𑒰𑒏 𑒑𑒰𑒕 𑒕𑒪𑒻 𑒞𑒿 𑒑𑒰𑒕 𑒯𑒰𑒟𑒏 𑒑𑒰𑒕 𑒂 𑒪𑒳𑒡𑒏𑒲 𑒪𑒑𑒪 𑒧𑒱𑒩𑒔𑒰𑒨 𑒒𑒰𑒙𑒪, 𑒤𑒴𑒪 𑒥𑒜𑒻 𑒞𑒿 𑒩𑓀𑒑-𑒥𑒱𑒩𑓀𑒑𑒏। 𑒩𑓀𑒑-𑒥𑒱𑒩𑓀𑒑𑒏 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑒏 𑒖𑒏𑒿 𑒒𑒰𑒪, 𑒤𑒴𑒪 𑒧𑒯𑒏𑒻𑒪 𑒕𑒪𑒰। 𑒖𑒳𑒑𑒞𑒪𑒰𑒪 𑒧𑒠𑒰 𑒑𑒨𑒢 𑒞𑒲𑒢𑒪𑓂𑒑𑒰 𑒠𑒲𑒫𑒰𑒏𑒿 𑒪𑒪𑓂𑒏𑒻𑒢 𑒕𑒪, 𑒞𑒰𑒿𑒏𑒱 𑒠𑒏𑓂𑒭𑒱𑒝𑒰𑒧 𑒥𑒜𑒹𑒢 𑒕𑒪𑒰। 𑒠𑒲𑒢𑒰 𑒠𑒠 -𑒠𑒠 𑒑𑒰𑒏-𑒖𑒳𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒠𑒠𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒢𑒲𑒕 𑒪𑒑𑒱 𑒥𑒹𑒪𑒰।

𑒣𑒴𑒮𑒰 𑒒𑒰𑒧𑒏 𑒏𑒵𑒭𑒱 𑒫𑒻𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑒱𑒏 𑒧𑒢 𑒧𑒠𑒰 𑒕𑒪𑒰। 𑒖𑒢𑒰 𑒪𑒰𑒏𑒻𑒢 𑒖𑒳𑒑𑒞𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒠𑒲𑒢𑒰 𑒠𑒠𑒪𑒻𑒢। 𑒖𑒳𑒢𑒏 𑒧𑒢𑒏𑒿 𑒕𑒑𑒳𑒢𑓂𑒞𑒰 𑒪𑒑𑒱 𑒥𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒖𑒳𑒑𑒞𑒪𑒰𑒪𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒥𑒰𑒨-𑒧𑒧𑒞𑒲𑒢𑒰 𑒏𑒪𑒻𑒢। 𑒧-𑒫𑒱𑒧𑓂𑒞𑒰𑒥 𑒖𑒳𑒑𑒞𑒪𑒰𑒪 𑒠𑒲𑒥𑒰𑒏 𑒖𑒨𑒖𑒏 𑒥𑒰𑒥𑒧 𑒏𑒯𑒪𑒏𑒻𑒢। 𑒑𑒢𑓂𑒢𑒧 𑒠𑒳𑒥𑒮𑓂𑒏𑒥𑒏 𑒥𑒥 𑒖𑒱𑒪𑒰𑒡𑒱𑒢 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒨 𑒐𑓂𑒨𑒰𑒨𑒞𑒰 𑒏𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒠𑒲𑒥𑒰𑒏 𑒖𑒨𑒖𑒧 𑒠𑒳𑒥𑓂𑒥𑒧 𑒠𑒳𑒥𑒮𑓂𑒏𑒥 𑒖𑒳𑒑𑒞𑒪𑒰𑒪𑒏𑒿 𑒠𑒪 𑒖𑒏𑓂𑒭𑒨𑒰। 𑒑𑒠𑒲 𑒞𑒥𑒠𑒿 𑒏𑒏𑒢𑒰 𑒑𑒪𑓂𑒢𑒴, 𑒞𑒿 𑒏𑒏𑒢𑒰 𑒏𑒢𑒲𑒮𑒰, 𑒞𑒿 𑒏𑒏𑒢𑒰 𑒧𑒖𑒧𑒲𑒢𑒧, 𑒖𑒏𑒰𑒥 𑒖𑒠𑒢 𑒥𑒰𑒧 𑒥𑒠𑒻 𑒞𑒠𑒢 𑒠𑒳𑒥𑒮𑓂𑒏𑒥𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒠𑒢𑓂𑒢𑒮𑒲-𑒠𑒢 𑒠𑒪 𑒥𑒹𑒪𑒏𑓂𑒭𑒰।

𑒣𑒴𑒮𑒰𑒏 𑒫𑒻𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑒱𑒏, 𑒖𑒳𑒑𑒞𑒪𑒰𑒪𑒏𑒿 𑒮𑓀𑒑 𑒪𑓄 𑒣𑒴𑒮𑒰 𑒒𑒰𑒧 𑒪𑓄 𑒥𑒹𑒪𑒫𑒱𑒢। 𑒂 𑒒𑒰𑒧𑒧 𑒏𑒵𑒭𑒱 𑒖𑒢𑒻𑒞 𑒥𑒼𑒖 𑒥𑒱𑒢𑒰𑒑𑒧 𑒏𑒢𑒰 𑒠𑒠𑒠𑒥 𑒠𑒠𑒮𑓂𑒧𑒰𑒨𑒱𑒞 𑒏𑓄 𑒠𑒠𑒪𑒏𑒻𑒢। 𑒢𑒰𑒢𑒱-𑒥𑒥𑒱𑒏𑒿 𑒑𑒢𑒥𑒰𑒥 𑒖𑒳𑒑𑒞𑒪𑒰𑒪 𑒂𑒧 𑒂𑒥𑒩𑒰, 𑒒𑒰𑒧𑒧 𑒢𑒲𑒏-𑒢𑒲𑒏 𑒞𑒩𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒂 𑒤𑒪-𑒤𑒴𑒪, 𑒡𑒰𑒢𑒏 𑒥𑒲𑒖 𑒏𑓂𑒭𑒪𑓂𑒨𑒰𑒠𑒱𑒏𑒿 𑒖𑒢𑒻𑒞 𑒏𑒱𑒧𑒱𑒧𑒏 𑒧𑒢 𑒥𑒢𑒥𑓄 𑒪𑒰𑒑𑒪।

𑒂𑒏𑓂𑒭 𑒥𑒥𑒰𑒠 𑒖𑒳𑒑𑒞𑒪𑒰𑒪 𑒠𑒧 𑒏𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒢𑒲𑒔𑒥𑒪𑒰 𑒖𑒧𑒲𑒢 𑒠𑒥𑒲𑒠 𑒩𑓀𑒑-𑒥𑒱𑒩𑓀𑒑𑒏 𑒏𑒪𑒧𑒲 𑒂𑒧 𑒑𑒳𑒪𑒰𑒥𑒐𑒰𑒮, 𑒑𑒧𑒨𑒰𑒪𑒲, 𑒧𑒱𑒏𑒴𑒪, 𑒧𑒱𑒧𑒱𑒨𑒰, 𑒑𑒳𑒪𑒰𑒥 𑒢𑒰𑒑 𑒂𑒠𑒱 𑒞𑒹𑒮𑓀𑒑 𑒤𑒪 𑒖𑒧𑒳𑒢, 𑒥𑒹𑒪, 𑒡𑒰𑒞𑓂𑒩𑒲𑒮, 𑒪𑒞𑒰𑒧, 𑒁𑒢𑒰𑒩,

नवीना इत्यादि रंग-बिरंगक चाल सन लगैत छलि। एखन चारि कन्या चौमासम रोध कहलक कली, सङ्गीन, वीणा, पुष्प आल सबहक बेटी कहैत छलि। समाजम ज्ञानि ठगलै, दरोस कहलक तँ समाजक रंग बदलि गेलइ।

कनिया काकाकेँ झुनुतक बेटी बद्द बाती तँ झुताइम बेले झु कती-कती बझली कहलनि-

"बद्द, तादललका झुनुतलालकेँ, की कहैत की तऽ गेलइ।"

लालक कहै-

"तँ बीक, कलामँ की ने लाइ बइ।"

आब तँ झुनुतलालमँ झुनुतलाल बाबू तऽ गेल।

भगवानाक लीला अदृष्ट छलि, तइम कमक प्रधानता बल बेल छलि। कम कहबै तँ चाल निमन्त्रित तल्पता नाग नवाम कतक दिन ठीक।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१.६.कामिनीक चालिसक ६ टा कथा- कथा-६ ठाकुरक सम्पादकीय समीक्षा संपादकीय सम्पादकीय पृष्ठ पर

विदेहक लेखकक प्रकाशित रचना आ प्रकाशक प्रकाशित समीक्षकक समीक्षा सारांश एखन धरि एतँ पढ़ली-

१ कामिनीक पाँच टा कविता आ प्रकाशक मधुश्रावण पाक विश्वती

Videha_01_09_2016

𑓑. 𑒖𑒑𑒠𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒗𑒰 "𑒧𑒢𑒳"𑒏 "𑒧𑒰𑒢𑒱𑒏 𑒥𑒰𑒖𑒢"𑒣𑒩 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩𑒏 𑒙𑒱𑒣𑓂𑒣𑒝𑒲

VIDEHA_353

𑓑. 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒏𑒰𑒧𑒞𑒏 𑒑𑒖𑒪𑓀𑒏𑒲 "𑒖𑒱𑒢𑓂𑒠𑒑𑒲𑒏 𑒧𑒼𑒪" 𑒣𑒩 𑒂𑒬𑒲𑒭𑒣𑒩 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩𑒏 𑒙𑒱𑒣𑓂𑒣𑒝𑒲

VIDEHA_354

𑒃 𑒮𑓀𑒏𑒪𑒢 𑒂𑒑𑒰𑒿 𑒮𑒧𑒰𑒢𑒰𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒡𑒰𑒩𑒰𑒏 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒑𑒖𑒪𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒫𑒱𑒑𑒝𑒮𑒿 𑒠𑒳𑒢𑒏 𑒢𑒫𑒱𑒢𑒞𑒧 𑒠𑒳𑒢𑒏𑒰𑒢 𑒑𑒖𑒪 𑒮𑒧𑒫𑒹𑒬 𑓗-𑓗 𑒙𑒰 𑒏𑒨𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒫𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒕𑒟𑒱:-

𑒁𑒢𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒰𑒩 𑒂𑒐𑒩

𑓑.𑒅𑒧𑒹𑒬 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪

𑓒.𑒩𑒰𑒧 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮 𑒮𑒰𑒯𑒳

𑓓.𑒩𑒰𑒖𑒠𑒹𑒫 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪

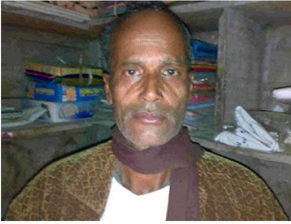
𑓔.𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮 𑒩𑒰𑒨

𑓕.𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪

𑓖.𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪

𑓗.𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪

𑒃 𑒮𑓀𑒏𑒪𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒁𑒢𑒔𑒱𑒢𑓂𑒯𑒰𑒩 𑒂𑒐𑒩𑒏 𑓗 𑒙𑒰 𑒏𑒫𑒱, 𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬𑒣𑒩 𑒏𑒩𑒢 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒲𑒨 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏𑒲𑒨 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱 𑒣𑒩 𑒁𑒕𑒱।- 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏



𑒏𑒣𑒱𑒪𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒩𑒰𑒅𑒞 𑒏𑒹𑒩 𑒣𑒰𑒿𑒔𑒙𑒰 𑒏𑒟𑒰

𑒏𑒟𑒰 𑓓

𑒣𑒳𑒢𑒩𑓂𑒢𑒫𑒰

𑒥𑒧𑒳𑒢 𑒤𑒴𑒪 𑒛𑒰𑒪𑒲 𑒪𑓄 𑒦𑒼𑒩-𑒦𑒼𑒩 𑒏𑒱𑒢𑒱𑒏𑒰 𑒅𑒚𑒻𑒮𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒤𑒴𑒪 𑒪𑒼𑒜𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒥𑒱𑒠𑒰 𑒦𑒹𑒪𑒲। 𑒬𑒱𑒫𑒪𑒱𑓀𑒑 𑒣𑒰𑒏𑒪 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫𑒏 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒕𑒪𑒻। 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒠𑒹𑒐𑒱 𑒏𑓄 𑒠𑒳𑒂𑒩𑒏 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒮𑒯𑒰 𑒕𑒪𑒐𑒱। 𑒥𑒧𑒳𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒱𑒨𑒧 𑒕𑒪𑒻 𑒦𑒼𑒩 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧 𑒧𑒳𑒯𑒴𑒩𑓂𑒞𑒧 𑒅𑒚𑒱 𑒢𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒤𑒴𑒪 𑒂𑒢𑒱, 𑒮𑓂𑒢𑒰𑒢 𑒏𑓄 𑒦𑒑𑒫𑒞𑒲 𑒂 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫𑒏 𑒣𑒴𑒖𑒰 𑒏𑓄 𑒏𑒟𑒰 𑒢 𑒏𑒟𑒰 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒑𑓂𑒩𑒢𑓂𑒟𑒏 𑒑𑒲𑒞𑒰 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒨𑒝 𑒣𑒰𑒚 𑒏𑒩𑒲। 𑒞𑒏𑒩 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒕𑒪𑒻 𑒥𑒯𑒰𑒩𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒱𑒂𑒯𑒏 𑒧𑒰𑒮-𑒠𑒴 𑒧𑒰𑒮𑒧 𑒫𑒱𑒡𑒫 𑒦𑒰𑒑𑒫𑒰।

𑒂𑒥 𑒢 𑒫𑒱𑒡𑒫𑒰 𑒥𑒱𑒂𑒯𑒏 𑒧𑒳𑒮𑓀𑒨𑒰𑒞 𑒦𑒹𑒪𑒻 𑒯𑒹𑒢, 𑒮𑒞𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒰 𑒥𑒢𑓂𑒢 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪 𑒯𑒹𑒢, 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒃 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒢𑒻 𑒢 𑒕𑒪𑒐𑒱। 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒞𑒿 𑒣𑒞𑒱𑒏 𑒧𑒳𑒃𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒂𑒑𑒱𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒂𑒑𑒲 𑒮𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒰𑒩𑒫 𑒣𑒞𑓂𑒢𑒲𑒨𑒼𑒿𑒏 𑒥𑒪𑒖𑒼𑒩𑒲 𑒖𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪𑒐𑒱। 𑒂𑒥 𑒞𑒿 𑒅𑒖𑒩𑒰 𑒮𑒰𑒛𑒲-𑒮𑒰𑒨𑒰-𑒥𑓂𑒪𑒰𑒅𑒖 𑒣𑒯𑒱𑒩𑒰, 𑒯𑒰𑒟𑒏 𑒔𑒳𑒛𑒲 𑒤𑒼𑒛𑒱, 𑒧𑒰𑒿𑒑𑒏 𑒮𑒱𑒢𑓂𑒠𑒳𑒩 𑒧𑒹𑒙𑒰 𑒣𑒰𑒏 𑒥𑒩 𑒔𑒹𑒢𑒰𑒃, 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒰𑒧𑒪𑒢𑒲 𑒏𑒩𑒢𑒰𑒃, 𑒣𑒢𑒱𑒑𑒰𑒩 𑒕𑒰𑒛𑒱 𑒏𑒟𑒰 𑒩𑒰𑒧𑒩 𑒧𑒯𑒮𑒿 𑒑𑒨-

𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒥𑒢𑓂𑒡 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒕𑒪𑒻𑒏।
𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒏𑒪𑒰 𑒂 𑒨𑒧𑒳𑒢𑒏 𑒧𑒰𑒨 𑒕𑒪𑒲, 𑒍 𑒮𑒰𑒮𑒳 𑒨𑒧𑒳𑒢𑒏 𑒙𑒴 𑒠𑒢𑓂𑒢𑒰 𑒠𑒠
𑒨𑒧𑒳𑒢𑒧𑒿 𑒠𑒳𑒐𑒪𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒏𑒞𑒨 𑒁𑒕𑒱 𑒕𑒲।
𑒣𑒴𑒪 𑒪𑒰𑒑𑒏 𑒪𑒪 𑒨𑒧𑒳𑒢 𑒥𑒰𑒖𑒪। 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒏𑒪𑒰𑒏𑒿 𑒏𑒢𑓂𑒞 𑒣𑒰𑒥𑒱 𑒥𑒰𑒪𑒻,
𑒮𑒰𑒠𑒱𑒧𑒿 𑒢𑒰𑒧 𑒞𑒰𑒥-𑒞𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒰𑒪𑒕𑒱। 𑒏𑒢𑒰 𑒢 𑒠𑒨𑒞। 𑒨𑒧𑒳𑒢𑒏 𑒥𑒱𑒫𑒰𑒯
17 𑒥𑒩𑒹𑒏 𑒁𑒧𑒥𑒧 𑒏𑒢 𑒕𑒪। 𑒮𑒯𑒢 𑒨𑒧𑒳𑒢𑒏𑒿 𑒁𑒥𑒰𑒢𑒲 𑒥𑒢𑒰𑒪
𑒕𑒪𑒕𑒱। 𑒮𑒳𑒪𑒰𑒥𑒏 𑒏𑒪𑒲𑒧𑒿 𑒣𑒴𑒪 𑒧𑒢 𑒦𑒱𑒪𑒪 𑒔𑒠𑒥𑒰 𑒥𑒰𑒥-𑒢𑒰𑒥 𑒠𑒠
𑒏𑒧𑒪-𑒏𑒧𑒪 𑒁𑒢-𑒮𑒿𑒠𑒳𑒩, 𑒞𑒏𑒥𑒰 𑒁𑒖𑒥𑒰 𑒢𑒳𑒞𑒰 𑒥𑒠𑒱𑒏𑒢 𑒪𑒰𑒥
𑒮𑒴𑒢, 𑒧𑒰𑒿𑒑 𑒮𑒴𑒢 𑒠𑒠 𑒏ऽ 𑒮𑒰𑒠𑒱𑒧𑒿 𑒢𑒰𑒧 𑒞𑒰𑒥-𑒞𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒰𑒪 𑒕𑒪𑒻 𑒏𑒿𑒢𑓂𑒞
𑒣𑒰𑒥𑒱 𑒥𑒰𑒪 𑒕𑒪𑒕𑒱।
𑒨𑒧𑒳𑒢𑒰𑒏𑒿 𑒧𑒰𑒕𑒏 𑒔𑒠𑒥𑒰 𑒠𑒠 𑒏ऽ 𑒮𑒰𑒠𑒱𑒧𑒿 𑒢𑒰𑒧 𑒞𑒰𑒥-𑒞𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒰𑒪
𑒕𑒪𑒕𑒱। 𑒣𑒴𑒪𑒖𑒰𑒪𑒲 𑒢𑒢 𑒮𑒏-𑒥𑒏𑒏𑒿 𑒥𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒢ऽ 𑒥𑒰𑒪। 𑒁𑒠𑒱𑒢𑒰 𑒨𑒏-
𑒨𑒏 𑒏𑒢𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒰𑒢𑒰-𑒣𑓂𑒩𑒞𑒰𑒢 𑒥𑒏𑒧𑒳𑒖𑒲 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒁𑒕𑒱 𑒕𑒻 𑒞𑒠𑒱𑒢𑒰 𑒥𑒰𑒢𑓂𑒞
𑒕𑒪। 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒏𑒿 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒠𑒥𑒻𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒰 𑒥𑒖𑒻𑒞 𑒦𑒱𑒨𑒰 𑒢। 𑒏𑒢𑒲𑒏𑒪𑒏 𑒥𑒰𑒠
𑒨𑒧𑒳𑒢 𑒣𑒴𑒪𑒖𑒰𑒪𑒲 𑒪ऽ 𑒏ऽ 𑒦𑒱𑒢𑒰 𑒢ऽ 𑒥𑒰𑒪।
𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒏𑒪𑒰𑒏𑒿 𑒥𑒣𑒲𑒏 𑒥𑒱𑒫𑒰𑒯𑒧𑒿 𑒪ऽ 𑒏ऽ 𑒮𑒰𑒮𑒳 𑒞𑒏𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒰𑒢𑒰 𑒧𑒰𑒢
𑒨𑒞𑒱 𑒥𑒰𑒪 𑒕𑒪𑒕𑒱। 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒰𑒢𑒰 𑒕𑒪𑒻 𑒁𑒠𑒨𑒣𑓂𑒩𑒥 𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒥𑒣𑒲 𑒨𑒧𑒳𑒢𑒏
𑒥𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒨𑒥𑒱𑒞𑒰𑒥𑒨𑒳𑒥𑒏 𑒮𑒢𑒧𑒰𑒢 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒪𑒖𑒏 𑒁𑒰𑒧𑒣𑓂𑒩𑒥𑒧𑒿 𑒢𑒪 𑒕𑒪।
𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒏𑒪𑒰 𑒥𑒱𑒫𑒰𑒯𑒧 𑒮𑒧𑒨 𑒞𑒰𑒥𑒧𑒿 𑒧𑒰𑒿𑒞-𑒥𑒰𑒿𑒖 𑒏𑒢 𑒕𑒪𑒲। 𑒥𑒰𑒨𑒰
𑒁𑒠𑒨𑒣𑓂𑒩𑒥 𑒥𑒣𑒲-𑒁𑒧𑒰𑒕𑒏 𑒪𑒪 𑒥𑒰𑒢-𑒠𑒠𑒖𑒧 𑒏𑒢𑒰 𑒏𑒞𑒰𑒠𑒲 𑒢𑒺
𑒏𑒢 𑒕𑒪। 𑒏𑒢𑒰 𑒢 𑒏𑒥𑒱𑒞𑒻𑒥, 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒨𑒥𑒱𑒥𑒰𑒥 𑒁𑒧𑒲𑒢𑒠𑒰𑒥 𑒞𑒿 𑒢𑒠𑒱,
𑒮𑒳𑒢𑒰 𑒠𑒧𑒥𑒱𑒖𑓂𑒞 𑒠𑒪𑒞𑒏 𑒧𑒰𑒪𑒱𑒏 𑒞𑒿 𑒕𑒪𑒰𑒠।
𑒁𑒠𑒨𑒣𑓂𑒩𑒥 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏𑒿 𑒨𑒏𑒪𑒰 𑒪𑒖𑒏 𑒮𑒴𑒨𑒠𑒥 𑒍 𑒨𑒏𑒪𑒰 𑒪𑒖𑒏𑒲

𑒥𑒧𑒳𑒢, 𑒞𑓀𑒋 𑒥𑒪𑒰-𑒥𑒪𑒲𑒧 𑒏𑒢𑒰 𑒨𑒰𑒢𑓂𑒯 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒑𑒨𑒢𑒰 𑒧𑒰𑒧𑒥𑒥𑒏 𑒧𑒰𑒞𑒥𑒱𑒏 𑒥𑒧𑒳𑒢𑒏 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒯 𑒏𑒢 𑒕𑒪𑒰।

𑒑𑒢𑒧𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏𑒹𑓀 𑒠𑒴 𑒪𑒛𑓃𑒏𑒰। 𑒋𑒏𑒏𑒹𑓀 𑒢𑒰𑒧 𑒕𑒪 𑒬𑓂𑒨𑒰𑒧𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒂 𑒠𑒼𑒮𑒩𑒏𑒹𑓀 𑒢𑒰𑒧 𑒕𑒪 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩। 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒪𑒛𑓃𑒏 𑒍𑒯𑒢 𑒜𑒩𑒻𑒧 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒢𑒥 𑒞𑒯𑒢 𑒠𑒠 𑒠𑒢𑓂𑒢𑒰 𑒕𑒪𑒻𑒢। 𑒍𑒃 𑒪𑒛𑓃𑒏 𑒬𑓂𑒨𑒰𑒧𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒧𑓀 𑒥𑒧𑒳𑒢𑒏 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒯 𑒞𑒪 𑒕𑒪 𑒧 𑒑𑒰𑒕 𑒧𑒰𑒑𑒏𑒹𑓀 𑒥𑒱𑒞𑒪𑒰𑒯𑒰 𑒕𑒪𑓂𑒢𑒰 𑒧𑒰𑒢 𑒥𑒛𑓃𑒪 𑒕𑒪𑒕𑒰। 𑒨𑒥𑒱𑒯𑒰𑒥𑒨𑒳𑒥𑒏 𑒑𑒑𑒪-𑒥𑒑𑒪𑒧 𑒥𑒱𑒧𑒳𑒢𑒨𑒳𑒥, 𑒏𑓁𑒛𑒨𑒳𑒥, 𑒥𑒳𑒠𑒧𑒨𑒳𑒥, 𑒏𑒢𑒏𑒨𑒳𑒥, 𑒏𑒧𑒪𑒨𑒳𑒥 𑒃𑒞𑓂𑒨𑒰𑒠𑒱। 𑒍𑒛𑓃𑒢𑒲𑒞𑒪𑒏 𑒧𑒧𑒑 𑒕𑒪𑒕𑒰। 𑒑𑒰𑒢 𑒑𑒰𑒧 𑒧𑒞𑒧 𑒢 𑒧𑒳𑒏𑒢𑒰𑒞𑒲 𑒠𑒱𑒢 𑒢𑒱𑒧𑒴𑒯 𑒧𑒳𑒑𑒥𑒏 𑒥𑒢𑓂𑒢𑒰𑒏𑒹𑓀 𑒋𑒏𑒏𑒰 𑒪𑒰𑒑𑒲𑒧 𑒥𑒰𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒧𑒰𑒪-𑒍𑒪𑒧𑓀 𑒠𑒳𑒥𑒱𑒨𑒰𑒯𑒰 𑒜𑒹𑒪 𑒜𑒹𑒪𑒰𑒨𑒰𑒪 𑒍𑒕 𑒕𑒻 𑒧𑒳𑒢𑒰 𑒍𑒧𑓂𑒢𑒥𑒞𑒥 𑒧𑒰𑒢 𑒨𑒥𑒱𑒯𑒰𑒥𑒨𑒳𑒥 𑒠𑒱𑒧 𑒍𑒛𑓃𑒢𑒲𑒞𑒪𑒏𑒹𑓀 𑒧𑒢𑒳𑒜-𑒧𑒢𑒳𑒜𑒧 𑒜𑒹𑒪 𑒜𑒹𑒪𑒰𑒨𑒰𑒪 𑒍𑒕 𑒕𑒻। 𑒍𑒛𑓃𑒢𑒲𑒞𑒪𑒧𑓀 𑒋𑒏𑒠𑒱𑒢 𑒨𑒯𑒱𑒢 𑒧𑒢𑒳𑒭𑒰 𑒜𑒰 𑒌𑒞𑒧, 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒢 𑒞𑒢 𑒫𑒻𑒧𑒰𑒜𑒏 𑒨𑒯𑒱𑒪 𑒠𑒱𑒢 𑒢𑒲𑒏-𑒢𑒱𑒏𑒳𑒞 𑒧𑒰𑒢 𑒥𑒥-𑒥𑒥𑒲, 𑒧𑒳𑒢𑒑𑒰 𑒠𑒪 𑒥𑒰𑒕𑒪 𑒞𑒰𑒞, 𑒠𑒯𑒲-𑒔𑒲𑒢𑒲 𑒜𑒰 𑒏𑓄 𑒑𑒰𑒢 𑒑𑒰𑒧 𑒧𑒞𑒧 𑒍𑓁𑒑𑒪𑒲-𑒍𑒢𑒥𑒥𑒏 𑒢𑒱𑒏𑒥 𑒞𑒰𑒕 𑒕𑒻 𑒧𑒳𑒢𑒰 𑒋𑒯𑒱 𑒑𑒰𑒧 𑒧𑒞𑒧 𑒋𑒏𑒏𑒹𑓀 𑒢𑒧𑒯𑒥 𑒜𑒑𑓂𑒑𑒲𑒏𑒹𑓀 𑒨𑒰𑒢𑒱-𑒨𑒰𑓀𑒥 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒥𑒲𑒨𑒏 𑒥𑒰𑒡 𑒥𑒰 𑒜𑒹𑒪𑒏 𑒧𑒻𑒠𑒰𑒢𑒧 𑒪𑒪𑒏 𑒨𑒰𑒑𑓂𑒢𑒳 𑒪𑒑𑒰, 𑒜𑒑𑓂𑒑𑒲𑒏𑒹𑓀 𑒥𑒰𑒢𑓂𑒯𑒱 𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒕𑒰। 𑒑𑒰 𑒍𑒥 𑒑𑒛𑓃𑒧𑒰𑒪𑒕𑒧 𑒏𑒨𑒰𑒪 𑒍𑒕𑒞 𑒕𑒕𑒰। 𑒜𑒴 𑒧𑒞 𑒍𑒑𑒰𑒥 𑒨𑒰𑓀𑒑𑒰 𑒧𑒰𑒞 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒥𑒱, 𑒧𑒰𑒧𑒴𑒯𑒱𑒏 𑒨𑒢𑓂𑒢 𑒏𑒥𑒱 𑒏𑓄 𑒏𑒻𑒞 𑒑𑒩𑓂𑒥𑒰। 𑒞𑒰𑒑𑒞𑒏 𑒥𑒪 𑒨𑒰𑒧𑓂𑒞𑒰𑒧𑓀 𑒜𑒑𑓂𑒑𑒲 𑒜𑒼𑒪𑒱 𑒪𑒱𑒑𑒰। 𑒠𑒴-𑒨𑒰𑒢𑒱 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒪𑒰𑒏 𑒨𑒏 𑒞𑒥𑒨𑒰, 𑒠𑒴 𑒨𑒰𑒢𑒱 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒪𑒰𑒏 𑒠𑒰𑒧𑒥 𑒞𑒥𑒨𑒰, 𑒞𑒧𑒧𑒑𑒲𑒥𑒏 𑒏𑒥𑒧𑒰𑒢 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒥𑒜𑓃𑒹 𑒕𑒻, 𑒥𑒳𑒪𑒱𑒧 𑒥𑒰 𑒥𑒧𑒰𑒢𑒰𑒏 𑒥𑒥𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒧𑒢𑒰 𑒥𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒕𑒰। 𑒞𑒧𑒧𑒑𑒲𑒥𑒏 𑒧𑒳𑒥𑒏𑓂𑒭 𑒪𑒪𑒰। 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒠𑒪𑒧 𑒢𑒢 𑒥𑒜𑓃𑒹 𑒕𑒻, 𑒜𑒑𑓂𑒑𑒲 𑒜𑒼𑒪𑒏

[illegible]

𑒧𑒰𑒨𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒰𑒥𑒴-𑒥𑒰𑒥𑒴 𑒏𑒯𑒱 𑒥𑒰𑒖𑒻 𑒥𑒰𑒖𑒰 𑒞S 𑒁𑒧𑒩𑒢𑒰𑒟 𑒥𑒰𑒖𑒪-
"𑒥𑒾𑒂, 𑒞𑒴𑒿 𑒞 𑒮𑒛𑒪-𑒑𑒪𑒪 𑒢𑒱𑒨𑒧 𑒮𑒦 𑒮𑒢 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒏𑒩𑒰
𑒞𑒼𑒛𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒋𑒐𑒢 𑒮𑒦 𑒮𑒢 𑒥𑒱𑒡𑒫𑒰 𑒞𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒖𑒰 𑒠𑒴𑒖𑒰 𑒥𑒱𑒫𑒰𑒯
𑒏𑒩𑒞 𑒁𑒰 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒑𑒝𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒥𑒢𑓂𑒡 𑒏𑒲 𑒂𑒥𑒏𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒧𑒰𑒑𑒢𑒯𑒱
𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱? 𑒂𑒥𑒏𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒫𑒰 𑒮𑓂𑒫𑒞𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩𑒞𑒰 𑒥𑒰𑒡 𑒢𑒻 𑒁𑒕𑒱?
𑒏𑒲 𑒧𑒰𑒪-𑒖𑒰𑒪 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒏𑒞𑒾 𑒠𑒳𑒏𑒰𑒢𑒧𑒹 𑒥𑒱𑒏𑒞? 𑒂𑒥𑒱 𑒥𑒱𑒡𑒫𑒰 𑒮𑒥𑒯𑒏
𑒪𑒹𑒪 𑒥𑒢𑒰𑒌𑒪 𑒫𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒕𑒻, 𑒖𑒞𑒨 𑒥𑒢𑓂𑒡𑒢𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞𑒱𑒏 𑒁𑒕𑒱
𑒥𑒢𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒢𑒹 𑒄 𑒏𑒰𑒢𑒴𑒢 𑒮𑒥𑒏𑒹𑒿 𑒞𑒼𑒛𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒯𑒧 𑒢𑒰𑒩𑒲 𑒮𑓀𑒑𑒚𑒢
𑒥𑒢𑒾𑒢𑒹 𑒕𑒲 𑒮𑒛𑒪-𑒑𑒪𑒪 𑒏𑒰𑒢𑒴𑒢 𑒮𑒥𑒏𑒹𑒿 𑒯𑒙𑒥𑒻। 𑒁𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒢 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩
𑒮𑓂𑒫𑒞𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩𑒞𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒪𑒛𑒰𑒃 𑒪𑒛𑒥।"
𑒥𑒳𑒡𑒢𑒏 𑒧𑒰𑒨 𑒮𑒫𑒰𑒠 𑒏𑒯𑒪𑒏, 𑒮𑓂𑒫𑒨𑓀 𑒮𑒯𑒰𑒨𑒞𑒰 𑒮𑒧𑒴𑒯𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒢𑒰 𑒏S
𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒑𑒝 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒥𑒻𑒮𑒰𑒩 𑒏𑒋𑒪𑒏। 𑒮𑒦 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒑𑒝 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒧 𑒠𑒳𑒐-
𑒮𑒳𑒐𑒏𑒹𑒿 𑒔𑒩𑓂𑒔𑒰 𑒏𑒩𑒋...।
𑒥𑒳𑒡𑒢𑒲 𑒥𑒰𑒖𑒪-
"𑒯𑒧 𑒥𑒢𑓂𑒡𑒏𑒪𑒰 𑒢𑒰𑒧, 𑒮𑒥𑒮𑒿 𑒏𑒞𑒾𑒿 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒑𑒝 𑒥𑒰𑒏𑓀𑒨𑒞𑒰 𑒏𑒩𑒞 𑒮
𑒮𑒧𑒰𑒢 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒥𑒢𑒰𑒥𑒋 𑒢𑒰𑒮𑒢 𑒕𑒻, 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒑𑒝𑒏 𑒥𑒢𑒰𑒥𑒋
𑒢𑒰𑒮𑒢 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒞-𑒣𑒟𑓂𑒨 𑒁𑒪𑒑-𑒁𑒪𑒑 𑒕𑒻 𑒮 𑒏𑒯𑒰 𑒯𑒨𑒞𑒰।
𑒥𑒢𑓂𑒡𑒏𑒪𑒰 𑒖𑒢𑒧 𑒠𑒻𑒞 𑒏𑒯𑒨 𑒪𑒑𑒪𑒲 𑒞𑒲𑒏 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒑𑒝𑒏 𑒖𑒳𑒮𑓂𑒮𑒢 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒑𑒝𑒼
𑒢𑒰𑒕𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒥𑒰𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩𑒥𑒰 𑒏𑒪𑒏 𑒯𑒢𑒰। 𑒖𑒯𑒱𑒨
𑒥𑒢𑒲 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒪𑒹𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒯𑒱𑒨𑒧𑒹𑒿 𑒂𑒥𑒏𑒰 𑒯𑒨 𑒠𑒴𑒮𑓂𑒩𑒰𑒧𑒹𑒿 𑒠𑒹𑒥𑒪 𑒖𑒰𑒕
𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒻𑒪 𑒞𑒿 𑒦𑒑𑒫𑒞𑒲𑒏𑒹𑒿, 𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒲𑒏𑒹𑒿, 𑒏𑒰𑒪𑒲𑒏𑒹𑒿, 𑒮𑒩𑒮𑓂𑒫𑒞𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒢𑓂𑒧
𑒞𑒪 𑒯𑒢 𑒣𑒳𑒖𑒰 𑒥𑒩𑒠𑒰𑒩 𑒏𑒯𑒢 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒮 𑒞𑒿 𑒮𑒥𑒯𑒏
𑒢𑒙𑒥𑒩𑒨𑒩 𑒁𑒯𑒰।"
𑒏𑒢𑒲 𑒧𑒰𑒨𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒥𑒳𑒡𑒢𑒲 𑒏𑒯𑒪𑒏-

"𑒯𑒹 𑒢𑒰𑒟, 𑒪𑒼𑒏 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒪। 𑒂𑒥 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒏𑒪𑒰 𑒏𑒯𑒉 𑒪𑒑𑒪𑒲 𑒞𑒳𑒿 𑒋 𑒏𑒯𑒪𑒯𑒏 𑒮 𑒞𑒿 𑒪𑒼𑒏 𑒕𑒾, 𑒮𑒢𑓂𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒋𑒕𑒢 𑒋 𑒮𑒦𑒮 𑒯𑒨𑒰𑒞 𑒞𑒯𑒢 𑒥𑒥𑒯𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒥𑒯𑒻 𑒕𑒪। 𑒠𑒳𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒏𑒞𑒨-𑒮𑒿-𑒏𑒞𑒨 𑒖𑒰𑒑𑒪 𑒋 𑒥𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒫𑒰 𑒯𑒧 𑒮𑒦 𑒕𑒥 𑒑𑒰𑒿𑒑𑒧𑒿 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒠𑒳𑒢𑒱-𑒠𑒱𑒢𑒥𑒰𑒩𑒧 𑒂𑒧𑒢𑒰𑒑𑒪 𑒥𑒯𑒲। 𑒏𑒞𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒞𑒏 𑒏𑒹𑒪𑓂𑒯𑒳𑒏 𑒥𑒥𑒠 𑒋𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒹𑒪𑓂𑒯𑒳𑒧 𑒕𑒳𑒢𑒻𑒞 𑒥𑒯𑒪।

"𑒞𑒯𑒢 𑒏𑒯𑒯 𑒋 𑒏𑒼𑒢 𑒞𑒥𑒯𑓀 𑒂𑒧𑒢𑒼𑒪𑒯𑒰 𑒏𑒢𑒴𑒢 𑒮𑒦 𑒮𑒿 𑒂𑒑𑒰𑒿 𑒋𑒑𑒪 𑒋𑒑𑒞𑒰" -𑒥𑒳𑒡𑒢𑒲 𑒥𑒰𑒖𑒪।

𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒏𑒪𑒰 𑒏𑒯𑒻 𑒪𑒑𑒪𑒲-

𑒥𑒱𑒢𑒳 𑒣𑒰𑒖𑒪 𑒋𑒞𑒻, 𑒥𑒱𑒢𑒳 𑒋𑒖𑒪 𑒋𑒞𑒻, 𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒑𑒰𑒧 𑒢𑒱𑒦𑒰𑒢𑒲𑒨𑒰 𑒯𑒨𑒰𑒞, 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒥𑒥𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒞𑒿 𑒠𑒳𑒢𑒴 (𑒧𑒚 𑒫𑒰 𑒬𑒼𑒥𑒞) 𑒧𑒱𑒪𑒱𑒨 𑒏𑓄 𑒢 𑒮𑒳𑒑𑒰𑒏 𑒏𑒨𑒮𑒿 𑒔𑒪𑒻𑒞। 𑒑𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒨𑒯𑒱𑒧𑒰 𑒢𑒻 𑒥𑒯𑒢 𑒑𑒰𑒖𑒲 𑒏𑒢𑒰 𑒮𑒮𑒥𑒞। 𑒕𑒹𑒞𑒮𑒿 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒕𑒥𑒱𑒯𑒰𑒿𑒢, 𑒕𑒥-𑒕𑒥𑒮𑒿 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒯𑒪𑒰𑒢 𑒞𑒏 𑒮𑒦 𑒏𑒰𑒖𑒮 𑒖𑒰𑒡 𑒥𑒿𑒙𑒰𑒥𑒨 𑒣𑒛𑒞।

𑒮𑒳𑒬𑒲𑒪𑒰 𑒥𑒰𑒪𑒲 𑒥𑒖𑒪𑒲-

"𑒢𑒲𑒏 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒁𑒕𑒱, 𑒯𑒧 𑒮𑒦 𑒮𑓀𑒑 𑒠𑒹𑒥।"

𑒏𑒯𑒪𑒢𑒯 𑒥𑒰𑒪𑒲 𑒮𑒦 𑒯𑒿 𑒮 𑒯𑒿 𑒧𑒱𑒪𑒰 𑒠𑒹𑒪𑒏।

𑒨𑒠𑒳𑒠 𑒕𑒼𑒙𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒦𑒠 𑒥𑒢𑒱 𑒕𑒪। 𑒁𑒬𑓂𑒫𑒏 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒏𑒪𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒥-𑒮𑒬𑒾𑒞𑒮𑒿 𑒠𑒳𑒢𑒱 𑒪𑒪𑒏। 𑒮𑒦𑒨 𑒥𑒲𑒞𑒻𑒞 𑒕𑒪, 𑒑𑒰𑒏 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒥𑒻𑒮𑒰𑒩𑒧 𑒥𑒱𑒂𑒯𑒏 𑒨𑒖-𑒥𑒖 𑒔𑒪𑒪। 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩𑒏𑒪𑒰 𑒅𑒚𑒱 𑒏𑓄 𑒏𑒯𑒻 𑒪𑒑𑒪𑒲-

"𑒮𑒳𑒢𑒻 𑒋𑒕, 𑒏𑒰𑒪𑓂𑒯𑒱 𑒯𑒧 𑒑𑒰𑒿𑒑 𑒥𑒢𑒱 𑒏𑓄 𑒑𑒰𑒏𑒢𑒰 𑒏𑒰𑒕 𑒏𑒥𑒥 𑒞𑒯𑒮 𑒮𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒮𑓀𑒑 𑒯𑒥𑒰𑒏 𑒕𑒪। 𑒢𑒙-𑒂𑒧 𑒫𑒰 𑒛𑒢𑓂𑒏𑒰𑒞 𑒕𑒥𑒱𑒯𑒪 𑒢𑒻 𑒋𑒕 𑒕𑒪। 𑒨𑒰𑒢𑒱, 𑒁𑒢𑒰𑒕 𑒫𑒰 𑒋𑒪𑒧 𑒯𑒥𑒲𑒯 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱।"

𑒪𑒰𑒪𑒏𑒰𑒧 𑒥𑒖𑒪𑒲-

"𑒏𑒼𑒢 𑒏𑒰𑒖 𑒕𑒪𑒱 𑒏𑒯𑒴𑒿 𑒢𑒰।"

"𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒍 𑒏𑒱𑒮𑒰𑒢 𑒧𑒖𑒠𑒴𑒩𑒏 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒏 𑒔𑒰𑒏𑒩𑒲 𑒮𑓀𑒑 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢𑒏 𑒠𑒪 𑒛𑒰𑒿𑒑 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒕𑒪𑓂𑒯𑒰 𑒔𑒰𑒏𑒩 𑒮𑓀𑒑 𑒥𑒅𑒂𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒱𑒂𑒯 𑒏𑒩𑒥 𑒮𑒹 𑒏𑒲 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩𑒥।" 𑒥𑒯𑒳𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒲।

𑒁𑒕𑒻𑒢 𑒞𑒏 𑒞𑒳𑒩 𑒕𑒪𑒲 𑒖𑒧𑒪𑒲 𑒞𑒰𑒨, 𑒍𑒞𑒱 𑒏𑓄 𑒥𑒖𑒪𑒲-

𑒢𑒲𑒏 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩𑒱 𑒕𑒪𑒱 𑒠𑒮 𑒖𑒰 𑒥𑒱𑒩𑒪𑒲 (𑒍 𑒧𑒖𑒰𑒧𑒰𑒪 𑒕𑒪) 𑒮𑒞 𑒮𑓀𑒑 𑒠𑒥।

𑒥𑒳𑒡𑒢𑒲 𑒥𑒰𑒖𑒪-

𑒢𑒹𑒞𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒼𑒢 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢𑒏 𑒛𑒰𑒿𑒑 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒕𑒻 𑒮𑒹 𑒞𑒿 𑒥𑒳𑒗𑒪 𑒢 𑒕𑒪𑒱 𑒖𑒰 𑒖𑒰 𑒏𑒼𑒢 𑒖𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒕𑒪𑒱। 𑒥𑒯𑒳𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒲-

𑒢𑒴𑒞𑒏 𑒥𑒖𑓂𑒖𑒰 𑒏𑒩𑒥 𑒞𑒿 𑒢𑒴𑒞 𑒢 𑒡𑒩𑒞। 𑒥𑒞𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒰𑒫𑒥 𑒞𑒕𑒻𑒢 𑒢 𑒢𑒫𑒱𑒕𑓂𑒕𑒰 𑒥𑒩𑒞। 𑒮𑒞𑓂𑒞 𑒍𑒿 𑒥𑒱𑒡𑒳𑒫 𑒢𑒰𑒕𑒞 𑒕𑒪𑒱 𑒞𑒿 𑒏𑒱𑒮𑒰𑒢𑒏 𑒢 𑒥𑒱𑒡𑒫 𑒍𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒧𑒨𑒰 𑒥𑒱𑒞𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒱। 𑒁𑒠𑒻𑒢 𑒮𑒞𑓂𑒞𑒏 𑒥𑒖𑓂𑒖𑒫 𑒕𑒪𑒹, 𑒍𑒢𑒰-𑒍𑒢𑒰 𑒮𑒢 𑒞𑒪𑒹 𑒞𑒢𑒰-𑒞𑒢𑒰 𑒏𑒢𑒴𑒢 𑒏𑒻𑒢𑒰 𑒥𑒢𑒥𑒻𑒞 𑒥𑒼𑒪𑒰। 𑒠𑒹 𑒢𑒰𑒨 𑒮𑒞 𑒍𑒿 𑒔𑒾𑒥𑒞𑒏𑒹𑒿 𑒡𑒳𑒧𑒥 𑒥𑒲𑒖𑒰𑒪𑒰 𑒢𑒻 𑒏𑒩𑒥𑓄 𑒣𑒛𑓃𑒻 𑒞𑒿 𑒧𑒏𑒰𑒪𑒰 𑒏𑒰𑒖 𑒡𑒥𑒞𑒲𑒧𑒹𑒿 𑒁𑒏𑒰𑒧 𑒞𑒏𑒰𑒧 𑒢𑒻 𑒕𑒪𑒱 𑒍 𑒮𑒠𑒱𑒪𑒰 𑒢𑒻 𑒏𑓄 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒱। 𑒁𑒣𑒢 𑒥𑒱𑒏𑒰𑒮𑒏 𑒪𑒪 𑒁𑒣𑒢 𑒔𑒰𑒑𑒴 𑒥𑒞𑒰𑒨 𑒣𑒛𑓃𑒞𑒰। 𑒑𑒨-𑒮𑒔𑓂𑒔𑒧𑒹𑒿 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒻 𑒢𑒰𑒕 𑒕𑒻। 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒼𑒢 𑒑𑒳𑒞-𑒁𑒥𑒑𑒳𑒞 𑒥𑒳𑒗𑒥𑒠𑒏। 𑒍𑒞𑒱 𑒞𑒿 𑒠𑒴𑒕𑒰𑒪𑒰 𑒕𑒻 𑒮𑒞𑓂𑒞 𑒖𑒰 𑒔𑒾𑒥𑒞। 𑒔𑒾𑒥 𑒮𑒞 𑒞𑒿 𑒥𑒢𑒾𑒞𑒰 𑒕𑒱𑒥𑒹। 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒥𑒮 𑒠𑒳𑒕𑒹 𑒕𑒠 𑒞𑒿 𑒏𑒠𑒹 𑒕𑒱𑒮𑒰। 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒥 𑒖𑒰 𑒥𑒮𑒴𑒢 𑒥𑒰𑒏 𑒕𑒴𑒪𑒧𑒹𑒿 𑒧𑒱𑒛𑒱𑒪 𑒖𑒰 𑒍𑒕 𑒥𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨𑒧 𑒣𑒜𑓃𑒻 𑒕𑒪𑒰। 𑒥𑒮𑒳𑒢 11𑒧𑒲 𑒞𑒏 𑒣𑒜𑓃𑒰𑒪𑒏 𑒖𑒰 𑒢𑒹𑒞𑒰𑒥 𑒏𑒻𑒪𑒖 𑒞𑒏 𑒣𑒜𑓃𑒰𑒪𑒏 (𑒥𑒲𑒂𑓄) 𑒮𑒳𑒢𑒰 𑒥𑒮𑒳𑒢𑒏 𑒥𑒱𑒂𑒠𑒏

𑒏𑒋𑒪𑒾𑓀 11𑒧𑒲 𑒣𑒰𑒮 𑒏𑒋𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒍 𑒣𑒙𑒢𑒰 𑒔𑒪𑒪𑒰। 𑒯𑒼𑒋𑒥𑒰𑒏𑒿 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒦𑒹𑒪𑒻 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒍 𑒣𑒛𑒼𑒮 𑒣𑒢𑓂𑒢𑒰𑒑𑒩 𑒕𑒪 𑒣𑒛𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒰। 𑒂𑒃𑒡𑒩𑒱 𑒮𑓀𑒑𑒹 𑒦𑒹𑒪𑒻 𑒏𑒳 𑒖𑒳 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒮𑒰𑒮𑒳𑒩 𑒑𑒪𑒈। 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒖𑒲𑒧 𑒣𑒼𑒙𑒰𑒢𑒰 𑒕𑒩 𑒞𑒿 𑒕𑒹𑒪𑒻 𑒢𑒯𑒱, 𑒥𑒰𑒠𑒩-𑒢𑒲𑒞𑒩 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒥𑒰𑒗𑒲 𑒠𑒱𑒮 𑒡𑒹𑒪𑒹, 𑒏𑒢𑒰 𑒫𑒱𑒣𑒡𑒩 𑒧𑒰𑒿𑒨 𑒏𑒰𑒙𑒱 𑒪𑒪𑒏, 𑒥𑒖𑒰𑒥𑒲𑒏𑒿 𑒏𑒞𑒢𑒰 𑒣𑒰𑒖- 𑒣𑒴𑒖𑒏 𑒦𑒹𑒪𑒹, 𑒮𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒖𑒏𑒿 𑒣𑒯𑒱𑒢 𑒮𑒿𑒣𑒏𑒳𑒢𑒲𑒏 𑒩𑒥𑒰𑒕 𑒮𑒦 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒞𑒰𑒪𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒕 𑒕𑒪 𑒞𑒿𑒑 𑒥𑒖𑒰𑒥𑒲 𑒮𑒥𑒱 𑒡𑒪𑒈। 𑒮 𑒞𑒿 𑒥𑒖 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒩 𑒦𑒹𑒪𑒹 𑒕𑒰𑒏𑒢𑒰 𑒮𑓀𑒑𑒹। 𑒥𑒳𑒡𑒢𑒲 𑒥𑒖𑒪𑒲-

"𑒯𑒧 𑒯𑒹𑒯𑒩 𑒂 𑒕𑒰𑒏𑒢𑒰 𑒥𑒰𑒥𑒴𑒮𑒿 𑒫𑒱𑒖𑒰𑒩-𑒫𑒱𑒧𑒩𑓂𑒬 𑒏𑒪𑒾𑓀 𑒯𑒢𑒰। 𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒠𑒰𑒢-𑒠𑒯𑒖𑒏𑒿 𑒮𑒰𑒠𑒰 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒏𑒩𑒥𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒞𑒻𑒨𑒰𑒩 𑒕𑒟𑒱। 𑒞𑒿 𑒞𑒴𑒿 𑒮𑒦 𑒮𑓀𑒑 𑒩𑒖𑒰𑒯 𑒞𑒿 𑒯𑒧 𑒫𑒱𑒡𑒫𑒰 𑒣𑒴𑒖𑒰𑒏𑒿 𑒢𑒰𑒖 𑒩𑒥𑒈।"

𑒮𑒦 𑒫𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒧𑒩𑓂𑒟𑒢 𑒠ऽ 𑒩𑒯𑒪𑒻। 𑒂 𑒏𑒰𑒪𑒱𑒨 𑒢𑒧 𑒥𑒖𑒏 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒮𑒧𑒨 𑒥𑒢𑒱 𑒡𑒪𑒈। 𑒥𑒳𑒡𑒢𑒲 𑒥𑒖𑒪𑒲-

𑒖𑒿 𑒮𑒔 𑒮𑒦 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒏𑒩𑒞 𑒞𑒐𑒢। 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒣𑒲𑒏𑒢𑒰𑒥𑒲 𑒞𑒰𑒩 𑒕𑒲, 𑒏𑒰𑒪𑒱 𑒖 𑒯𑒞𑒹 𑒮 𑒩𑒯𑒹𑒪 𑒖𑒞𑒈। 𑒥𑒳𑒩𑒥𑒰 𑒯𑒢𑒰 𑒥𑒢𑓀 𑒏𑒲 𑒣𑒛𑒱𑒨𑒰। 𑒖𑒯𑒹𑒩𑒧 𑒧𑒳𑒗𑒲 𑒩𑒪𑒾𑓀 𑒞𑒿 𑒧𑒳𑒮𑒧𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒢 𑒖𑒥। 𑒩𑒯𑒹𑒪 𑒖𑒞𑒹 𑒣𑒳𑒩𑒏𑒪𑒰। 𑒥𑒖𑒪𑒲-

𑒣𑒲𑒏 𑒕𑒲 𑒥𑒳𑒡𑒢𑒲 𑒥𑒖𑒪𑒲-

𑒫𑒱𑒯𑒰𑒢 𑒦𑒢 𑒑𑒲𑒞-𑒢𑒰𑒠𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒥𑒩𑒳𑒢 𑒂 𑒯𑒹𑒧𑒥𑒏 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩𑒧 𑒥𑒳𑒡𑒢𑒲 𑒂 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒑𑒝𑒏 𑒮𑒧𑒏𑓂𑒭 𑒖𑒨𑒧𑒰𑒪𑒰 𑒂 𑒧𑓀𑒑𑒪𑒰𑒔𑒰𑒩𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢 𑒦𑒹𑒪। 𑒥𑒳𑒡𑒢𑒲 𑒂 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒑𑒝 𑒮𑒦 𑒏𑒵𑒞𑒰𑒩𑓂𑒟 𑒩𑒯𑒪𑒏।

𑒥𑒩𑒳𑒢 𑒂 𑒯𑒹𑒧𑒥𑒏𑒿 𑒣𑒱𑒨𑒩 𑒥𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩 𑒣𑒯𑒱𑒩𑒪 𑒂 𑒑𑒩𑒠𑒢𑒱𑒧 𑒣𑒴𑒪𑒏 𑒧𑒰𑒪𑒰

[illegible]

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒢𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।

𑓑.𑓖.[illegible] 𑓖 𑒙𑒰 𑒏𑒟𑒰- 𑒏𑒟𑒰-𑓖 [illegible]

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒏 𑒪𑒹𑒐𑒏𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒱𑒪𑒱𑒞 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒂 𑒮𑒰𑒏𑓂𑒭𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒱𑒪𑒱𑒞 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰𑒏 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒮𑒲𑒩𑒲𑒖 𑒧 𑒮𑓀𑒏𑒪𑒢 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰𑒿 𑒣𑒜𑓃𑒪𑒾-

𑓑 𑒏𑒰𑒧𑒱𑒢𑒲𑒏 𑒨𑒰𑓀𑒞 𑒮𑒢 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒂 𑒮𑒰𑒏𑓂𑒭𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒧𑒡𑒳𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒗𑒰𑒏 𑒪𑒱𑓀𑒏𑒣𑒩

Videha_01_09_2016

𑓒. 𑒖𑒑𑒠𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒗𑒰 "𑒧𑒢𑒳"𑒏 "𑒧𑒰𑒢𑒱𑒏 𑒫𑒰𑒧𑒢"𑒣𑒩 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩𑒏 𑒪𑒱𑓀𑒏𑒣𑒩

VIDEHA_353

𑓓. 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒏𑒰𑒧𑒞𑒏 𑒥𑒰𑒪𑒏𑒟𑒰 "𑒖𑒱𑒢𑒑𑒲𑒏 𑒧𑒰𑒪" 𑒂 𑒮𑒰𑒏𑓂𑒭𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩𑒏 𑒪𑒱𑓀𑒏𑒣𑒩

VIDEHA_354

𑒃 𑒑𑒳𑓀𑒖𑒢𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒖𑒰𑒿 𑒮𑒧𑒰𑒢𑒰𑒢𑓂𑒞𑒩 𑒡𑒰𑒩𑒰𑒏 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒦𑒳 𑒑𑒰𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒏𑒻𑒮𑒰𑒏𑒩𑒧𑒿 𑒠𑒳𑒢𑒏 𑒢𑒖𑒱𑒣𑒧 𑒠𑒳𑒢𑒏𑒰𑒩 𑒮𑒧𑒨 𑒮𑒧𑒩𑒹𑒮 𑓕-𑓖 𑒮𑒢 𑒏𑒻𑒮𑒰 𑒮𑒧𑓂𑒧𑒱𑒪𑒱𑒞 𑒏𑒨𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒓𑓂𑒏𑒰। 𑒏𑒻𑒮𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒪𑒰𑒏𑒰𑒢 𑒢𑒱𑒧𑓂𑒢𑓁-

𑓑 𑒏𑒣𑒱𑒪𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒩𑒰𑒇𑒞

𑓒.𑒅𑒧𑒹𑒬 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪

𑓓.𑒩𑒰𑒧 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮 𑒮𑒰𑒯𑒳

𑓔.𑒩𑒰𑒖𑒠𑒹𑒫 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪

𑓕.𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮 𑒩𑒰𑒨

𑓖.𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪

𑓗.𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪

𑓘.𑒩𑒰𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪

𑒄 𑒮𑓀𑒏𑒪𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒏𑒣𑒱𑒪𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒩𑒰𑒅𑒞𑒏 𑓕 𑒙𑒰 𑒏𑒟𑒰, 𑒅𑒞𑓂𑒏𑒵𑒭𑓂𑒙𑒞𑒩 𑒠𑒧𑒩 𑒮𑒧𑒲𑒏𑓂𑒭 𑒮𑓀𑒠𑒩𑓂𑒦𑒲𑒨 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏𑒲𑒨 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒣𑒩 𑒁𑒕𑒱।- 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏

𑒏𑒣𑒱𑒪𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒩𑒰𑒅𑒞 𑒏𑒹𑒩 𑒣𑒰𑒿𑒔𑒙𑒰 𑒏𑒟𑒰

𑒏𑒟𑒰 𑓕

𑒢𑒳𑒧𑒠𑒳𑒩 𑒧𑒰𑒟𑒱

𑒥𑒱𑒥𑒏 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒬𑒩𑓂𑒧𑒫𑒰𑒩 𑒣𑒯𑒱𑒩 𑒥𑒠𑒪 𑒯𑒪𑒰। 𑒮𑒧𑒨 𑒏𑒩𑒲𑒥 𑓗 𑒥𑒩𑒐𑒏 𑒯𑒪𑒯𑓂𑒢। 𑒞𑒯𑒱𑒢 𑒖𑒞𑒢 𑒥𑒰𑒣 𑒙𑒠𑒪𑒹𑒞 𑒣𑒠𑒳𑒿𑒖𑒪। 𑒖𑒞𑒢 𑒥𑒰𑒣 𑒛𑒰𑒞𑒏 𑒮𑒳𑒮𑒠𑒩। 𑒣𑒯𑒱𑒢 𑒥𑒰𑒣-𑒥𑒰𑒢𑒮 𑒥𑒠𑒪𑒰𑒢𑒱 𑒬𑒰 𑒥𑒰𑒢𑒏𑒢-𑒥𑒳𑒢𑒰 𑒏𑒄 𑒏𑒄 𑒑𑒴𑒛𑒩 𑒏𑒻 𑒯𑒪𑒰। 𑒞𑒰𑒪𑒮 𑒏𑒱𑒨𑒰𑒙 𑒏𑒳𑒪𑒏 𑒣𑒰𑒏𑒙𑒰 𑒥𑒢𑒰𑒛𑒲𑒮𑒿 𑒮𑒲𑒠 𑒞𑒪, 𑒥𑒢𑒰𑒛𑒲 𑒞𑒪𑒰। 𑒥𑒢𑒰𑒛𑒲 𑒞𑒪𑒰 𑒣𑒯𑒰𑒢𑒏𑒞 𑒏𑒠𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒪 𑒙𑒪𑒰 𑒣𑒳𑒩𑒱 𑒪𑒹𑒞 𑒁𑒕𑒱।

𑒬𑒠𑒰𑒙 𑒧𑒰𑒮𑒏 𑒮𑒧𑒨, 𑒮𑒢𑒮 𑒖𑒞𑒢 𑒥𑒰𑒮𑒏𑒿 𑒣𑒰𑒪𑒹 𑒛𑒏 𑒥𑒢𑒰𑒛𑒲 𑒞𑒿 𑒥𑒢𑒪𑒾 𑒮𑒳𑒙𑒰 𑒏𑒠𑒱𑒨𑒰 𑒙𑒮 𑒮𑒳𑒞𑒏 𑒞𑒢𑒛𑒰𑒥𑒰 𑒢𑒏𑓂𑒭 𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒏𑒪𑒾। 𑒮 𑒢𑒠𑒱 𑒞𑒿 𑒬𑒠𑒲 𑒬𑒰𑒮𑒏 𑒮𑒮𑒨𑒮 𑒏𑒱𑒨 𑒢 𑒙𑒮-𑒥𑒲𑒮 𑒮𑒳𑒞𑒏 𑒞𑒢𑒛𑒰𑒥𑒰 𑒏𑒄 𑒪𑒲। 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒩 𑒣𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒞𑒄 𑒑𑒹𑒪।

𑒠𑒮-𑒣𑒢𑒩𑒯 𑒏𑒱𑒪𑒼 𑒔𑒴𑒛𑓃𑒰 𑒮𑒰𑒟 𑒩𑒐𑒪𑒢𑒱, 25 𑒏𑒱𑒪𑒼 𑒠𑒴𑒡𑒏 𑒠𑒯𑒲 𑒣𑒾𑒩𑒪𑒢𑒱। 𑒮𑒰𑒞 𑒏𑒱𑒪𑒼 𑒔𑒲𑒢𑒲 𑒂 𑒠𑒴 𑒮𑒹𑒩 𑒧𑒐𑒰𑒢𑒰 𑒐𑒰𑒮 𑒩𑒐𑒪𑒢𑒱। 𑒂 𑒑𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒔𑒪𑒪𑒰 𑒥𑒳𑒡 𑒠𑒱𑒢 𑒦𑒼𑒩𑒯𑒰 𑒢𑒢𑓂𑒠𑒰𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒑𑒳𑒩𑒳 𑒧𑒯𑒩𑒰𑒖𑒖𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒠𑓄 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒻। 𑒔𑒰𑒪𑒲𑒮 𑒠𑒱𑒢, 𑒥𑒳𑒡 𑒠𑒱𑒢 𑒕𑒪𑒻, 𑒢𑒢𑓂𑒠𑒰𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒏𑒳𑓀𑒦 𑒮𑓂𑒢𑒰𑒢 𑒕𑒪𑒰।

𑒥𑒳𑒡 𑒠𑒱𑒢 𑒢𑒰𑒫 𑒮𑓀𑒑𑒧𑒣𑒳𑒩𑒏 𑒞𑒙𑒮𑒿 𑒔𑒪𑒪𑒴 𑒂 𑒥𑒖𑒰𑒩 𑒂 𑒬𑒯𑒩𑒏 𑒧𑒮𑒰𑒪𑒰 𑒃𑒞𑓂𑒨𑒰𑒠𑒱 𑒐𑒩𑒲𑒠 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏𑒿 𑒏𑒩𑒪𑒢𑒱। 𑒠𑒮-𑒠𑒮𑒙𑒰 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒏𑒿 𑒠𑒪 𑒠𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒕𑒪𑒻 𑒞𑒿𑒨 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒠𑒏𑓂𑒭𑒱𑒝 𑒩𑒞𑒢𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒮𑒯𑒩 𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒢𑒪𑒰। 𑒠𑒪 𑒠𑒻𑒞-𑒠𑒻𑒞 𑒧𑒯𑒢𑓂𑒟 𑒥𑒰𑒥𑒰𑒏 𑒂𑒬𑓂𑒩𑒧 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪𑒰। 𑒧𑒯𑒢𑓂𑒟 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒮𑓂𑒫𑒑𑒢 𑒕𑒪𑒰। 𑒞𑒰𑒏 𑒠𑒪𑒰𑒯𑒱𑒢𑒰। 𑒧𑒯𑒢𑓂𑒟 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒮𑒿𑒑𑒢𑒧 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒰𑒪 𑒥𑒻𑒮𑒪 𑒕𑒪𑒰। 𑒞𑒐𑒢 𑒮𑒥𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒢𑒹𑒢𑒰। 𑒪𑒑𑒦𑒑 𑒠𑒮𑒥𑒏𑒰𑒩𑒮𑒥 𑒂𑒠𑒱 𑒩𑒞𑒢 𑒥𑒰𑒥𑒰𑒏𑒿 𑒔𑒼𑒏𑒲𑒩𑒥 𑒥𑒻𑒮𑒪 𑒂𑒣𑒠 𑒏𑒪𑒰𑒯𑒱𑒢𑒰। 𑒫𑒳𑒢𑒴 𑒓𑒼𑒩 𑒔𑒼𑒏𑒲𑒩𑒥 𑒥𑒻𑒮𑒪𑒰।

𑒧𑒯𑒢𑓂𑒟 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒳𑒕𑒪𑒏𑒻𑒢-

"𑒏𑒲 𑒥𑒰𑒞, 𑒏𑒮𑒯𑒩 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒕𑒢?"

𑒩𑒞𑒢 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒰- "𑒮𑒥𑒢𑒏 𑒂𑒬𑓂𑒩𑒧 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰। 𑒮𑒰𑒟𑒱 𑒑𑒳𑒞𑒏 𑒢𑒢𑓂𑒠𑒰𑒥𑒰 𑒏𑒹𑒥𑒏 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒢𑒪 𑒕𑒢 𑒧 𑒮𑒥𑒢𑒏𑒿 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒠𑒏𑓂𑒭𑒱𑒝 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒕𑒢 𑒂 𑒠 𑒮𑒥𑒢 𑒞𑒿 𑒢𑒖𑒢-𑒢𑒰𑒫 𑒧𑒠𑒰 𑒏𑒹𑒥 𑒕𑒲 𑒧 𑒠𑒴-𑒔𑒰𑒩𑒱𑒙𑒰 𑒢𑒖𑒢 𑒧𑒠𑒰 𑒕𑒞𑒹, 𑒞𑒿𑒨 𑒠𑒮 𑒥𑒖 𑒞𑒏 𑒂𑒠𑒱 𑒖𑒥𑒰𑒥𑒢𑒢𑓂𑒠𑒰𑒥𑒰 𑒔𑒰𑒠𑒱 𑒥𑒖 𑒮𑒰𑒿𑒛𑓃𑒧 𑒕𑒞𑒏𑓂𑒭।"

𑒧𑒯𑒢𑓂𑒟 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒔𑒲𑒏 𑒕𑒻 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒞𑒿 𑒪𑓄 𑒪𑒏𑓂𑒭 𑒕𑒲, 𑒑𑒳𑒢𑒰 𑒨𑒰𑒏𑒙𑒰 𑒥𑒰𑒞 𑒏𑒯𑒴- 𑒢𑒢𑓂𑒠𑒰𑒥𑒰 𑒏𑒞𑒨 𑒕𑒞𑒏𑓂𑒭?"

𑒨𑒞𑒢 𑒠𑒰𑒮 𑒏𑒯𑒪𑒐𑒱𑒢-

"𑒏𑒞𑒨 𑒕𑒲, 𑒁𑒐𑒢 𑒑𑒰𑒧𑒫𑒰𑒪𑒲 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒂𑒑𑒰𑒿𑒮 𑒮𑒥𑒏𑒢𑒲 𑒥𑒯𑒳𑒞𑒩𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒂𑒞𑒹 𑒕𑒞𑒹 𑒁𑒼𑒩 𑒏𑒞𑒨 𑒕𑒞𑒏𑓂𑒭𑒰।"

"𑒞𑒐𑒢 𑒯𑒧 𑒏𑒪 𑒢𑒻 𑒧𑒰𑒢𑒥, 𑒅𑒿 𑒥𑒖𑒩𑓀𑒑𑒥𑒪𑒲 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒮 𑒢𑒧𑓂𑒞𑒰𑒥𑒰 𑒏𑒩𑒹𑒏 𑒅𑓀𑒖𑒮 𑒏𑒩𑒥 𑒞𑒿 𑒏𑒪 𑒪𑒥, 𑒞𑒐𑒢 𑒮𑒰𑒑 𑒥𑒢𑒰𑒢𑒱𑒯𑒰𑒩 𑒏𑒱𑒨𑒰 𑒨𑒰𑒢𑒱𑒥𑒢𑓂𑒯𑒰 𑒯𑒞𑒰 𑒞𑒐𑒢।"

𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒑𑒖𑒥 𑒠𑒰𑒮 𑒮𑒳𑒣𑒰𑒩𑒲 𑒑𑒰𑒕𑒮 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒨𑒞𑒢 𑒠𑒰𑒮𑒏𑒹𑒿 𑒯𑒰𑒐𑒧 𑒠𑓄 𑒠𑒹𑒪𑒐𑒱𑒢।

𑒨𑒞𑒢 𑒠𑒰𑒮 𑒥𑒰𑒙 𑒞𑓄 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒰𑒖𑒪𑒰। 𑒔𑒰𑒯 𑒔𑒾𑒏𑒲𑒣𑒩 𑒮𑒿 𑒅𑒚𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒂 𑒥𑒱𑒠𑒰 𑒦𓄄 𑒑𑒹𑒪𑒰।

𑒥𑒱𑒥𑒹𑒏 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒏 𑒒𑒩 𑒪𑒑 𑒠𑓄 𑒏𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪 𑒏𑒱 𑒥𑒱𑒥𑒹𑒏 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒣𑒩 𑒢𑒖𑒩𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒻। 𑒏𑒳𑒬𑒪-𑒮𑒧𑒰𑒔𑒰𑒩𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒥𑒱𑒥𑒹𑒏 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒪𑒑 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪𑒰।

𑒢𑒧𑒮𑓂𑒏𑒰𑒩-𑒣𑒰𑒞𑒲 𑒦𑒹𑒪𑒰 𑒥𑒰𑒠 𑒥𑒱𑒥𑒹𑒏 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒁𑒐𑒢 𑒔𑒾𑒏𑒲𑒣𑒩 𑒥𑒻𑒮𑒏 𑒂𑒑𑒯 𑒏𑒩𑒪𑒐𑒱𑒢। 𑒨𑒞𑒢 𑒠𑒰𑒮 𑒔𑒾𑒏𑒲𑒣𑒩 𑒥𑒻𑒮 𑒑𑒹𑒪𑒰। 𑒥𑒱𑒥𑒹𑒏 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒁𑒯𑒢𑒰𑒩 𑒢𑒰𑒯𑒱 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒐𑒱𑒢-

"𑒏𑒧𑒯𑒩 𑒖𑒰𑒪𑒱𑒑 𑒯𑒢, 𑒮𑒿𑒯 𑒮𑒳𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱?"

𑒨𑒞𑒢 𑒠𑒰𑒮 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒏𑒲 𑒏𑒯𑒲 𑒞𑒰𑒏𑓂𑒭 𑒧𑒰𑒯𑒹𑒥। 𑒢𑒧𑓂𑒞𑒰𑒥𑒰 𑒏𑒩𑒹𑒏 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒞𑒪 𑒮 𑒧𑒰𑒚𑒱 𑒮𑒳𑒞𑒏 𑒏𑒪 𑒏𑒪𑒱𑒑 𑒂 𑒢𑒖𑒰𑒢𑒱𑒨ॉ 𑒮𑒳𑒞 𑒑𑒖𑒥 𑒠𑒰𑒮𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒪 𑒯𑒏𑓂𑒭𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒏𑒪𑒼𑒿 𑒮 𑒑𑒖𑒥 𑒠𑒰𑒮 𑒏𑒯𑒪𑒏 𑒖 𑒞𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒼𑒪𑒲𑒮 𑒯𑒧 𑒢𑒻 𑒕𑒼𑒩𑒥 𑒅𑒿 𑒥𑒖𑒩𑓀𑒑𑒥𑒪𑒲 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒮 𑒢𑒧𑓂𑒞𑒰𑒥𑒰 𑒏𑒩𑒥𑒯 𑒞𑒐𑒢 𑒯𑒧 𑒖𑒩𑒥। 𑒮𑒥𑒯 𑒮𑒯𑒳𑒢𑓂𑒞𑒰 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰। 𑒖 𑒏𑒯𑒳 𑒮𑒞 𑒞𑒰𑒮 𑒖𑒰𑒞𑒱-𑒣𑒰𑒞𑒱,

[illegible]

विवेक कुमार कहलखिन-

"ई रतन कक्का, [illegible] मन [illegible] न तँ [illegible]"

रतन कक्काकेँ [illegible]-

"से की?"

विवेक बाजए लगला-

"तँ सुनह हम [illegible]"

[illegible] रतन कक्काक [illegible]-

"[illegible]!"

"हँ, ई। [illegible]"

"हँ, से तँ [illegible]" -रतन कक्का बाजला।

"[illegible]

𑒮𑓀𑒞𑒴𑒏 𑒥𑒢𑒏 𑒑𑒰𑒕𑒮 𑒠𑒠𑒰𑒢𑒏𑒿 𑒅𑒣𑒩 𑒂 𑒮𑒳𑒞𑒲𑒏𑒿 𑒢𑒱𑒔𑓂𑒔𑒰𑒿 𑒏𑓄 𑒏𑓄 𑒞𑒠𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒪𑒰। 𑒆𑒿𑒔 𑒢𑒑𑒏 𑒪𑒰𑒏𑒏𑒿 𑒢𑒻 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒕𑒰। 𑒮𑒰𑒧𑒏𑒿 𑒥𑒥𑒑𑒪𑒪𑒏। 𑒮𑒰𑒧 𑒮𑒢𑒏 𑒮𑒰𑒖 𑒂𑒠𑒲 𑒮𑓀𑒞𑒴𑒏𑒏𑒿 𑒑𑒥𑒠𑒻𑒢 𑒏𑒯𑒱 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒻।" 𑒥𑒱𑒥𑒹𑒏 𑒥𑒰𑒖𑒪।

"𑒯𑒴𑒿 𑒞𑒿 𑒥𑒛 𑒅𑒢𑓂𑒧𑒰𑒠 𑒦𑒹𑒪𑒕𑒰।" 𑒩𑒞𑒢𑒠𑒰𑒮 𑒥𑒖𑒪𑒰।

𑒋𑒞𑒥𑒮 𑒣𑒏𑒢𑒱𑒏𑒰𑒩 𑒪𑒑𑒾 𑒕𑒠𑒰। 𑒥𑒱𑒥𑒹𑒏 𑒅𑒧𑒰𑒥 𑒒𑒳𑒮𑒪𑒏𑒻𑒢 𑒂𑒥𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒯 𑒮𑓂𑒫𑒨𑒥𑒮 𑒠𑓂𑒩𑒼𑒝𑒰𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒂 𑒋𑒏𑒪𑒫𑓂𑒨𑒏 𑒯𑒱𑒮𑓂𑒮𑒰 𑒥𑒳𑒧𑒪 𑒕𑒠 𑒏𑒱𑒢?

"𑒢𑒯𑒱!"

𑒩𑒞𑒢 𑒠𑒰𑒮 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒞𑒿 𑒮𑒳𑒢𑒴, 𑒠𑓂𑒩𑒼𑒝𑒰𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒏𑒾𑒩𑒫-𑒣𑒰𑒝𑓂𑒛𑒫𑒏 𑒑𑒳𑒩𑒳 𑒕𑒪𑒰। 𑒏𑒳𑒢𑒼 𑒫𑓀𑒬𑒏 𑒮𑒞𑒏𑒿 𑒢𑒱𑒖 𑒠𑒹𑒢 𑒕𑒪𑒯𑒱𑒢। 𑒋𑒏𑒪𑒫𑓂𑒨𑒏𑒿 𑒧𑒢 𑒞𑒪𑒻 𑒖𑒹 𑒠𑒮𑒯𑒴𑒿 𑒢𑒱𑒖 𑒑𑒜𑓃𑒪𑒰 𑒏𑒯𑒼। 𑒞𑒐𑒢 𑒪𑒪 𑒠𑓂𑒩𑒼𑒝𑒰𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒪𑒑 𑒢𑒱𑒖 𑒪𑒥𑒩 𑒪𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒰। 𑒮𑒳𑒢𑒰 𑒠𑓂𑒩𑒼𑒝𑒰𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒮𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒏𑒯𑒱 𑒂𑒏𑒢𑒰 𑒢𑒱𑒖 𑒠𑒏𑓂𑒭𑒰𑒿 𑒏𑓂𑒭𑒢𑒏𑒰𑒩 𑒏𑓄 𑒠𑒹𑒪𑒏। 𑒞𑒐𑒢 𑒋𑒏𑒪𑒫𑓂𑒨 𑒒𑒳𑒩𑒰 𑒏𑒰𑒪𑒏, 𑒖𑒿𑒐𑒰 𑒢𑒱𑒖𑒮 𑒑𑒳𑒩𑒰 𑒕𑒾 𑒞𑒿𑒐𑒰 𑒢 𑒠𑓂𑒩𑒼𑒝𑒰𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒢𑒱𑒖 𑒢𑒏𑓂𑒭 𑒠𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒂 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒮𑒧 𑒢𑒻 𑒥𑒠𑒪𑒻𑒢। 𑒮 𑒢𑒻 𑒞𑒿 𑒢𑒱𑒖 𑒑𑒜𑓃𑒪𑒰 𑒏𑒥𑒩 𑒏𑒥𑒩 𑒂 𑒖𑓀𑒑𑒪𑒮 𑒖𑒹 𑒠𑓂𑒩𑒼𑒝𑒰𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏 𑒧𑒰𑒏𑓂𑒭𑒢𑒏 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑒲 𑒥𑒢𑒰। 𑒑𑒳𑒩𑒳 𑒧𑒰𑒢𑒱 𑒡𑒢𑒳-𑒥𑒰𑒝𑒏 𑒁𑒦𑓂𑒨𑒰𑒮 𑒂 𑒁𑒞𑒱𑒮𑒰𑒮 𑒏𑒩𑒋 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒋𑒏𑒠𑒱𑒢 𑒡𑒢𑒮𑒑𑒩 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒪 𑒖𑒹 𑒠𑓂𑒩𑒼𑒝𑒰𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨𑒏 𑒬𑒱𑒭𑓂𑒨𑒮 𑒋𑒏𑒙𑓂𑒙𑒰 𑒂𑒠𑒢 𑒥𑒲𑒔 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒪𑒰। 𑒋𑒏𑒠𑒱𑒢 𑒥𑒲𑒔 𑒕𑒪 𑒋𑒏𑒪𑒫𑓂𑒨।"

𑒥𑒱𑒥𑒹𑒏 𑒨𑒰𑒩 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒯𑒿 𑒨𑒾, 𑒂𑒑𑒰𑒿 𑒮𑒳𑒢𑒯 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒠𑓂𑒩𑒼𑒝𑒰𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨 𑒁𑒩𑓂𑒖𑒳𑒢 𑒂 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒬𑒱𑒭𑓂𑒨 𑒮𑒞𑒏𑒿 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒖𑓀𑒑𑒪 𑒠𑒱𑒮 𑒒𑒳𑒧𑒻𑒪 𑒑𑒹𑒪𑒰। 𑒮𑓀𑒑𑒮 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒏𑒳𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒕𑒪𑒯𑓂𑒏𑒰। 𑒁𑒢𑒖𑒰𑒢 𑒂𑒠𑒧𑒲𑒏𑒿 𑒠𑒹𑒐 𑒏𑒳𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒦𑒳𑒏𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒰। 𑒋𑒏𑒠𑒱𑒢

𑒏𑒳𑒧𑓂𑒯𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒰𑒨𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒥𑒳𑒗𑒰। 𑒍 𑒩𑒰𑒏𑒹𑒬𑒏 𑒞𑒐𑒢 𑒥𑒰𑒞 𑒧𑒰𑒢𑒪𑒏 𑒂 𑒏𑒳𑒧𑓂𑒯𑒰𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒑𑒳𑒩𑒳𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒢𑒱𑒭𑓂𑒚𑒰-𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒏 𑒣𑒴𑒖𑒰 𑒏𑒩𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒏𑒳𑒧𑓂𑒯𑒰𑒩 𑒠𑒾𑒛𑓃𑒪 𑒥𑒰𑒥𑒰𑒖𑒲 𑒪𑒑 𑒑𑒹𑒪। 𑒏𑒳𑒧𑓂𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒏𑒯𑒪 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒥𑒰𑒥𑒰𑒖𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒞𑓂𑒮𑒳𑒏𑒞𑒰 𑒖𑒰𑒑𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒏। 𑒏𑒳𑒧𑓂𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒩𑒰𑒏𑒹𑒬𑒏 𑒢𑒖𑒠𑒲𑒏 𑒂𑒨𑒪।"

"𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒏𑓄 𑒧𑒰𑒢𑒪𑒏𑒻 𑒚𑒲𑒏!" 𑒩𑒞𑒢𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒖𑒪।

"𑒯𑒿 𑒯𑒾, 𑒞𑒐𑒢 𑒏𑒲 𑒦𑒹𑒪𑒻 𑒮𑒹 𑒥𑒳𑒗𑒥𑒯𑒏 𑒞𑒿 𑒠𑒰𑒿𑒞 𑒂𑒿𑒑𑒳𑒩𑒲 𑒏𑒙𑒥𑒯𑒏।" 𑒫𑒱𑒫𑒹𑒏 𑒥𑒰𑒖𑒪।

"𑒏𑒯𑒴-𑒏𑒯𑒴 𑒏𑒲 𑒦𑒹𑒪𑒻।" 𑒩𑒞𑒢𑒪𑒰𑒪 𑒣𑒳𑒕𑒪𑒏𑒻𑒢।

"𑒥𑒰𑒥𑒰𑒖𑒲 𑒑𑒳𑒩𑒳 𑒠𑒏𑓂𑒭𑒱𑒝𑒰 𑒧𑓀𑒑𑒪𑒏𑒻, 𑒩𑒰𑒏𑒹𑒬 𑒮𑒱𑒡𑒹 𑒏𑒯𑒪𑒏𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒂𑒠𑒹𑒬 𑒏𑒩𑒴। 𑒮𑒠𑒩 𑒢, 𑒞𑒿 𑒞𑒴𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒠𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒯𑒰𑒟𑒏 𑒎𑓀𑒚𑒰 𑒏𑒰𑒙𑒱 𑒏𑓄 𑒠𑒰।" -𑒥𑒰𑒥𑒰𑒖𑒲 𑒂𑒠𑒹𑒬 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱𑒢।

𑒞𑒐𑒢 𑒩𑒰𑒏𑒹𑒬 𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒮𑒼𑒔𑒢-𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩𑒢 𑒁𑒣𑒢 𑒠𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒯𑒰𑒟𑒏 𑒎𑓀𑒚𑒰 𑒏𑒰𑒙𑒱 𑒏𑓄 𑒥𑒰𑒥𑒰𑒖𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒠𑓄 𑒠𑒹𑒪𑒏𑒻𑒢।"

"𑒄 𑒞𑒿 𑒥𑒛𑓃 𑒁𑒢𑓂𑒨𑒰𑒨 𑒏𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒥𑒰𑒥𑒰𑒖𑒲।" -𑒩𑒞𑒢𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒰𑒖𑒪।

"𑒮𑒹 𑒞𑒿 𑒞𑒴𑒯𑒲𑓀 𑒥𑒳𑒗𑒥𑒯𑒏।" 𑒫𑒱𑒫𑒹𑒏 𑒏𑒯𑒪𑒏𑒻𑒢।

"𑒯𑒹 𑒯𑒾 𑒩𑒞𑒢 𑒦𑒰𑒨, 𑒄 𑒞𑒿 𑒮𑒞𑒨𑒳𑒑, 𑒞𑓂𑒩𑒹𑒞𑒰-𑒠𑓂𑒫𑒰𑒣𑒩𑒏 𑒏𑒱𑒮𑓂𑒮𑒰 𑒏𑒯𑒪𑒱𑒨𑒯। 𑒂𑒥 𑒏𑒪𑒨𑒳𑒑𑒏 𑒏𑒱𑒮𑓂𑒮𑒰 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒱𑒨𑒰। 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥 𑒦𑒲𑒧 𑒩𑒰𑒫 𑒁𑒧𑓂𑒥𑒹𑒛𑒏𑒩𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒞𑒿 𑒮𑒳𑒢𑒢𑒹 𑒯𑒹𑒥𑒯?"

"𑒯𑒿 𑒮𑒳𑒢𑒢𑒹 𑒕𑒱𑒨𑒾, 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒠𑒹𑒬𑒏 𑒮𑓀𑒫𑒱𑒡𑒰𑒢 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒰𑒝𑒧𑒹 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒨𑒼𑒑𑒠𑒰𑒢 𑒕𑒪𑒻𑒢। 15 𑒁𑒑𑒮𑓂𑒞 𑒂 26 𑒖𑒢𑒫𑒩𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒡𑒱𑒨𑒰-𑒣𑒳𑒞𑒰 𑒁𑒧𑓂𑒥𑒹𑒛𑒏𑒩𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒪𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱।"

𑒩𑒞𑒢𑒪𑒰𑒪 𑒏𑒯𑒪𑒏𑒻𑒢-

"𑒯𑒿, 𑒚𑒲𑒏 𑒕𑒱𑒨𑒾। 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒮𑓂𑒏𑒴𑒪𑒧 𑒩𑒼𑒏𑒪। 𑒧𑒰𑒮𑓂𑒙𑒩 𑒢𑒹 𑒥𑒻𑒮𑓄

देलकैन। जखन कि मन प्रसासन याम्हल कवे छला। जातिक छल तँए। मुदा अम्बेदकरजीक लगन छलै, प्रतिभा छलै, दृढ़क प्रति ममता छलन्हि। तेँ ने आइयो महान पुरुष भेला। जाति-पातिक कानून लऽ कऽ गाँधियोजी सँ झगड़ा भऽ गेल। जातिप्र-पाति लऽ कऽ बौद्ध धर्म मे जनम स्वीकार कयलन अम्बेदकरजी।" - विवेक बाजल।

"अहाँ ताबीक! जखन-जखन किसानी मन भेल छैक!" -रतन लाल बाजल।

विवेक आगाँ बाजल-

"हँ लौ, सत्य बात छियौ तखन खीर मुनका। अपना देशक के बाम्हनवादि छला ए.पी.जे. अब्दुल कलाम साहेब, हुनका संग प्रसासक साहेब अम्बेदकरक जकाँ कएलकैन। मुदा ओ साहेब, कलामसँ स्पष्ट मानलकैन। अखन लालम देवघरादिक महाविद्यालयम जादित वमूलाक संग खदिना भले दना। जादित वमूला महा दलित वर्गक लोक, आदिवा संग जाति-पाति लऽ कऽ दुर्व्यवहार कयलकै। बयाना आत्महत्या कऽ लेलक।"

"किया आत्महत्या कयलक?" रतन लाल चुप्पलकैन।

"नहि बुझलहक, अपन सबसँ ओ अबसादक चलैत। आब तूँही कहह के अछैत लाल छल ने मानलक तँ जतेक आक्रान्त छला। ओ तूँही लाल आबि समाजक आक्रोश छेदक ओ। नहि ना छ बबस्थाक लाठ छियौ। जक बग लोमक गहि ओ नामन बग लोमित गहि। नुमहुर आगि कहाँ तब-तब हुनू आक्रान्तित गहि। लामन कानिकाक कहना नहि आदत के दमना आगाँ नामन बात भऽ

𑒖𑒑𑒰। 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒪𑒼𑒦𑒱𑒞 𑒢𑒑 𑒮𑒞𑒰 𑒑𑒰𑒨-𑒦𑒻𑒿𑒮 𑒖𑒑 𑒥𑒰𑒯𑒹𑒞 𑒑𑒕𑒱। 𑒏𑒣𑒪𑒲𑒧 𑒏𑒣𑒪𑒲 𑒫𑒰 𑒞𑒩𑒳𑒧 𑒏𑒣𑒪𑒲 𑒑𑒕𑒱। 𑒥𑒰𑒞𑒏 𑒢 𑒖𑒰𑒞𑒱-𑒣𑒰𑒞𑒱 𑒑𑒕𑒱 𑒫𑒰 𑒥𑒰𑒏-𑒖𑒰𑒢𑒫𑒩𑒧𑒹𑒿 𑒦𑒴𑒐𑒰 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒑𑒕𑒱 𑒖𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒥𑒰𑒥𑒰𑒩 𑒢𑒯𑒱। 𑒏𑒞𑒏 𑒏𑒯𑒥𑒯𑒰। 𑒧𑒳𑒩𑒳𑒪 𑒮𑒰𑒞-𑒖𑒢𑒏𑒿 𑒖𑒑𑒰 𑒏𑓄 𑒒𑒩𑒏𑒪𑒏, 𑒞𑒿𑒋 𑒥𑒮𑒰𑒩 𑒧𑒕𑒰𑒩 𑒞𑓄 𑒥𑒼𑒪𑒰। 𑒫𑒰 𑒖 𑒖𑒲𑒞𑒯 𑒥𑒏𑒥𑒲 𑒏𑒢𑓂𑒢𑒪𑒏 𑒫𑒰 𑒕𑒹𑒪𑒏 𑒫𑒰 𑒏 𑒞𑒪𑒰।"

𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑒔𑒢𑓂𑒠 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒃 𑒢𑒰𑒟 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥, 𑒞𑒯𑒢 𑒏𑒼𑒅 𑒮𑒥 𑒏𑒢𑒰 𑒦𑒙𑒏𑒰𑒨𑒞?"

𑒫𑒱𑒩𑒪 𑒏𑒯𑒪𑒏𑒻𑒢-

"𑒏𑒢𑒰 𑒦𑒙𑒏𑒰𑒨𑒞, 𑒮 𑒏𑒲 𑒖𑒰𑒞𑒱-𑒣𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒤𑒹𑒩 𑒕𑒼𑒛𑓃𑒱 𑒖 𑒥𑒯𑒰-𑒥𑒯𑒰 𑒧𑒰𑒢𑒴 𑒫𑒰 𑒧𑒳𑒿𑒯𑒧 𑒠𑓄 𑒠𑒱𑒨𑒾। 𑒂𑒠𑒱-𑒨𑒳𑒑𑒰𑒧𑒹 𑒇𑒭𑒱-𑒧𑒳𑒢𑒲 𑒮𑒥 𑒧𑒢𑒳𑒭𑓂𑒨𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒬𑒱𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒏𑒯𑒰𑒨 𑒪𑒱𑒐𑒪𑒻𑒢, 𑒞𑒯𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒱𑒿𑒑𑒪 𑒮𑒥 𑒖𑒰𑒢𑒫𑒩-𑒖𑒰𑒢𑒫𑒩 𑒏𑒿𑒣𑒧 𑒥𑒥𑒯𑒰𑒩 𑒏𑓄 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒠𑒴𑒭𑒱𑒞 𑒞𑓄 𑒥𑒼𑒪𑒏। 𑒞𑒏𑒩 𑒏𑒼𑒅 𑒠𑒳𑒠𑒢𑒰 𑒕𑒱𑒨𑒾। 𑒖𑒐𑒢 𑒖𑒨𑒥𑒏 𑒏𑒢𑒲 𑒢𑒱𑒧𑓂𑒢𑒰𑒿 𑒕𑒱𑒧 𑒣𑒴𑒏𑒞 𑒫𑒰 𑒢𑒱𑒥𑒪𑒰 𑒖𑒨𑒥-𑒦𑒳𑒿𑒯 𑒮𑒮𑒥𑒞, 𑒖𑒏𑒩𑒧𑒿 𑒥𑒲𑒔𑒧 𑒑𑒰𑒫𑒱 𑒏𑓄 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒏𑒿 𑒦𑒳𑒿𑒯-𑒧𑒱𑒪𑒰𑒢𑒲 𑒯𑒞𑒻, 𑒏𑒢𑒰 𑒐𑒴𑒥-𑒢𑒰𑒔 𑒢𑒻 𑒥𑒯𑒞𑒻। 𑒮𑒥-𑒮𑒥𑒏𑒿 𑒦𑒳𑒐-𑒠𑒳𑒐𑒧 𑒮𑓀𑒑 𑒯𑒞, 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒑𑒰𑒫𑒱 𑒯𑒢𑓂𑒢 𑒢𑒲𑒏 𑒖𑒏𑒿 𑒔𑒪𑒞𑒻।"

"𑒞𑒰𑒯𑒰 𑒞𑒧𑓂𑒯𑒰𑒩𑒰𑒏𑒿 𑒏𑒢𑒖𑒧 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒕𑒯𑒰। 𑒖𑒰𑒢𑒫𑒩 𑒕𑒱𑒢 𑒢𑒱𑒥𑒢𑒧𑒿 𑒑𑒨-𑒧𑒕𑓂𑒨 𑒯𑒞𑒻, 𑒞𑒯𑒢 𑒫𑒱𑒮𑓂𑒞𑒰𑒩𑒧𑒿 𑒏𑒯𑒥𑒯𑒰।"

"𑒚𑒲𑒏 𑒕𑒻 𑒢𑒰𑒟 𑒮𑒰𑒯𑒹𑒥 𑒁𑒐𑒢 𑒖𑒰𑒅 𑒕𑒲।"

𑓕.𑓖.𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒧𑒢𑒼𑒖 𑒏𑒬𑓂𑒨𑒣- 𑒌𑒢𑒰 𑒪𑒯𑒚𑒏𑒥𑒰

𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒧𑒢𑒼𑒖 𑒏𑒬𑓂𑒨𑒣

𑒌𑒢𑒰 𑒪𑒯𑒚𑒏𑒥𑒰

𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒰𑒥𑒱𑒏 𑒮𑒱𑒏𑓂𑒏𑒰ड़𑒱

"𑒠𑒰𑒠𑒰! 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒲 𑒖𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒂𑒠𑒱𑒑𑒰𑒧 𑒖𑒑-𑒖𑒑 𑒒𑒩 𑒠𑒰𑒯𑒱𑒩 𑒧𑒰𑒕 𑒂 𑒧𑒐𑒰𑒢 𑒮' 𑒦𑒩𑒪; 𑒮 𑒥𑒰𑒞𑒏 𑒒𑒩 𑒑𑒰𑒧 𑒕𑒼𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒠𑒹𑒐𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒢𑒯𑒱𑓀?"

"𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒞 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒮𑒿 𑒏𑒱𑒕𑒳𑒋 𑒥𑒩𑓂𑒐 𑒥𑒰𑒯𑒱𑒩 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲 𑒥𑒾𑒂.... 𑒂𑒥 𑒢𑒯𑒱𑓀 𑒩𑒯𑒪𑒻! 𑒧ड़𑒏𑒏 𑒂𑒠𑒱 𑒏𑒞 𑒠𑒿𑒞𑒑𑒪𑓂𑒪𑒰 𑒪𑒑 𑒖𑒹 𑒡𑒰𑒢𑒏 𑒐𑒹𑒞 𑒕𑒻 𑒮 𑒥𑒰𑒯𑒱𑒩𑒱𑒨 𑒕𑒪𑒻.....𑒂𑒧𑓂𑒩𑒏 𑒥𑒾𑒑𑒞𑒰𑒢𑒲 𑒪𑒑 𑒥𑒰𑒯𑒱𑒩𑒏 𑒚𑒰𑒪𑒰𑒪 𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒥𑒰𑒯𑒢𑒰 𑒂𑒠𑒱𑒢𑒰 𑒥𑒰ढ़𑒱 𑒕𑒻। 𑒁𑒣𑒢 𑒑𑒰𑒧 𑒮 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒰𑓀 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒞ऽ 𑒥𑒰𑒿𑒔

टा सऽ कहय चाहैत नहिँ छथि। ओ सभटा तकलीफसभक बिनु जानि गेलै। गाम सऽ आबक भद्दर चलि गेलै...... चाहथि-साहथि कऽ कऽ कहितै? चाहथिन्ह ओ साहब आ सहान दाइ.....ओ उहन चाहथिन्ह नहिँ तहन साहब-सहान कहा हतै?" गर्दनि उसास छोड़ैत गेलू कऽ युगक उन्नर हैत हसब हगधल भान कलदि गेल। सुना बात रोल चानि, गेल चानि उकँ उन्निय हतसा भऽ गेल। गेलू सन्ना अपन संगी संग छेलना लल पड़ि गेल।

आइ ऑफिस अऽ छूर ओ चोर हैत हछैत छी गेलू कऽ कुसी चर पढ़ि बाड़ि उचकान हवाल चर 'चग-चग चाहथि साहब सहान' बला चासान कऽ चन अऽ हकचे ओ अचस्थाँत। हस उड़बत, सुन, अनाक... गक टाक आदिना आकना हहित बहि गेल बसी।

-कुमार मनोज कश्यप, सम्पति: भारत सरकारक उप-सचिव, संपर्क: सी-11, टावर-4, टाइप-5, किदवई नगर पूर्व (दिल्ली हाट के सामने), नई दिल्ली-110023 मो. 9810811850 / 8178216239 ई-मेल : writetokmanoj@gmail.com

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

𑓕.𑓑.𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪- 𑒏𑒱𑒞𑒰𑒥𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰𑒫𑒢𑒰


𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪

𑒏𑒱𑒞𑒰𑒥𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰𑒫𑒢𑒰

𑒑𑒰𑒧-𑒒𑒩𑒧 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒢𑒰 𑒖𑒑𑒰𑒞𑒲 𑒥𑒰𑒪-𑒥𑒰𑒡 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰 𑒮𑒠𑒢 𑒧𑒢𑒏𑒿 𑒨𑒰𑒠𑒏𑒰𑒧 𑒏𑒥𑒻𑒞 𑒧𑒰𑒢 𑒨𑒰𑒏𑒨 𑒏𑒥𑒻𑒞 𑒥𑒰𑒡-𑒥𑒰𑒢𑒧𑒿 𑒬𑒰𑒠𑒢 𑒢𑒫 𑒖𑒢𑒧𑒱𑒞 𑒥𑒰 𑒢𑒫 𑒏𑒪𑒢𑓂𑒢𑒱𑒞 𑒑𑒰𑒕𑒏 𑒨𑒰𑒞 𑒯𑒠 𑒢𑒫 𑒥𑒳𑒡𑒱 𑒮𑒠𑒢 𑒥𑒰𑒑-𑒥𑒑𑒱𑒔𑒰𑒧 𑒑𑒰𑒕𑒱 𑒧𑒖𑒩𑒻𑒪 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒤𑒳𑒪𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒢𑒰𑒔 𑒮𑒠𑒢 𑒥𑒰𑒑-𑒥𑒑𑒱𑒔𑒰𑒧 𑒢𑒫-𑒢𑒫 𑒤𑒲𑒖 𑒧𑒖𑒩𑒻𑒞 𑒖𑒲𑒫𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒢𑒰𑒔𑒏𑒿 𑒧𑒢𑒏 𑒥𑒑𑒱𑒔𑒰𑒧 𑒑𑒰𑒥𑒻𑒢𑒰 𑒮𑒠𑒢 𑒡𑒢𑒱𑒏 𑒖 𑒧𑒰𑒙𑒱𑒡𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒠 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒑𑒣𑓂𑒣𑒱 𑒑𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒠𑒧𑒿 𑒪𑒼𑒏-𑒥𑒰𑒞 𑒠𑒪𑒰𑒢𑒰 𑒑𑒣𑓂𑒣𑒱 𑒑𑒰 𑒪𑒼𑒏-

[illegible]

𑒁𑒕𑒱। 𑒍𑒞𑒨 𑒏𑒞𑒹 𑒏𑒩𑒻𑒥𑒪𑒰 𑒫𑒰 𑒏𑒩𑒥𑒻𑒥𑒪𑒰𑒏 𑒦𑒼𑒑𑒞𑒰 𑒣𑒲𑒜𑒲, 𑒁𑒟𑒫𑒰 𑒋𑒞𑒨 𑒧𑒰𑒪𑒰-𑒧𑒰𑒪𑒲 𑒠𑒲𑒨 𑒥𑒯𑒳𑒧 𑒣𑒲𑒜𑒲 𑒥𑒠𑒪𑒻𑒞, 𑒍𑒞𑒨𑒿 𑒠𑒪𑒱 𑒏𑒩𑒥𑒯𑒰𑒢𑒰 𑒣𑒠𑒳𑒿𑒔 𑒥𑒠𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒨𑒿 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒨 𑒧𑒰𑒛 𑒂𑒥𑒱 𑒦𑒼𑒑𑒞𑒰 𑒣𑒲𑒜𑒲 𑒣𑒲𑒜𑒪𑒰 𑒣𑒲𑒜𑒲𑒏 𑒥𑒹𑒑𑒰𑒥𑒱𑒏 𑒣𑒠𑓂𑒡𑒞𑒱𑒏𑒿 𑒧𑒼𑒛𑒱 𑒥𑒠𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒦𑒰𑒫𑒱𑒏 𑒁𑒕𑒱, 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒨 𑒧𑒰𑒛 𑒥𑒰𑒢 𑒥𑒰𑒢𑒰 𑒠𑒥 𑒏𑒩𑒞, 𑒞𑒏𑒩 𑒁𑒮𑒩 𑒏𑒩𑒞𑒰 𑒁𑒕𑒱, 𑒂𑒩𑓂𑒟𑒱𑒏 𑒂𑒧𑒠𑒢𑒲𑒏 𑒥𑒮𑓂𑒣𑒰𑒢𑓂𑒢𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒂𑒠𑒢 𑒢𑒫 𑒅𑒣𑒰𑒠 𑒅 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒧𑒴𑒪 𑒂𑒫𑒬𑓂𑒨𑒏𑒞𑒰𑒏𑒿 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱 𑒏𑒩𑒻𑒥𑒪𑒰 𑒥𑒢𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒹𑒞𑒨 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧𑒲𑒝 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒂 𑒢𑒑𑒩𑒲 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒣𑒠𑓂𑒡𑒞𑒱𑒏 𑒧𑒰𑒛 𑒥𑒩𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏𑒿 𑒧𑒰𑒛𑒥 𑒏𑒩𑒞।

𑒁𑒠𑓂𑒡𑒢 𑒡𑒢𑒱𑒏 𑒁𑒟𑒫𑒰 𑒍𑒞𑒨𑒏 𑒅 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒣𑒠𑓂𑒡𑒞𑒱 𑒔𑒪𑒻𑒞 𑒂𑒥𑒱 𑒥𑒠𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒏𑒩 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒮𑓀𑒣𑒩𑓂𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒥𑒹𑒑𑒰𑒥𑒱𑒏 𑒅𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒮 𑒮𑒮𑒥𑒮𑒣𑒢 𑒁𑒕𑒱 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒨𑒿 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒡𑒳𑒢𑒲 𑒑𑒞𑒱𑒬𑒲𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒣𑒳𑒢𑒰 𑒅 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒢𑒫 𑒣𑒠𑓂𑒡𑒞𑒱𑒧𑒿 𑒅𑒣𑒱𑒏𑓄 𑒥𑒰𑒞𑒰 𑒠𑒳𑒧 𑒣𑒰𑒠𑒱 𑒥𑒠𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒫𑒰 𑒢𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒹𑒞𑒨 𑒞𑒿 𑒥𑒰𑒠𑒢 𑒡𑒢𑓂𑒢 𑒁𑒕𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒱𑒢 𑒅 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒣𑒠𑓂𑒡𑒞𑒱 𑒮𑒢𑓂𑒞𑒰𑒢𑒏 𑒑𑒞𑒱𑒨 𑒢𑒯𑒱 𑒔𑒪𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒞। 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒅𑒠𑒱𑒢𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒅𑒛𑒱-𑒥𑒢𑒻𑒧 𑒮𑒧𑒨 𑒪𑒑𑒥𑒻𑒞 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒢 𑒂𑒥𑒏𑒫𑒰 𑒮𑓂𑒣𑒰𑒛𑒥𑒰𑒧 𑒮𑒧𑒨 𑒪𑒑𑒥 𑒏𑒩𑒞। 𑒥𑒰𑒞𑒰-𑒥𑒰𑒞𑒲 𑒮𑒢𑓂𑒞𑒰𑒢 𑒠𑒮 𑒑𑒳𑒝𑒰 𑒂𑒨𑒳 𑒥𑒜𑒱 𑒮𑒏𑒻𑒞, 𑒣𑒳𑒢𑒰 𑒧𑒢𑒳𑒭𑓂𑒨𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒨 𑒮 𑒕𑒼𑒛 𑒮𑒧𑓂𑒦𑒫 𑒁𑒕𑒱.! 𑒕𑒰𑒨𑒰𑒥 𑒅𑒞𑒩𑒰 𑒅 𑒁𑒕𑒱 𑒮 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒞𑓂𑒨𑒿 𑒖𑒲𑒫𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒢𑒰𑒧 𑒂 𑒏𑒳𑒪𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒢𑒰𑒧𑒏𑒿 𑒞𑒞𑓂𑒨𑒿 𑒏𑒢 𑒮𑒞𑒪𑒥 𑒮𑓂𑒣𑒻𑒢, 𑒏𑒢 𑒮𑒞𑒪𑒥 𑒮𑓂𑒣𑒻𑒢 𑒅 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒥𑒢𑓂𑒡𑒰𑒫𑒰𑒮𑒢𑒰𑒏 𑒥𑒲𑒨𑒏 𑒥𑒣𑒰𑒛𑒧 𑒁𑒢𑒥 𑒣𑒛𑒪 𑒥𑒠𑒞𑒰। 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒮𑓂𑒣𑒲 𑒅 𑒮𑒞 𑒁𑒨𑒢 𑒏𑒪𑓂𑒨𑒰𑒝 𑒣𑒰𑒠𑒻𑒞। 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒻𑒏 𑒞𑒰𑓀𑒑 𑒅𑒠𑒱𑒢𑒰 𑒡𑒮 𑒮𑓂𑒣𑒲 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒡𑒮𑒏 𑒞𑒰𑓀𑒑 𑒮𑓂𑒣𑓂𑒞𑒰 𑒞𑒿 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒮𑓂𑒣𑒲𑒠।

𑒮𑓀𑒑𑒲 𑒢𑒞𑓂𑒣𑒢 𑒮𑒢𑒮 𑒞𑒰𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒅 𑒅𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒮 𑒖𑒲𑒫𑒻𑒏 𑒥𑒰𑒠𑒢𑒰 𑒥𑒠𑓂𑒡𑒰,

आइ, काका-काकीकेँ ख्याल करैत जखनि सुना ख्यालक आसन माने ठूठा रहिया जे कना बसु बा निर्णयकेँ ख्यालक, तहिना जखन बाहसँ आगू बढ़ि, माने युवनासँ आगू बढ़ि आसनक ख्याल जीवनस तहिया तखन निर्णयक संग कर्तम सहा ख्यालपन रहित रहि। सत जनित श्री जे मनुष्यकेँ युवन लव-कुश युवन लाल-पोषक संग कर्ज वस्तुत रहि।

जीवानन्द नाम आ कुलानन्द नाटकक बीचक सम्बन्ध, माने वस्तीगत वैरागिक जीवनक सम्बन्ध, तत प्रगाढ़ता आबि गेलैन जे जीवनक सम्बन्ध अनुभूति पुष्पित-पल्लवित भऽ गेलैन। बाहक संग ख्यामा-ख्यामा बेस दुनू बढ़ती युवन जीवन-मरणक निर्णय-विमर्शमेँ लऽ कऽ गाम-समाजक बीचक जीवन-मरणक संग सुख-दुखकेँ निर्वाहक चामाक लोक सहा कबरा लगला। पारिवारिक जीवनक संग, पारिवारिक गति-विधिस सहा बाहक-आसनक सहयोगाव तला। जखन दुनियाँम संगी तहिया तखन संगपनक प्रगाढ़ता बढ़ित रहि।

आइ, ई संगक वरदानक बीच दुनूक जीवना बढ़लैन आ ई चामामे बाजा सहा स्नेह। बाहक जीवन माने कुलानन्द नाटकक जीवन आदर्श बढ़लैन माने आदर्श परिवारक परिवार बढ़लैन जखनस सत तनकक सुविधा बढ़ैत रहि। माने ठूठ जे पहल-लिखल माता-पिताक संग विद्वानक परिवार-समाज सहा बढ़लैन, आसन दिस जीवानन्द नाटकक जीवन आदर्श बढ़लैन जे प्रतिमित वास्तव रहि। तहू प्रतिमितस सामाजिकता सहा प्रमुख बढ़लैन। सामाजिकता ठूठ जे समाजकेँ बाहरिक जीवनधारास

आनि विश्वासघाती केना बनायल जाय। समाद थाना बस्तीगत जीवनक सभा चलैत ई समाजमेँ कुशल सभा चलित अछि, तहिना सामाजिक जीवन सभा चालैत ई समाजक थानाकेँ बस्तीगत थान थानाक प्रशासित करैत गतिशील सभा करैत अछि।

दोसर ई अछि, जतय अछि स ततय रहत। तहूमेँ जीवानन्द नाम आबि कुशानन्द नामकेँ कहन सबाकर छैन। सबाकर छैन अपन कुन् संगीक संग संगपन निसादवमेँ। बबसाबिक कंपम जहिना अपनाकेँ कुन् ओकर जमानवाबीक बीच सम्बन्ध बाजा करैत तहूम अहन तक कुनूक बीच कहना सन-सनासन आबिक जमानक संग दश्या नहू तल अछि।

सामाजिक परिवर्तनम सम्बन्धक नीतर किछु परिवर्तन पाव करायल, जहूमेँ सम्बन्धम दूरी बनब तुकं तला। गुना दूरी बनलाक पश्चातिया विचारम कमी नहि आयल अछि। हँ, दूरता नकशल नहियँ ज सकैया ई बोल-बदुत सनासन कहतकेँ बाधित नहि करलक अछि। जहूमेँ कुन् संगीकेँ किछु-न-किछु श्वासा तब करैत अछि।

सामाजिक परिवर्तन पात तँ कुन् ओकरकेँ, सान जीवानन्दा नाम आ कुशानन्दा नामकेँ, बेपारिक कंपम प्रबलता आनिय दलकैन ई मनुष्य अमगना थबतीपन देसी-दुनीमेँ, सान जहू कुनियाँम बसे सी तहू कुनियाँम जीवन बसब करुष्य सकैया। जहिन मनुष्य अपन जीवनकेँ बाढि लहुगा, तहिन बाढ-बाढ बाढैत, कहना-कहना थान पाव करुष्य लहुगा। अनाजी-थुनाबीक जीवनक संग आ जग-जगायल जीवनक संग सम्बन्धम अन्तर अछिया, पाकम जहिना दीजपन बहन दूरतीक बसी सम्भावना रहैया, तहिना

विद्यालयक युवकता बढ़ल आगमनमे स नहि भेलैक।
एखन विद्यालयक अनुकूल परिश्रम जखन बाधा एलैक तखन विद्यालयकतरफ मनमे पुनः विद्यालयक प्रगति आबिये जेतैक। आना, जीवानन्द नामक निजविद्यार्थी लोकनि छथि, तेँए ओ एखन विद्यालयानुकूल जीवन बाला कहैय बदल छथि, जहिया विघ्न-बाधाकेँ आबयक सामाजिक दुश्मन छथि। जहियाँ सामाजिक बोधक गतिमे कतौ तही बढ़ि छैन तँ कतौ मन्नक संग विलमाउ-वदलाव सन्ता शक्ति छैन, जकरा आ लोकनिक आगू विद्यालयक अनुकूल संगीकर करैत मानिकऽ चलै छथि जे बाट कठिन आगू, दू कठिन बाटू, एखन जीवनानुकूल अनुभवक साधनयत्न कठिन छथि।
संयोग बनल, बुलानन्द नामक विद्यालय वदलाव बात, दूषिम सत्ता दूत्न बालेन जहियाँ मन मानि बोलेन जे चलैक बातम, जीवन जीवैक सामाम कतौ-न-कतौ कमी जकाँर छथि। सदर जीवनकेँ लोक एखन सदरतामेँ आगू बढ़ौवत छथि, मुदा असदर जीवन तन आगमनक जकाँवत सत्ता पकित छथि। दुनियाँ तेँ दुनियेँ भी जे सात अबल लोकमेँ नवल छथि। तहूम एखन मिथिला तँ सदर मिथिला भीद, पयासा बढ़मेँ एवैत सबकर परिवार नियाजन एखन तक नियंत्रित नहियेँ कलक छथि, कतवा बाल-बुक कऽ दूध-दह्या किया न भेलैक, मुदा नहि सतमेँ लोकक बनाबाबि ब्लोड कमल छथि आबि कमत।
कहब जे कना कमि मरैया?
कमैक समान सांग छथि। आ छथि मनुष्यक एखन दुनियादी जीवनकेँ पकैत जखन नविश्यानुद्ध कता तखन एखन

𑒖𑒲𑒫𑒢𑒰𑒢𑒳𑒏𑒴𑒪 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒮𑒦 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒰 𑒔𑒪𑒨 𑒪𑒑𑒪𑒰, 𑒃 𑒖𑒛𑓃𑒻𑒢 𑒔𑒪𑒨 𑒪𑒑𑒪𑒰 𑒏𑒱 𑒮𑒦𑒏 𑒢𑒹 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒮𑒿 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒡𑒩𑒱 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒪𑒞𑒰 𑒠𑒳𑒐 𑒪𑒑𑒪𑒰। 𑒕𑒰𑒨𑒰𑒏 𑓄 𑒃, 𑒞𑒿𑒃𑒮𑒿 𑒖𑒲𑒫𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒢𑒰𑒟 𑒮𑒰𑒠𑒱𑒏 𑒏𑒳𑒪𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒢𑒰𑒟𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒼𑒢 𑒧𑒞𑒪𑒥 𑒕𑒻𑒢, 𑒧𑒞𑒪𑒥 𑒕𑒻𑒢 𑒮𑒥𑒯𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒏𑒪𑓂𑒨𑒰𑒝𑒮𑒿।

𑒏𑒳𑒪𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒢𑒰𑒟𑒏 𑒧𑒢𑒧𑒹 𑒮𑒥𑒯𑒢 𑒥𑒲𑒞𑒪 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒢𑒔𑒪𑒻𑒢। 𑒢𑒔𑒻𑒞 𑒧𑒢 𑒧𑒢𑒳𑒭𑓂𑒨 𑒩𑒯𑒪𑒻𑒢 𑒏𑓄 𑒮𑓀𑒑𑒲𑒞 𑒮𑒩𑒲𑒐𑒹 𑒞𑒿 𑒮𑓀𑒑𑒣𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒩𑒯𑒻𑒨𑒰। 𑒮𑓀𑒑-𑒮𑓀𑒑 𑒔𑒪𑒪𑒰𑒮𑒿 𑒢𑒲𑒏-𑒮𑒿-𑒢𑒲𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒨𑒞 𑒮𑒏𑒹 𑒕𑒲 𑒮𑒦 𑒮𑓀𑒑-𑒮𑓀𑒑 𑒢𑒯𑒱 𑒔𑒪𑒪𑒰𑒮𑒿 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒏𑒪𑒰-𑒣𑒩𑒱𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒏𑒧𑒲 𑒮𑒠𑒰 𑒥𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒱𑒨𑒰। 𑒏𑒳𑒪𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒢𑒰𑒟𑒏𑒹𑒿 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒏 𑒥𑒠𑒪𑒞𑒰 𑒖𑒹𑒩 𑒧𑒰𑒟𑒱 𑒏𑒯𑒪𑒻𑒢 𑒏𑓄 𑒖𑒲𑒫𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒢𑒰𑒟𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒣𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒮𑓀𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒕𑒲 𑒞𑒿𑒨...।

𑒫𑒱𑒔𑒯𑒰𑒥𑒰𑒪 𑒥𑒯𑒰𑒩𑒲 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒏𑒳𑒪𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒢𑒰𑒟 𑒖𑒲𑒫𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒢𑒰𑒟 𑒥𑒹𑒑𑒰𑒧 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒪𑒰। 𑒔𑒜𑓃𑒞𑒰𑒏 𑒥𑒯𑒪𑒰𑒫 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒧𑒱𑒞 𑒠𑒳𑒢𑒴 𑒑𑒼𑒙𑒹𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒯𑒪𑒻𑒢 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒰𑒥𑒰𑒪 𑒢𑒲𑒏𑒢𑒰 𑒏𑒱𑒨 𑒢 𑒠𑒳𑒐, 𑒫𑒱𑒘𑒰𑒥𑒨 𑒞𑒿 𑒠𑒳𑒢𑒴𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒐𑒮𑒱𑒨𑒰। 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒑𑒞𑒏 𑒧𑒳𑒮𑓂𑒏𑒰𑒢 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒖𑒲𑒫𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒢𑒰𑒟 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒢𑒰𑒟, 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒧𑒰𑒮𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒥𑒢𑒰𑒮𑒿 𑒠𑒴𑒩 𑒥𑒰𑒜𑓃𑒨 𑒔𑒰𑒯𑒻 𑒕𑒲 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒃 𑒢𑓄 𑒢𑒹 𑒣𑒥𑒻𑒨𑒰। 𑒏𑒢𑒰-𑒢-𑒏𑒢𑒰 𑒥𑒰𑒿𑒠 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒮𑒑𑒳𑒮𑒰-𑒣𑒘𑓂𑒔𑒳𑒮𑒰 𑒣𑒏𑒻𑒞𑒱𑒨 𑒪𑒑𑒻𑒨𑒰।"

𑒏𑒳𑒪𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒢𑒰𑒟 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒃 𑒏𑒲?"

𑒖𑒲𑒫𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒢𑒰𑒟 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒏𑒯𑒴 𑒏𑓄 𑒣𑒩𑒔𑒰𑒮𑒞𑒰𑒏 𑒢𑒰𑒫 𑒕𑒧𑒢𑒰 𑒛𑒳𑒣𑒨 𑒏𑒱𑒨𑒰 𑒥𑒠𑒞𑒰। 𑒮𑒰𑒞𑒧 𑒠𑒱𑒢 𑒮𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒧𑒴𑒛𑒢 𑒥𑒻𑒮𑒰𑒩 𑒩𑒯𑒲𑒧 𑒕𑒑𑒞, 𑒞𑒯𑒴𑒧 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒮𑒞 𑒣𑒰𑒏𑒮𑒳𑒠𑒢𑒲 𑒣𑒰𑒏𑒧𑒞 𑒕𑒻𑒥 𑒏𑓄 𑒖𑒲𑒫𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒢𑒰 𑒕𑒑𑒰𑒞𑒰।"

मन-मन कुलानन्द ताय विचारि लेलनि जे जहिना परिवारक बूढ़त कहे, मान दण्ड कहे पाक-व्यामजक बीच सम्बन्ध बनबैत अछि तहिना एगता मद्दा, मान जीवनक एगता मद्दा सम्बन्ध बनबैत अछि। सुखबसन अछिया तँए किया न संग पूरि दियौन।

(अगम ९७९)

-जगदीश प्रसाद मण्डलजीक जन्म मधुबनी जिलाक बेरमा गाममे 5 जुलाइ 1947 ईस्वीमे भेलनि। मण्डलजी हिन्दी एवं राजनीति शास्त्रमे एम.ए.क उपाधि प्राप्त कएलाक बाद जीविकोपार्जन हेतु कृषि कार्यमे संलग्न भऽ सक्रिय पूबक समाज सेवामे लागि गेला। समाजमे व्याप्त रूढ़िवादी एवं सामन्ती व्यवहार सामाजिक विकासमे हिनका बाधक बुझि पड़लैन। फलतः जमीन्दार, सामन्तक संग गामक पुरजोर लड़ाइ चालू भऽ गेलैन। फलतः मण्डलजी अपन जीवनक अधिकांश समय केस-मोकदमा, जहल यात्रादिमे व्यतीत केलाह। 2001 ईस्वीक पश्चात साहित्य लेखन-जगत एला। 2008 ईस्वीसँ विभिन्न पत्र-पत्रिकादिमे हिनक रचना प्रकाशित हुअए लगलैन। गीत, काव्य, नाटक, एकांकी, कथा, उपन्यास इत्यादि साहित्यक मौलिक विधामे हिनक अनवरत लेखन अद्वितीय सिद्ध भऽ रहलैन अछि। अपन धुन दृढ़न तहि नाटक/एकांकी, पाँच सायसँ उपर गीत/काव्य, उनैस गोट उपन्यास आ साढ़े आठसय कथा-कहानीक संग किछु समीक्षात्मक विषयक लोकालय आदिक पुस्तकाकार, सायसँ उपर ग्रन्थ प्रकाशित छैन।

मिथिला-मैथिलीक विकासमे श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजीक योगदान अविस्मरणीय छैन। ई अपन सतत क्रियाशीलता आ

रचना धर्मिताक लेल विभिन्न संस्थासभक द्वारा सम्मानित/पुरस्कृत अलंकृत कएल गेल छथि, यथा- विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा गामक जिनगी' लघु कथा संग्रह लेल 'विदेह सम्मान- 2011', 'गामक जिनगी व समग्र योगदान हेतु साहित्य अकादेमी द्वारा- 'टैगोर लिटिरेचर अवार्ड- 2011', मिथिला मैथिलीक उन्नयन लेल साहुर दरभंगा द्वारा- 'वैदेह सम्मान- 2012', विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'नै धारैए' उपन्यास लेल 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार- 2014', साहित्यमे समग्र योगदान लेल एस.एन.एस. ग्लोबल सेमिनरी द्वारा 'कौशिकी साहित्य सम्मान- 2015', मिथिला-मैथिलीक विकास लेल सतत क्रियाशील रहबाक हेतु अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा- 'वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान- 2016', रचना धर्मिताक उत्तम अमूल्य योगदान हेतु ज्ञानस्था-मण्डल द्वारा- 'कौमुदी सम्मान- 2017', मिथिला-मैथिलीक संग अन्य उत्कृष्ट सेवा लेल अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा 'स्व. बाबू साहेब चौधरी सम्मान- 2018', चेतना समिति, पटनाक प्रसिद्ध 'यात्री चेतना पुरस्कार- 2020', मैथिली साहित्यक अहर्निश सेवा आ सृजन हेतु मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी-असम द्वारा 'राजकमल चौधरी साहित्य सम्मान- 2020', भारत सरकार द्वारा 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार- 2021' तथा साहित्य आ संस्कृतिमे महत्वपूर्ण अवदान लेल अमर शहीद रामफल मंडल विचार मंच द्वारा 'अमर शहीद रामफल मंडल राष्ट्रीय पुरस्कार- 2022'

रचना संसार : 1. इन्द्रधनुषी अकास, 2. राति-दिन, 3. तीन जेठ एगारहम साँझ, 4. सरिता, 5. गीतांजलि, 6. सुखाएल

पोखरिक जाइठ, 7. सतबेध, 8. चुनौती, 9. रहसा चौरी, 10. कामधेनु, 11. मन मथन, 12. अकास गंगा - कविता संग्रह। 13. पंचवटी- एकांकी संचयन। 14. मिथिलाक बेटी, 15. कम्प्रोमाइज, 16. झमेलिया बिआह, 17. रत्नाकर डकैत, 18. स्वयंवर- नाटक। 19. मौलाइल गाछक फूल, 20. उत्थान-पतन, 21. जिनगीक जीत, 22. जीवन-मरण, 23. जीवन संघर्ष, 24. नै धाड़ैए, 25. बड़की बहिन, 26. भादवक आठ अन्हार, 27. सधवा-विधवा, 28. ठूठ गाछ, 29. इज्जत गमा इज्जत बँचलौं, 30. लहसन, 31. पंगु, 32. आमक गाछी, 33. सुचिता, 34. साठपर, 35. संकल्प, 36. अन्तिम झटा, 37. कुश्मा- उपन्यास। 38. पयस्विनी- प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना। 39. कल्याणी, 40. सतमाय, 41. समझौता, 42. तामक तमघैल, 43. वीरांगना- एकांकी। 44. तरेगन, 45. बजन्ता-बुझन्ता- बीहनि कथा संग्रह। 46. संतुलाम, 47. रहानी ढहन- दीर्घ कथा संग्रह। 48. गामक जिनगी, 49. अर्द्धांगिनी, 50. सतभैंया पोखरि, 51. गामक शकल-सूरत, 52. अपन मन अपन धन, 53. समरथाइक भूत, 54. अप्पन-बीरान, 55. बाल गोपाल, 56. भकमोड़, 57. उलबा चाउर, 58. पतझाड़, 59. गढ़ैनगर हाथ, 60. लजबिज्जी, 61. उकड़ू समय, 62. मधुमाछी, 63. पसेनाक धरम, 64. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 65. फलहार, 66. खसैत गाछ, 67. एगच्छा आमक गाछ, 68. शुभचिन्तक, 69. गाछपर सँ खसला, 70. उतियाएल गाम, 71. गुलेती दास, 72. मुड़ियाएल घर, 73. वीरांगना, 74. स्मृति शेष, 75. बहीक चोकट, 76. क्षमियाग, 77. लिकलदन्नी, 78. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 79.

बाढ़नी लोक, 80. सुनिमानी जिनगी, 81. ढहल दिन, 82. गपक पियाउल लोक, 83. दिबालीक दीप, 84. श्यमन गाम, 85. बिलताउ नामि, 86. पितबनक निकाब, 87. जीबम बतक जीबम उपज, 88. ममयमँ यद्दिन यत किमान, 89. नोक, 90. गामक खाता लुटि चाल, 91. धमनाथ मान, 92. कृषियाग, 93. लाबल यदका जीतल कंध, 94. बद्दे जनक परिवार, 95. कताक संग कमक संग, 96. गामक सूबत बदेल चाल, 97. शान्तिम यबीज्ञ, 98. ब्रह्मक वन्न, 99. नीक तकन तकलौं, 100. जीवनक कम जीवनक मम, 101. संघर्ष, 102. नाचि मन कउ, 103. खाबाल खाता बलि चाल, 104. जीवन दान तख्ता 105. श्यमन मोती- लघु कथा संग्रह।

श्री रबनारायण प्रसन्न

संपर्क editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

१.४.जगदीश प्रसाद मण्डल- माटपर (धारावाहिक उपन्यास)

जगदीश प्रसाद मण्डल

माटपर (धारावाहिक उपन्यास)

पहिल [illegible]

[illegible]

मिथिलाक गामक पहचान, [illegible]

[illegible]

मिथिला जहिना जनसंख्याक [illegible] अछि तहिना [illegible]

[illegible]

𑒍 𑒖𑒲 𑒞𑒿 𑒣𑒪𑒰𑒨𑒢𑒣𑒳𑒩 𑒑𑒰𑒧𑒏 '𑒔𑒰𑒪', 𑒏𑒕𑒳-𑒅𑒠𑒧 𑒣𑒪𑒰𑒨𑒢𑒣𑒳𑒩𑒫𑒪𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒕𑒟𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑒩𑒑𑒢𑒰𑒏 𑒠𑒱𑒧𑒰𑒑𑒧𑒹𑒿 𑒠𑒳𑒫𑒱𑒡𑒰 𑒣𑒩𑒑𑒢𑒰𑒧 𑒣𑒯𑒻𑒨𑒰। 𑒣𑒩𑒑𑒢𑒰-𑒣𑒩𑒑𑒢𑒰𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒥𑒢𑓂𑒡𑒢𑒰 𑒕𑒰 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩𑒰 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩𑒧𑒹𑒿 𑒨𑒰𑒏 𑒥𑒯𑒱𑒞𑒰 𑒏𑒱𑒕𑒳𑒧 𑒠𑒴𑒩𑒲 𑒥𑒢𑒪 𑒕𑒟𑒱। 𑒣𑒕𑒥𑒱𑒡𑒰 𑒣𑒩𑒑𑒢𑒰𑒏 𑒕𑒼𑒙𑒰 𑒕𑒰 𑒕𑒼𑒙 𑒢𑒨𑒥𑒪𑒰 𑒪𑒑𑒱𑒨𑒰 𑒔𑒰𑒧𑒩 𑒣𑒩𑒑𑒢𑒰𑒧𑒹𑒿 𑒢𑒧𑒯𑒩 𑒕𑒟𑒱𑒨𑒰। 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒠𑒳𑒥𑒱𑒡𑒰 𑒣𑒩𑒑𑒢𑒰𑒫𑒪𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒰𑒪𑒑𑒳𑒖𑒰𑒩𑒲 𑒕𑒰𑒯𑒧𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒥𑒰 𑒥𑒮𑒲 𑒕𑒰𑒢 𑒣𑒩𑒑𑒢𑒰𑒫𑒪𑒰𑒧𑒹𑒿 𑒪𑒑𑒻𑒨𑒰। 𑒍𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒍 𑒕𑒟𑒱 𑒮 𑒕𑒟𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑒪𑒰𑒨𑒢𑒣𑒳𑒩𑒰𑒏 𑒕𑒣𑒢 𑒣𑒯𑒔𑒰𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒟𑒱 𑒮𑒠𑒰 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒕𑒟𑒱।

𑒕𑒰𑒢 𑒏𑒩𑒞𑒏 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹𑒿 𑒏𑒩𑒞𑒏 𑒧𑒰𑒢𑒮 𑒣𑒪𑒰𑒨𑒢𑒣𑒳𑒩 𑒢𑒲𑒏 𑒕𑒟𑒱 𑒧𑒰𑒢 𑒮𑒑𑒳𑒕𑒰𑒑𑒪𑒰 𑒕𑒟𑒱 𑒕𑒰 𑒏𑒩𑒞𑒏 𑒧𑒰𑒢𑒮 𑒕𑒰𑒢 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹𑒿 𑒣𑒕𑒳𑒕𑒰𑒑𑒪𑒰 𑒞𑒿 𑒕𑒟𑒱𑒨𑒰। 𑒥𑒥𑒮𑒰𑒧𑒱𑒏 𑒠𑒱𑒧𑒰𑒑𑒧𑒹𑒿 𑒧𑒰𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒏 𑒠𑒱𑒧𑒰𑒑𑒧𑒹𑒿 𑒍 𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒥𑒱𑒢𑒰𑒖𑒱𑒞 𑒮𑒮𑒰𑒖𑒮 𑒕𑒟𑒱 𑒞𑒏𑓂𑒭𑒧 𑒣𑒪𑒰𑒨𑒢𑒣𑒳𑒩𑒏 𑒅𑒢𑓂𑒢𑒰𑒬𑓂𑒫 𑒥𑒜𑓃𑒪 𑒍 𑒕𑒼𑒞𑒧 𑒏𑒞 𑒏𑒢𑒻𑒥𑒪𑒰 𑒍 𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒕𑒟𑒱 𑒕𑒰 𑒏𑒧 𑒕𑒟𑒱 𑒕𑒰 𑒕𑒰𑒢-𑒕𑒰𑒢 𑒥𑒴𑒗𑒱𑒧𑒹𑒿 𑒅𑒞𑒅𑒪 𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒥𑒮𑒲 𑒥𑒜𑓃𑒢 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒕𑒰𑒡𑒰𑒧𑒹𑒿 𑒥𑒮𑒲 𑒍𑒧𑒲𑒢𑒮 𑒑𑒰𑒕𑒲-𑒏𑒪𑒧 𑒞𑒅𑒥𑒰𑒢𑒲, 𑒜𑒅𑒫𑒥𑒰𑒢𑒲 𑒕𑒟𑒱 𑒕𑒰 𑒥𑒰𑒿𑒏𑒹𑒧 𑒥𑒰𑒛𑒲-𑒗𑒰𑒛𑒲 𑒗𑒥𑒰𑒛𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒖𑒞𑒮𑒲𑒧 𑒅𑒧𑒲𑒢 𑒕𑒟𑒱। 𑒍𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒍 𑒕𑒟𑒱 𑒮 𑒕𑒟𑒱। 𑒪𑒰𑒪𑒏𑒹𑒿 𑒞 𑒨𑒰𑒞 𑒮𑓂𑒫𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩𑒞𑒰 𑒕𑒟𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒱𑒢 𑒍 𑒕𑒣𑒢𑒰 𑒑𑒰𑒕𑒲𑒧 𑒢𑒲𑒏 𑒕𑒰𑒧𑒏 𑒑𑒰𑒕 𑒪𑒑𑒰𑒥𑒯 𑒏𑒱 𑒞𑒰𑒅-𑒜𑒅𑒫𑒏 𑒥𑒰𑒢 𑒪𑒑𑒰𑒥𑒯 𑒕𑒰𑒏𑒱 𑒮𑒰𑒑𑒥𑒰𑒢-𑒮𑒐𑒳𑒕𑒰 𑒪𑒑𑒰𑒥𑒯𑒰। 𑒞𑒯𑒢 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒣𑒪𑒰𑒨𑒢𑒣𑒳𑒩𑒫𑒪𑒰𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒻𑒢, 𑒮𑒠𑒰 𑒞𑒿 𑒕𑒻𑒢𑓂𑒯। 𑒍𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒖𑒞𑒰 𑒪𑒑𑒰-𑒪𑒑𑒰 𑒞𑒰𑒅𑒏 𑒑𑒰𑒕 𑒥𑒰𑒨𑒢 𑒕𑒻𑒥 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒜𑒅𑒥𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒨𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒻𑒥, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑒕𑒥𑒱𑒡𑒰 𑒣𑒩𑒑𑒢𑒰𑒫𑒪𑒰 𑒍𑒏𑒹𑒿 𑒑𑒳𑒅 𑒥𑒢𑒥𑒻𑒏 𑒪𑒴𑒩𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒻𑒢𑒰। 𑒞𑒿𑒨 𑒏𑒯𑒥 𑒍 𑒣𑒪𑒰𑒨𑒢𑒣𑒳𑒩𑒫𑒪𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒑𑒳𑒅 𑒥𑒢𑒥𑒻𑒏 𑒪𑒴𑒩𑒱𑒨 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒻𑒢 𑒮𑒠𑒰 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒹𑒿 𑒕𑒟𑒱। 𑒏𑒰𑒢𑒱𑒧𑒰𑒫𑒏

𑒐𑒹𑒞𑒲 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱, 𑒏𑒼𑒪𑓂𑒯𑒳-𑒏𑒧𑒰𑒠 𑒮𑒦 𑒥𑒯𑒳𑒞𑒯𑒱 𑒕𑒟𑒱 𑒆𑒐𑒛𑓃𑒧𑒹𑒿 𑒑𑒨𑒢
𑒑𑒳𑒛𑓃𑒰 𑒥𑒢𑒥𑒻 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒠𑒼𑒢𑒏-𑒠𑒼𑒢 𑒦𑒰𑒞 𑒮𑒦 𑒥𑒢𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱।
𑒋𑒐𑒢𑒏 𑒂𑒡𑒳𑒢𑒱𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒧𑒹𑒿 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑓀𑒔𑒪𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒑𑒩𑒲𑒥𑒲𑒏 𑒔𑒪𑒻𑒞
𑒣𑒰𑒃𑒪𑒲 𑒏𑒩𑒥𑒰 𑒥𑓀𑒑𑒰𑒪𑒏 𑒖𑓂𑒫𑒰𑒪𑒰𑒧𑒹𑒿 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒂𑒮𑒰𑒧, 𑒣𑓀𑒖𑒰𑒥 𑒡𑒩𑒱
𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪𑒰। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒪𑒰 𑒮𑒥𑒯𑒰-𑒮𑒥𑒯𑒲, 𑒦𑒼𑒑𑒪 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏
𑒢𑒯𑒱 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒔𑒪𑒥𑒻 𑒕𑒪𑒰𑒯𑒱𑒢। 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒏𑒵 𑒖𑒹 𑒐𑒹𑒞𑒲-𑒥𑒰𑒛𑓃𑒲𑒧𑒹𑒿 𑒪𑓄 𑒏𑓄
𑒧𑒰𑒪-𑒖𑒰𑒪𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒑𑒯𑒢𑒰 𑒫𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩-𑒫𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲𑒏 𑒮𑒦 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒑𑒨𑒢
𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒥𑒰𑒩𑒏 𑒮𑒳𑒥𑒢𑓂𑒡𑒥𑒪 𑒥𑒢𑒪 𑒂𑒠𑒱 𑒥𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱।
𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝𑒏 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝𑒧𑒹𑒿 𑒣𑒩𑒪𑒰𑒥𑒩𑒳𑒥 𑒑𑒰𑒧 𑒣𑒩𑒮𑒳𑒂𑒩𑒰𑒪 𑒕𑒪 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰
𑒞𑒹𑒯𑒰𑒖𑒲𑒏 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝𑒧𑒹𑒿 𑒏𑒪𑒰𑒏𑒰𑒧 𑒁𑒑𑒳𑒂𑒩𑒰𑒪𑒰 𑒕𑒪 𑒂 𑒁𑒯𑒢𑒰 𑒂𑒕𑒱। 𑒂𑒠𑒲
𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒧𑒡𑓂𑒨𑒧𑒫𑒩𑓂𑒑𑒲𑒨 𑒖𑒰𑒞𑒱, 𑒍𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒧𑒡𑓂𑒨𑒧𑒫𑒩𑓂𑒑𑒲𑒨𑒏 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝𑒏
𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝𑒧𑒹𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒖𑒰𑒞𑒲𑒨 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝𑒧𑒹𑒿 𑒁𑒕𑒱, 𑒖𑒏𑒩𑒰 𑒋𑒐𑒢𑒏
𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒮𑒦 𑒕𑒻𑒢। 𑒂𑒠𑒲 𑒋𑒐𑒢𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒏𑒧𑒮𑒧𑒥𑒏 𑒖𑒢𑓂𑒧
𑓑𑓕𑓗𑓗 𑒄𑒮𑓂𑒫𑒲𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒪।
𑒂𑒃𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒩𑓂𑒞𑒢𑒧𑒹 𑒞𑒿 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑓀𑒬 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰𑒏 𑒪𑒛𑒱𑒨𑒰𑒥𑒏
𑒮𑒧𑒨 𑒁𑒮𑓂𑒣𑒞𑒰𑒪𑒧 𑒥𑒲𑒞𑒻𑒞 𑒞𑒿𑒨 𑒪𑒛𑒱𑒨𑒰𑒥 𑒏𑒲 𑒯𑒩𑒞 𑒂 𑒫𑒰𑒓𑓂𑒧𑒨-𑒧𑒰𑒓𑓂𑒑
𑒢𑒫𑒱𑒞𑒬𑓂𑒔 𑒏𑒲 𑒪𑒱𑒐𑒞𑒲 𑒫𑒰 𑒢𑒰𑒖-𑒢𑒰𑒞 𑒏𑒲 𑒯𑒩𑒞। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮 𑒏𑒧𑒮𑒧𑒥𑒏𑒿
𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪। 𑒅𑒢𑒴 𑒦𑒹𑒪। 𑒧𑒰𑒢𑒹 𑒫𑒰𑒓𑓂𑒑-𑒧𑒰𑒓𑓂𑒑 𑒫𑒹𑒮 𑒪𑒛𑒱𑒨𑒰𑒥 𑒕𑒱𑒢
𑒏𑒧𑒮𑒧𑒥𑒏 𑒢𑒰𑒧𑒏𑒩𑒝𑒼 𑒏𑒪𑒻𑒢 𑒂 𑒢𑒫𑒱𑒞𑒬𑓂𑒔 𑒮𑒦 𑒪𑒱𑒐𑒢 𑒏𑒪𑒻𑒢।
𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒣𑒰𑒢 𑒞𑒿 𑒣𑒰𑒢𑒏 𑒅𑓀𑒙𑒲𑒑 𑒍𑒏𑒿 𑒢𑒰𑒖 𑒮𑒦 𑒢𑒥 𑒏𑒩𑒪𑒰।
𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒋𑒐𑒢𑒏 𑒦𑒲𑒞𑒩 𑒁𑒢𑒏 𑒥𑓀𑒑𑒏 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒑𑒨𑒢-𑒑𑒨𑒢
𑒃𑒞𑒏 𑒮𑒲𑒧𑒰𑒧 𑒮𑒢 𑒏𑒯𑒖 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒦𑒲𑒞𑒩 𑒫𑒰𑒓𑓂𑒑-
𑒧𑒰𑒓𑓂𑒑𑒏 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰𑒏 𑒮𑒲𑒧𑒰 𑒮𑒦 𑒕𑒻𑒢, 𑒖𑒯𑒱𑒏 𑒁𑒢𑓂𑒞𑒑𑒞 𑒑𑒨𑒢 𑒥𑒱𑒬𑓂𑒫-

विधान लिखल कऽ देल अछि। मोन गेल जे आदिमानवक जाति जे बाप-माप पहचान छैक धरतीपर आयल अछि दिनक बच्चाक नाम-पद लिखे अछि आ बच्चाक समाजक आकृतिक हिमालयमेँ लिखे अछि। जहन परिवारक जन्म भेल नाम पद्धा। पढ़ल-लिखल समाज परिवार दुध आदि धन-धीत समाज परिवार दुध, आदन परिवारक नाम-पद्धा लिखैकाल बाप-मापकेँ जहन कलमक प्रयोजन बाप छैन तहन कलमक प्रयोजन मूद वा विषय परिवारम नहियेँ बाप छैन। बडैकाल मन बडित अछि जे 'बाबक नाम माइक कलममेँ लिखल अछि त मर्दक बात कहा बुझबहक।' तहिना मर्दक कलममेँ लिखलका मदा कहित अछि जे 'बाबा जहाँ कि दमबा कयानम माइक ग्रहण अछि.!' दोसर धु तँ गप-सप्प भेल।

कममरक नाम-पद लिखैकाल जे बाप-माप पहचान छैमली तँ आदन बाप-माप न छैमली जे न बाजम्भन कहिया ढहन अली आ न बनिया भ्रवा। तँए किए बाज-समाक विचार आदि कल-कारखानक विचार मनम थबितेना। ढबन मन आदन महिला-मजदूर, महिला-मजदूर आ नला जे कना बोलाम वा कयालयम बस्तुक जगा-बेमी कऽ देल अछि। मान पाक बोलाममँ अन्न वा कना आन बस्तुक बाबा वा आन बस्तु जगा बामर बोलामम वा आन बाम लऽ जाक अछि। पशीम बहुक ढबन पाँच बहुमँ कलकमाक सबकारी बोलामम महिला मजदूरक कतऽ कहैत आबि बदल अला।

दोसर ढबन जे अला स बडोइ, मुदा निश्चत बाप-मापक कयदरीम तँ कममर आदन बराक कंयम जना नन अल,

𑒋𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒣𑒩𑒞𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩𑒏 𑒣𑒩𑒮𑒧𑓂𑒣𑒢𑓂𑒢𑒩 𑒢𑒰𑒧 𑒢𑒰 𑒥𑒳𑒗𑒲, 𑒠𑒮𑓂𑒞𑒐𑒞 𑒂 𑒢𑒯𑒴𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒋𑒢𑒰 𑒢𑒢 𑒮𑒹𑒪𑒰। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒠𑒰𑒩𑒳-𑒧𑒰𑒮𑒳𑒏 𑒞𑒫𑒪 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒣𑒯𑒱𑒞𑒰 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒧𑒰𑒢 𑒋𑒯𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩 𑒕𑒟𑒱, 𑒞𑒐𑒢 𑒁𑒢𑒳𑒏𑒴𑒪 𑒢 𑒥𑒳𑒗𑒢𑒰 𑒢𑒰𑒔-𑒑𑒠 𑒪𑒱𑒯𑒞𑒰। 𑒥𑒰𑒞 𑒞𑒿 𑒠𑒰𑒩𑒳-𑒧𑒰𑒮𑒳𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒮𑒯𑒧𑒞 𑒫𑒢𑒪 𑒮𑒹𑒢 𑒋 𑒮𑒧𑒮𑒧𑒰𑒢 𑒣𑒱𑒪𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒧𑒮𑒧𑒰𑒢𑒲𑒮𑒿 𑒫𑒮𑓂𑒩𑒰𑒏 𑒮𑒫𑒰 𑒥𑒳𑒗𑒞𑒰। 𑒋𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒫𑒱𑒢𑒳 𑒥𑒴𑒗𑒼𑒏, 𑒧𑒰𑒢 𑒏𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒪𑒿 𑒧𑒰𑒨𑒏𑒿 𑒠𑒴𑒡 𑒢𑒯𑒱 𑒞𑒢, 𑒣𑒱𑒪𑒏𑒰𑒩 𑒫𑒮𑓂𑒩𑒰𑒏𑒿 𑒂𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒨𑒰𑒧𑒱-𑒨𑒰𑒪𑒱 𑒁𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒏 𑒩𑓀𑒑𑒩𑓀𑒑𑒣𑒢 𑒫𑒰𑒪𑒹 𑒥𑒳𑒗𑒹 𑒮𑒹𑒯 𑒋𑒢𑒰 𑒮𑒞 𑒞𑒩𑒯𑒏 𑒮𑒟𑒢 𑒣𑒱𑒪𑒏𑒰𑒩 𑒥𑒳𑒗𑒹 𑒮𑒹𑒯𑒰। 𑒠𑒰𑒩𑒳-𑒧𑒰𑒮𑒳𑒏 𑒮𑒧𑒴𑒯𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒮𑒯𑒧𑒞 𑒩𑒳𑒕 𑒫𑒢𑒪 𑒮𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒋 𑒧𑒢𑒳𑒭𑓂𑒨𑒏 𑒫𑒮𑓂𑒩𑒰 𑒮𑒲 𑒞𑒿𑒑 𑒧𑒢𑒳𑒭𑓂𑒨 𑒋𑒏𑒿 𑒖𑒳𑒪𑒢𑒰-𑒣𑒰𑒋𑒢𑒰 𑒥𑒳𑒗𑒩𑒰 𑒂 𑒧𑒢𑒳𑒭𑓂𑒨𑒏 𑒥𑒴𑒗 𑒋𑒏𑒿 𑒩𑒼𑒑𑒪𑒰 𑒣𑒲𑒞𑒲𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒰 𑒠𑒱𑒁𑒩𑒰। 𑒮𑒢𑒮𑒧𑒰𑒞𑒱 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒪𑒱𑒯𑒪𑒻𑒢 𑒋 𑒫𑒮𑓂𑒩𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒴𑒩𑒰 𑒂𑒥𑒳𑒢𑒰𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒣𑒰𑒪𑒩𑒰। 𑒢𑒰𑒧𑒢 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒋𑒯𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒂 𑒖𑒲𑒫𑒱𑒏 𑒠𑒱𑒮 𑒔𑒪𑒻𑒢 𑒞𑒯𑒢 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒣𑒼𑒫𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒥𑒯𑒻𑒢 𑒋 𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒰𑒖𑒲 𑒫𑒰𑒢𑒱 𑒪𑒱𑒯𑒪 𑒋𑒩𑒰, 𑒞𑒿 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒣𑒼𑒫𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒥𑒯𑒻𑒢 𑒋 𑒋𑒿 𑒞𑒲𑒯 𑒧𑒰𑓀𑒑𑒱 𑒑𑒳𑒋𑒩 𑒥𑒳𑒥𑒞 𑒞𑒿 𑒫𑒱𑒡𑒱-𑒫𑒱𑒡𑒰𑒢 𑒣𑒴𑒧𑒱 𑒞𑓄 𑒋𑒩𑒰𑒞𑒰। 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒞𑒿 𑒁𑒢𑒴 𑒩𑓀𑒑𑒏 𑒕𑒟𑒱𑒩𑒰। ..𑒞𑒞-𑒧𑒞 𑒥𑒳𑒗𑒹𑒞 𑒮𑒞 𑒕𑒞𑒲 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒣𑒩 𑒮𑒯𑒧𑒞 𑒞𑒪𑒲 𑒋 𑒋𑒯𑒢 𑒁𑒣𑒢 𑒪𑒴𑒩𑒱-𑒧𑒳𑒿𑒯 𑒯𑒞𑒕 𑒞𑒯𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒫𑒢𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒁𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒫𑒰𑒪𑒹 𑒥𑒳𑒗𑒹𑒞 𑒖𑒲𑒫 𑒪𑒞𑒰। 𑒮𑒣𑒰𑒠 𑒞𑒪 𑒏𑒮𑒧𑒮𑒏 𑒮𑒰𑒞𑒱𑒣𑒰𑒩 𑒥𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒢𑒰𑒔-𑒑𑒠।

𑒣𑒪𑒰𑒫𑒣𑒳𑒩 𑒂𑒯𑒢 𑒑𑒰𑒧 𑒕𑒟𑒱 𑒋𑒕𑒧 𑒫𑒱𑒫𑒱𑒡𑒞𑒰𑒏 𑒞𑒩𑒧𑒰𑒩 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒣𑒰𑒏𑒩𑒴𑒨𑒞𑒰 𑒂𑒯𑒢 𑒕𑒟𑒱𑒨𑒰 𑒋𑒯𑒢 𑒮𑒞 𑒑𑒰𑒧-𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧 𑒥𑒯𑒻𑒨𑒰। 𑒯𑒯𑒩 𑒥𑒳𑒗𑒹 𑒮𑒲 𑒋 𑒋𑒯𑒢 𑒥𑒳𑒞𑒲 𑒂𑒑𑒱 𑒪𑒑𑒾 𑒮𑒲, 𑒑𑒰𑒧 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒥𑒴𑒗𑒱𑒨,

𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰𑒏𑓀 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒼 𑒥𑒢𑓂𑒯𑒻𑒪 𑒏𑓄 𑒂𑒔𑓂𑒕𑒰𑒠𑒰𑒢 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒍 𑒥𑒰𑒣 𑒮𑒢𑓂𑒞𑒰𑒢𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒥𑒰𑒣 𑒅𑒣𑒰𑒨 𑒍𑒿 𑒧𑒰𑒿-𑒥𑒰𑒣𑒏 𑒥𑒜𑓃𑒱 𑒕𑒻𑒏 𑒞𑒿 𑒞𑒿𑒯𑒰 𑒢𑓂𑒯𑒰𑒏 𑒕𑒻𑒢 𑒧𑒰𑒧 𑒠𑒱𑒢𑒣𑒢𑒰। 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒣𑒩 𑒕 𑒞𑒿 𑒥𑒾𑒁𑒰𑒿-𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒫, 𑒍 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒦𑒲𑒞𑒩 𑒢𑒹𑒣𑒰𑒪𑒱𑒨𑒰 𑒂 𑒥𑒰𑒪-𑒥𑒔𑓂𑒔𑒰𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒂𑒃𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒥𑒢𑒪 𑒍 𑒥𑒜𑓃𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒍 𑒮𑒠𑒱𑒢𑒰-𑒮𑒠𑒱𑒢𑒰 𑒥𑒰𑒣-𑒠𑒰𑒠𑒰𑒏 𑒑𑒣-𑒮𑒣𑓂𑒣 𑒦𑒹𑒪 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒞। 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒁𑒣𑒢-𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒰𑒩𑒥𑒰𑒩, 𑒞𑒰𑒯𑒴𑒧𑒹𑒿 𑒁𑒣𑒢-𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒮𑒦 𑒥𑒢𑒱𑒨𑒿 𑒥𑒜𑓃𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒯𑒴𑒧𑒹𑒿 𑒢𑒹𑒣𑒰𑒪𑒱𑒏 𑒠𑒴𑒡𑒲 𑒥𑒢𑒥 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂𑒑𑒱-𑒪𑒰𑒑𑒏 𑒮𑒧𑒨 𑒮𑒧𑓂𑒦𑒱𑒨𑒰 𑒥𑒰𑒣 𑒦𑓄 𑒖𑒰𑒃𑒞। 𑒂𑒢 𑒑𑒰𑒧 𑒍𑒏𑒿 𑒣𑒩𑒰𑒣𑒩𑒳𑒭𑒰𑒧 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒑𑒞 𑒏𑒩𑓂𑒨𑒧 𑒠𑒹𑒫𑒥𑒢𑓂𑒢𑒰 𑒂 𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞 𑒕𑒫 𑒥𑒜𑓃𑒞𑒰-𑒥𑒜𑓃𑒞𑒲 𑒮𑒦 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒏𑒩𑓂𑒨𑒧 𑒮𑒓𑓂𑒒𑒩, 𑒮𑒓𑓂𑒒𑒠𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒅𑒞𑓂𑒞𑒩𑒫𑒰𑒞𑒲, 𑒑𑒜𑓃𑒥𑒥, 𑒢𑒲𑒢𑒰-𑒢𑒘𑒲 𑒂 𑒮𑒪𑒯𑒮𑒏 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧 𑒃𑒞𑓂𑒨𑒰𑒠𑒱 𑒮𑒦 𑒁𑒕𑒱𑒨𑒰। 𑒍𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞𑒏 𑒣𑒰𑒠𑒫𑒲 𑒏𑒩𑓂𑒨, 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒏 𑒏𑒳𑒭𑓂𑒚𑒱𑒨, 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩-𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒧 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒧𑒰𑒢𑒫𑒰𑒡𑒱𑒏 𑒧𑒰𑒢 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒏𑒩𑓂𑒨𑒧 𑒮𑒦 𑒁𑒕𑒱𑒨𑒰। 𑒁𑒢𑒹𑒏 𑒠𑒹𑒫𑒲-𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰 𑒂𑒠𑒢 𑒕𑒫𑒱𑒨𑒰 𑒍 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒏𑒩𑓂𑒨𑒧 𑒮𑒢𑓂𑒧𑒰𑒨 𑒕𑒻𑒥, 𑒞𑒿 𑒂𑒠𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒻𑒥 𑒍 𑒠𑓂𑒫𑒱𑒞𑒲𑒨 𑒏𑒩𑓂𑒨𑒧 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒖𑒱𑒞 𑒦𑓄 𑒛𑒰𑒧 𑒖𑒰𑒯𑒱𑒞𑒏 𑒕𑒻𑒥, 𑒮𑒦 𑒕𑒫𑒱𑒨𑒰। 𑒧𑒰𑒢𑒫𑒰𑒡𑒱𑒏 𑒏𑒩𑓂𑒨𑒧 𑒍𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒠𑒹𑒫𑒲-𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰𑒏 𑒣𑒫𑒧𑒰𑒠 𑒮𑒢𑓂𑒧𑒰𑒨 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒠𑓂𑒫𑒱𑒞𑒲𑒨 𑒏𑒩𑓂𑒨𑒧 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒖𑒱𑒞 𑒦𑓄 𑒁𑒧𑒰𑒨 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒦 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒿 𑒁𑒕𑒱। 𑒂𑒢𑒰, 𑒠𑓂𑒫𑒱𑒞𑒲𑒨 𑒏𑒩𑓂𑒨𑒧 𑒫𑒱𑒦𑒰𑒖𑒱𑒞 𑒍 𑒠𑒹𑒫𑒲-𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰 𑒕𑒻𑒥 𑒞𑒹𑒮𑓀𑒑 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒍 𑒕𑒻𑒥, 𑒁𑒣𑒢-𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒢𑒏𑒰𑒧𑒢𑒰𑒢𑒳𑒮𑒰𑒩 𑒏𑒥𑒳𑒪𑒰-𑒣𑒰𑒞𑒲 𑒮𑒦 𑒏𑒯𑒱𑒞 𑒕𑒻𑒥, 𑒣𑒰𑒪 𑒍𑒜𑓃𑒢 𑒢𑒣𑓂𑒣𑒰𑒢 𑒫𑒰 𑒍 𑒢𑒣𑓂𑒣𑒰𑒢 𑒮 𑒞𑒿 𑒁𑒣𑒢-𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒢𑒏𑒿 𑒢𑒣𑓂𑒣𑒞𑒢𑒰। 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒲𑒑𑒞 𑒏𑒩𑓂𑒨𑒧 𑒍 𑒠𑒹𑒫𑒥𑒢𑓂𑒢𑒰 𑒥𑒢𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒲𑒑𑒞 𑒕𑒫𑒏

(दरबारक) सामाजिक संरचना छल। दरबारक ई एक ब्राह्मण सभ शास्त्री एक शास्त्रक ज्ञानक महाराजक सभ छलाह ब्राह्मण गुरु दरभंगाक संग स नहि छल। दरभंगाक संग समाजक एकर संरचना छल। ओतय भाषा (भाषिक) केँ पढ़ैत स्थापित एकनार्थ सभ दरभंगा राजनीतिक, देश-भाषाक ल ऽ क ऽ भाषाक कए धार्मिक नाम उठलै शिक्षा तहिना विवाह-विधानक संग जीवन-सरोवरक सदाचार सदा चलित शिक्षा। पतनक बी मिथिलाक दरभंगा। ओतऽ दरभंगाक संग बदल ई कहैतकँ देखा बिना कबरा। ई दरभंगाक सभ पतिष्ठा नला भाषा, लक्ष्मीनाथ गोसाञिं सदा भनक गामम भनक दरभंगा कहैलन गुरु कुनकार दरभंगाक कहिया भा बबरारा आसन सहैना। कुनकार दरभंगाक कहि सहैन दरभंगाक भागूक पढ़ैना। ई पढ़ैन ओनसमूदक सदाचारमँ दुनकै सला। भा दरभंगाक नाम कहैल 'लक्ष्मी' वा 'स्थान' कहैल सला, ओहुम जीवनक मूल-तत्त्वक पुरजन सदा कए सला भा मूल-तात्त्विक सदा सदध्यागीकँ बनबै सला, ओहुमँ जाति-पाँतिकँ लब्धाहर मनुष्यक जीवनकँ प्रेम मानै सला। भयन जीवनकालम लक्ष्मीनाथ गोसाञिं बीससँ ओयर बीती, ओकरा मिथिलांचलम भनल सदा कदल ओहुरा; लगसँ देद-नागि गुनल सला तँय पानिक की सदत्र जीवनम छलि तकरा नीक ओकँ भा ओनैत कहैथ। भयन बो विद्यालकँ आसनाकँ ओना लक्ष्मीनाथ गोसाञिं पाठशिक निसाता कबला कलैन भा कबला कलैन।

शिक्षा संस्थानक संयम पाठ्यक्रम सभ पाठशाला संस्कृत विद्यालय छलि, बाँकी विद्यालय सभ सामान्य विद्यालय गामम नहि छलि।

पलाशपुर, मानवरमा, नवनगर, धनकवदी इत्यादि सात गाम मिला मानवरमा नामक पंचायत अछि। मिडिल स्कूल तकक पढ़ाइ पंचायतमे होइछ। पलाशपुरक संस्कृत विद्यालयमे गामक किछु छात्र जाइतक आ आना-जान गामक लोक पढ़ैत अछि। कमसर उच्च जातिक अछि तच्च जातिक बच्चा सब गामक विद्यालयमे नहि पढ़ैया। आना, संस्कृत विद्यालयमे उहिना नीक शिक्षक नहिया तहिना बच्चाकेँ, छात्रकेँ ताड़ना आ पढ़ौ-लिखैक किताब-काँपी विद्यालयमेँ नहिया। सबमेँ येह विचार अछि जे शिक्षक आ छात्र बच्चा ताड़नालयक ताड़ना करै छैक आ बच्चा आत्मसम्मान-विश्वासनयन ढहित छैक। तेँ कहब जे परिवार नहि छैन सबटा बात नहियेँ अछि। लग-पासक जे शिक्षक छैक आ अपन परिवारमेँ, सान गाममेँ विद्यालय अबै छैक मुदा जे बाहरक छैक आ छात्रक संग जीवनधारक कान छैक। परन्तु ई जीवनक संक्रमणक क्रिया। यातीम स्वस्था, सान दिन-राति नियमित कायमेँ जीवन उहिन चलल गेलाब तँ आइन जीवन न घाटा दवाता। छाया जे दबात से पलाशपुरवला अपन सोचता।

पलाशपुर गामास आ पलायकास्थाम सान आना-जान गामस उहिना किछु क्रियाम पढ़ाकायता अछि तहिना बढ़ुकायता अछिया। तच्छ बीच ऋता व्रिक्रिया चलित अछि जे उहिना किछुस ताड़ तास्छ्य तहिना जड़ सबटा नच्छय जच्छया। परन्तु ताड़-जड़ जे अछि आ गतिशीलता मनैय आ गतिहीना तँ बनैकत अछि। आन गाम उकेँ पलाशपुरस बला-बलीक विवाह-दुरागमन आ बलाक मुण्डनाम उहिना पढ़ाकायता अछि तहिना बढ़ुकायता सबटा अछिया। आना, उहिना आन समाजक (आन गामक जातीय समाजक)

𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒥𑒹𑒥𑒯𑒰𑒩 𑒣𑒪𑒰𑒢𑒥𑒳𑒩𑒰𑒧 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒣𑒪𑒰𑒢𑒥𑒳𑒩𑒏 𑒥𑒹𑒥𑒯𑒰𑒩 𑒂𑒢𑒰
𑒑𑒰𑒧𑒧 𑒁𑒕𑒱𑒨𑒻। 𑒞𑒞𑒨 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱, 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒥𑒹𑒥𑒯𑒰𑒩𑒧 𑒮𑒹𑒯𑒼
𑒫𑒱𑒫𑒱𑒡𑒞𑒰 𑒁𑒕𑒱, 𑒨𑒰𑒏 𑒖𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰𑒏 𑒣𑒹𑒪𑒢 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒂𑒢𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒂
𑒢𑒰𑒧𑒩 𑒖𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰𑒑𑒞 𑒣𑒹𑒪𑒢 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒂𑒢𑒰। 𑒞𑒞𑒨 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒰𑒞𑒱
𑒖𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒨𑒰𑒏 𑒣𑒹𑒪𑒢 𑒁𑒕𑒱 𑒂𑒠𑒳 𑒪𑒼𑒏𑒧 𑒂𑒕𑒱𑒏 𑒂𑒩𑒏𑒞𑒱𑒏
𑒯𑒱𑒮𑒰𑒥𑒮𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒫𑒱𑒞𑒱𑒢𑓂𑒢𑒞𑒰 𑒁𑒕𑒱𑒨𑒻। 𑒨𑒨𑒰𑒯 𑒫𑒱𑒭𑒧𑒞𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏
𑒢𑒱𑒨𑒧𑒣𑒴𑒩𑒹 𑒥𑒢𑒹𑒨𑒰 𑒖𑒰𑒞𑒱𑒮𑒿 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒢𑒱𑒫𑒱𑒮 𑒯𑒱𑒮 𑒥𑒢𑒹𑒞 𑒨𑒰𑒖 𑒥𑒢𑒹𑒨𑒰।
𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒮 𑒮𑒰𑒢 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒧, 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒖 𑒣𑒹𑒪𑒢 𑒁𑒕𑒱 𑒂
𑒨𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒫𑒰 𑒥𑒹𑒥𑒯𑒰𑒩 𑒥𑒯𑒱𑒞𑒰 𑒁𑒢𑒏 𑒏𑒰𑒨𑒧 𑒪𑒞𑒥𑒪-𑒣𑒞𑒥𑒪
𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒁𑒕𑒱𑒨𑒻। 𑒞𑒿𑒨 𑒏𑒞𑒼 𑒨𑒰𑒏 𑒮𑒰𑒨 𑒂𑒥𑒏 𑒣𑒹𑒪𑒢 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿 𑒏𑒞𑒼
𑒮𑒰𑒨 𑒂𑒥𑒏 𑒣𑒹𑒪𑒢 𑒁𑒕𑒱। 𑒨𑒰𑒏 𑒣𑒖-𑒖𑒨𑒏 𑒁𑒢𑒏 𑒏𑒰𑒨 𑒁𑒕𑒱।
𑒖𑒰𑒞𑒱𑒮𑒿 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒞𑒱𑒨 𑒖 𑒢𑒰𑒥𑒮 𑒖𑒿 𑒣𑒴𑒖𑒰 𑒨𑒰𑒢 𑒁𑒕𑒱, 𑒖𑒏𑒩
𑒠𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒣𑒹𑒪𑒢 𑒢𑒰𑒖𑒢𑒏 𑒨𑒭𑒰𑒞𑒱𑒏 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒹𑒥𑒰𑒧 𑒖𑒴𑒞𑒰 𑒞𑒿 𑒁𑒢𑒰𑒥𑒧
𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒞𑒱𑒨 𑒖 𑒢𑒯𑒱 𑒨𑒰𑒢 𑒞𑒿 𑒨𑒰𑒢𑒏 𑒖𑒿𑒞𑒱𑒨𑒰𑒧𑒿 𑒣𑒖 𑒣𑒴𑒞𑒱 𑒏𑒰ऽ
𑒪𑒥𑒰𑒏 𑒨𑒰𑒯𑒲।
𑒫𑒱𑒁𑒰𑒯-𑒠𑒰𑒢𑒧 𑒠𑒯𑒹𑒖 𑒪𑒲 𑒖 𑒖𑒹𑒥𑒰𑒧 𑒨𑒰𑒏 𑒠𑒼𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒞𑒲𑒧𑒿
𑒫𑒱𑒥𑒰𑒯 𑒣𑒖 𑒣𑒴𑒖𑒰 𑒠𑒰𑒖𑒏 𑒮𑒧𑒴𑒯𑒞𑒰 𑒨𑒰𑒧 𑒏𑒹𑒨𑒰 𑒞𑒹𑒥𑒰𑒧 𑒮𑒖𑒨𑒰
𑒠𑒼𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒞𑒲𑒧𑒿 𑒁𑒣𑒴𑒯𑒞𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒨𑒰𑒧 𑒏𑒹𑒨𑒰 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒿
𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒹𑒥𑒰𑒧 𑒖𑒴 𑒏𑒯𑒥 𑒖 𑒣𑒪𑒰𑒢𑒥𑒳𑒩𑒧 𑒥𑒱𑒨𑒰𑒞𑒲𑒏 𑒡𑒧𑒑𑒖𑒰𑒩 𑒢𑒯𑒱
𑒠𑒰𑒖𑒨, 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒿 𑒁𑒕𑒱। 𑒨𑒰𑒏𑒥𑒰𑒧 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒠𑒯𑒹 𑒪𑒲 𑒖
𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒮𑒰𑒢 𑒥𑒿𑒖𑒰 𑒥𑒳𑒯𑒏𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒮𑒰𑒨𑒧 𑒥𑒢𑒹𑒏 𑒣𑒱𑒨𑒰𑒧
𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒹 𑒪𑒹𑒥 𑒞𑒹𑒥𑒰𑒧 𑒖𑒮𑒰𑒢 𑒑𑒮𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒢𑒹 𑒪𑒹𑒥 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒥𑒰𑒞
𑒢𑒯𑒱𑒨𑒿 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒥𑒢𑒹𑒥𑒞 𑒪𑒹𑒥। 𑒪𑒼𑒏𑒮 𑒖𑒮𑒰𑒢𑒏 𑒁𑒢𑒏 𑒏𑒰𑒨

गुणानुकूल छथि, तेँए अपन स नहि। अपन बालक के सबहक मनकेँ मान जहिना पुनकेँ तहिना पिताकेँ मान जन्मदाताकेँ अपन धरबमेँ अपन विसबास कएल के बदल छथि। तेहाम मान तेँ मनुक्ख मान नला। किए अपना धरबमेँ सबहक विसबास अपन टरल के बदल छथि? की आस्था विसबासकेँ पुनः स्थमा कऽ नहि आनल के सकैए सभा बात नहियेँ छथि। आन गाम जकाँ पत्नीव्रताम संग-संगक गुरुआस्था कहैबला गुरु-ओमाक्ष सबहक आगमना छैक्। तेसँग गामक अपना गुरुआस्था कहैक धन्या नहि छथि सभा बात नहियेँ छथि। जहिना जाति-धर्मक नामपर तहिना कर्म-क्रियाक नामपर गुरुक बन पसरल छथि। माता-पिता लगमेँ के गुरुआस्था बन्धाकेँ नुकं छात्रा आ परिवार समाज छात्रत छन्न-भुनियाँक सभा छात्रत छथि.! बाक समाज बहिना किया कहता 'माछ द्योगार नवीनक लल छितकार छथि' तेँ किया कहता, 'माछ द्योगार पाप छी।' किया कहता, 'बमी द्योगार अहितकार छथि' तेँ किया कहता, 'कम द्योगार अहितकार छथि।' तेँ किया कहता, 'कम द्योगार हितकार छथि।' बाढ़न-बाढ़न मुँह पाँसील पगता-संगता आन गाम जकाँ पत्नीव्रताम छथिया।

सिंहद्वार नाम, मनधन नाम, कुलिधन नाम आ बन्धु नाम पाकं ओल्हा अपन-अपन सम्प्रदायक बना डरा दिन-राति लगल बहै छैहा। पाकंक अपन-अपन नाम-नाम छैना। पाकं अपन-अपन स्थलाक जाति-जाति सदंबास्था कहै छैह आ अपन रंगक प्रचार-प्रसार सभा कहित छैहा। बाक-सँ-बाक पाकं सदंबक सदंबास्थक स्थितिलाम समाजम आहिना जगजगा बदल छैन जना कना आन गामक जगजगास्था। पहिल सदंब- सिंहद्वार नामक अपन गुणा

[illegible]

[illegible]

𑒕𑒻𑒏 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒕𑒪𑒏𑒪𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒮𑒠𑒰 𑒫𑒏𑓂𑒞𑒱𑒮𑒦𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒮𑒰𑒧𑒱𑒫𑒰𑒠 𑒔𑒪𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏 𑒖𑒱𑒢𑒏𑒩 𑒮𑒠𑒵𑒬𑒰𑒑𑒧𑒹𑒿 𑒕𑒪𑒏𑒪𑒰𑒏𑒹 𑒔𑒪𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒢𑒰𑒧 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒲 𑒮 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒕। 𑒁𑒢𑒏 𑒖𑒞𑒲𑒨 𑒞𑒰𑒫𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒁𑒢𑒏 𑒏𑒪𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒂 𑒏𑒪𑒰𑒏𑒰𑒩𑒏 𑒏𑒪𑒰𑒏𑒰𑒩𑒲, 𑒧𑒰𑒢 𑒍𑒢𑒢𑒏 𑒍𑒢𑒢 𑒧𑒱𑒪𑒱𑒞 𑒢𑓄 𑒔𑒪𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒩𑒰𑒧𑒪𑒲𑒪𑒰 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒲𑒮 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢𑒰 𑒏𑒪𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒁𑒣𑒢-𑒁𑒣𑒢 𑒢𑒰𑒔 𑒠𑒹𑒐𑒰 𑒏𑒱𑒨𑒰 𑒩𑒰𑒧 𑒞𑒿 𑒏𑒱𑒨𑒰 𑒩𑒰𑒫𑒝 𑒥𑒢𑒱 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒁𑒢𑒰𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒠𑒹𑒐𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮 𑒩𑒰𑒧𑒪𑒲𑒪𑒰 𑒂 𑒩𑒰𑒮𑒪𑒲𑒪𑒰𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒯𑒼𑒃𑒕। 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒢𑒲 𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒢𑒧 𑒪𑒲𑒢 𑒯𑒼𑒃𑒕 𑒕𑒱𑒟 𑒥𑒢𑒾 𑒕𑒻𑒏 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒞𑒞𑓂𑒫 𑒣𑒩𑒧𑒰𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒕𑒱𑒟 𑒥𑒢𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒠𑒼𑒮𑒩 𑒖 𑒖 𑒕𑒻𑒏 𑒂 𑒞𑒿 𑒁𑒣𑒢-𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒢𑒑𑒰𑒖𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒞𑒪। 𑒋𑒞𑒰𑒧 𑒞𑒿 𑒧𑒰𑒪 𑒔𑒪𑒰𑒥𑒟𑒳𑒢 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒪𑒰 𑒁𑒕𑒱।

𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒁𑒣𑒢-𑒁𑒣𑒢 𑒑𑒰𑒧𑒮 𑒥𑒮𑓂𑒞𑒲𑒮𑒿 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒂 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒮𑒿 𑒥𑒮𑓂𑒞𑒲 𑒥𑒢𑒻𑒏 𑒁𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒡𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒔𑒪𑒰𑒥𑒟𑒳𑒢𑒮 𑒮𑒠𑒰 𑒁𑒕𑒱𑒨𑒰। 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒮𑒞 𑒕𑒞𑒧 𑒨𑒠𑒢 𑒩𑒰𑒧𑒰𑒏 𑒖𑒰𑒥𑒰𑒠𑒱 𑒪𑒑𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒕𑒧 𑒩𑒰𑒏-𑒖𑒰𑒮𑒥𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒮𑓀𑒏𑓂𑒩𑒧𑒝 𑒯𑒼𑒃𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒨।

𑒁𑒠𑒢 𑒮𑓂𑒫𑒞𑓀𑒞𑓂𑒩𑒞𑒰 𑒯𑒼𑒃𑒞𑒏, 𑒧𑒰𑒢 𑒁𑓀𑒑𑒥𑒞𑒲 𑒖𑒰𑒮𑒢𑒮𑒿 𑒧𑒳𑒏𑓂𑒞 𑒠𑒩𑒰𑒏 𑒯𑒼𑒃𑒞𑒏, 𑒮𑒧𑒨𑒏 𑒣𑒖 𑒢𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿𑒨 𑒢 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒨𑒰𑒠𑒴𑒏 𑒣𑒖 𑒢𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒢 𑒥𑒲𑒞𑒰𑒢𑒏, 𑒖 𑒁𑒰𑒖𑒏𑒲𑒏 𑒩𑒠𑓂𑒠𑒼𑒥-𑒞𑒱𑒠𑓂𑒠𑒼𑒥 𑒥𑒠𑒪𑒏 𑒣𑒩𑒱𑒞𑒱𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑓀𑒔𑒪𑒏 𑒦𑒴𑒧𑒱 𑒮𑒞 𑒕𑒱𑒢 𑒖𑒢𑒥 𑒩𑒯𑒪 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒖𑒢𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒜𑒱 𑒮𑒠𑒰 𑒩𑒯𑒥 𑒏𑒩𑒞। 𑒖𑒕𑒧𑒿 𑒑𑒩𑒲𑒥𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒑𑒩𑒲𑒥𑒲𑒨𑒰 𑒮𑒞 𑒕𑒱𑒢𑒮𑒿 𑒁𑒰𑒥𑒱𑒨 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒋𑒞𑒰𑒮𑒏 𑒪𑒰𑒏 𑒖𑒩 𑒥𑒢𑒰-𑒥𑒢𑒰 𑒧𑒰𑒢 𑒮𑒰𑒧𑒴𑒯𑒱𑒏 𑒏𑓀𑒣𑒧 𑒠𑒮-𑒥𑒲𑒮, 𑒣𑒔𑒲𑒮-𑒣𑒔𑒰𑒮, 𑒏𑒱𑒮𑒰𑒢𑒲 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒮𑒿 𑒖𑒳𑒛𑒪 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒢𑒨𑒰𑒪𑒏

𑒠𑒳𑒥𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒕𑒾𑒿𑒛𑓃𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒂𑒮𑒰𑒧, 𑒥𑓀𑒑𑒰𑒪 𑒡𑒩𑒱 𑒏𑒧𑒰𑒃𑒪 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒪𑒰। 𑒣𑒪𑒰𑒨𑒢𑒫𑒰𑒠𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒦 𑒮𑒰𑒪-𑒮𑒰𑒪 𑒦𑒩𑒱 𑒮𑒰𑒪𑒏 𑒕𑒍 𑒧𑒰𑒮, 𑒡𑒢𑒩𑒼𑒣𑒢𑒲𑒮𑒿 𑒡𑒢𑒏𑒙𑒢𑒲 𑒡𑒩𑒱 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧𑒲𑒝 𑒕𑒾𑒛𑓃𑒰𑒏 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒪𑒰। 𑒏𑒪𑒏𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒢𑒑𑒩𑒏 𑒔𑒰𑒨 𑒥𑒑𑒰𑒢𑒏 𑒖𑒏𑒰𑒿 𑒞𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒪, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑒪-𑒏𑒰𑒩𑒐𑒰𑒢𑒰 𑒂 𑒏𑒧𑓂𑒣𑒢𑒲𑒮𑒦𑒏 𑒖𑒓𑓂𑒑𑒪-𑒗𑒰𑒛𑓃 𑒞𑒿 𑒖𑒩𑒴𑒩 𑒕𑒪। 𑒑𑒧𑒻𑒨𑒰 𑒧𑒖𑒠𑒴𑒩, 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒻𑒥𑒪𑒰 𑒧𑒖𑒠𑒴𑒩 𑒖𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒪𑒏𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒖𑒰𑒨 𑒪𑒑𑒪𑒰 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒡𑒳𑒢𑒏𑒢 𑒢𑒰𑒦𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒥𑒠𑒪𑒪𑒻𑒢𑒰। 𑒖𑒏𑒩𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒨, 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒣𑒪𑒰𑒨𑒢𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒖𑒞𑒹𑒏 𑒪𑒰𑒦𑒏 𑒯𑒰𑒢𑒱𑒏, 𑒖𑒞𑒹𑒏 𑒯𑒰𑒢𑒱𑒏 𑒞𑒪 𑒖𑒏𑒩 𑒢 𑒏𑒰𑒖𑒏 𑒮𑒧𑒨 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒡𑒰𑒩𑒱𑒞 𑒕𑒪𑒻 𑒂 𑒢 𑒧𑒖𑒠𑒴𑒩𑒲 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒡𑒰𑒩𑒱𑒞 𑒕𑒪𑒻, 𑒠𑒱𑒢 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒪𑒰। 𑒖𑒹𑒞𑒹𑒏 𑒖𑒯𑒱𑒢 𑒏𑒰𑒖 𑒥𑒜𑓃𑒪 𑒞𑒹𑒞𑒹𑒏 𑒞𑒯𑒱𑒢 𑒧𑒖𑒠𑒴𑒩𑒲 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒜𑓃𑒪𑒻𑒏। 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒠𑒱𑒢 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒞𑒏 𑒮𑒰𑒢 𑒖𑒯𑒱𑒢 𑒠𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒂𑒓𑒢𑒥𑒰𑒩𑒲𑒏 𑒂𑒢𑓂𑒠𑒼𑒪𑒢 𑒔𑒪𑒱 𑒥𑒜𑓃𑒪 𑒕𑒪, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧𑒲𑒝 𑒕𑒾𑒛𑓃𑒰𑒏𑒹𑒿 𑒂 𑒔𑒰𑒨 𑒢𑒯𑒱 𑒣𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒣𑒪 𑒕𑒪 𑒖𑒹 𑓑𑓘𑓗𑓙 𑒃𑒮𑓂𑒫𑒲𑒏 𑒣𑒪𑒰𑒨𑒱𑒞 𑒣𑒩𑒖𑒢𑒏, 𑒞𑒰𑒫𑒞𑒏 𑒖𑒹 𑒮𑒧𑒨 𑒕𑒪 𑒞𑒃 𑒮𑒧𑒨𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒕𑒲।

𑒥𑒰𑒯𑒩-𑒦𑒲𑒞𑒩, 𑒑𑒰𑒧𑒮𑒿, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒣𑒪𑒰𑒨𑒢𑒫𑒰𑒠𑒏 𑒮𑒧𑒴𑒯 𑒏𑒰𑒨𑒧, 𑒮𑒰𑒢 𑒠𑒮-𑒥𑒲𑒮, 𑒣𑒔𑒲𑒮-𑒣𑒔𑒰𑒮𑒏 𑒖𑒞𑓂𑒟𑒰 𑒥𑒢𑒱 𑒏𑒪𑒏𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒮𑒦 𑒖𑒰𑒨 𑒪𑒑𑒪 𑒕𑒪𑒰। 𑒣𑒪𑒰𑒨𑒢𑒫𑒰𑒠𑒮𑒿 𑒮𑒦 𑒣𑒰𑒢-𑒮𑒰𑒞 𑒂𑒠𑒧𑒲 𑒮𑒰𑒪-𑒮𑒰𑒪, 𑒮𑒰𑒢 𑒮𑒰𑒪𑒏 𑒂𑒚-𑒢𑒍 𑒧𑒰𑒮, 𑒏𑒪𑒏𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒧𑒪𑒱𑒨𑒰-𑒧𑒖𑒠𑒴𑒩𑒏 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒩𑒥𑒰 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒪𑒰। 𑒥𑒩𑒮𑒰𑒞𑒏 𑒮𑒧𑒨𑒧 𑒏𑒰𑒖𑒧 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒧𑒲 𑒂𑒥𑒻 𑒕𑒪, 𑒮𑒰𑒢 𑒖𑒯𑒱𑒢 𑒏𑒰𑒖 𑒏𑒧𑒱 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒪, 𑒞𑒯𑒱𑒢 𑒂 𑒮𑒦 𑒑𑒰𑒧 𑒂𑒥𑒱 𑒖𑒹𑒚𑒲𑒏 𑒏𑒰𑒖𑒧𑒿 𑒣𑒳𑒢𑓁 𑒖𑒳𑒞𑒱 𑒖𑒰𑒃 𑒕𑒪𑒰। 𑒥𑓀𑒑𑒰𑒪𑒧 𑒂𑒣𑒢𑒰 𑒮𑒦𑒧𑒿 𑒥𑒮𑒲 𑒥𑒩𑒠𑓂𑒠𑒰 𑒪𑒰𑒃𑒟𑒰, 𑒮 𑒥𑒰𑒯𑒩-𑒦𑒲𑒞𑒩 𑒮𑒰𑒪 𑒢𑒯𑒱, 𑒮𑒦 𑒮𑒰𑒪 𑒪𑒰𑒃𑒟𑒰। 𑒥𑓀𑒑𑒰𑒪𑒏 𑒡𑒰𑒢𑒲𑒮𑒿 𑒖𑒯𑒱𑒢 𑒮𑒰𑒢𑒮𑒴𑒢 𑒥𑒢𑒻𑒞 𑒂𑒥𑒲 𑒂𑒢𑒳𑒏𑒴𑒪 𑒂𑒣𑒢𑒰 𑒮𑒦𑒏𑒿 𑒥𑒩𑒠𑓂𑒠𑒰 𑒪𑒰𑒃𑒟𑒰।

अपनेक बहुत देखल, किसानी जीवनक अनेक बात गीत सन छल। अपना गामक ओ किसानक जीवन छल आ आदत बनल छल ओ बहुत लगाव धनरोपनी गीत छल आ अगहनमे जेहन धान तैयार होइ छल सेहन धान आबि जाइ छल, तहिना धनकटनी होइ छल। ओहिना अपना गामक लोकक (जन संख्याक) मजदूरता अछि तहिना गामक मजदूरता अछिये ओहुना उपजाउ भूमि कम अछिये। ओहन मध्य मिथिलाक दश नऽ बदल अछि। मध्य मिथिलामे ओहिना लोकक मजदूरता अछि तहिना गामक अछिये। ओ धान नागम नहि अछि। मिथिलांचलक ओ दुलरिया-जतबरिया नाग अछि आठम ओहिना जनसंख्याक पतनाहल अछि तहिना गामो पतनाहल अछिये। ओकर जीवन कंठ अहेना बाढ़न अछि ओ ओहिना कम-कम नदियाँ गाम अछि तहिना मध्य नागम कमक बीच बचि-बचि बँच-बँचला गाम अछि।

अहेन तक देखन छेताक मजदूर आदन नहि बनि सकल छल ओ अपन जमीनमे काज करैत। अपन जमीनक मान तल आदन भूमिक किनक कना काजक पूजा करन छैन। मान तल ओ किनक काज करैक तीन-तरीकाक देखना छैन। किनक म नहि छैन ओ अपन जमीन कना काज मिलैज आदना अमिम सीमापर पहुँच पाल नहि पलौं। कना काज करैक देखना मनुष्यमे जेहन आबि जाइत तहन आठ काजक तीत-मीठ मान नीक-बेजाय सहा बुझय लगैत। काजक तँ अपन पचिल अछिये। कना काज बाढ़न अछि ओठम भूममँ बमी भूमिक नहोर आ कना काज बाढ़ना तँ अछिये ओठम भूमक अपन भूमिक कम नहोर। देखन

𑒁𑒯𑒹𑒢 𑒕𑓂𑒕 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒳𑒗𑒻𑒨। 𑒂 𑒥𑒰𑒞𑒏 𑒥𑒳𑒗𑒻𑒨 𑒖 𑒥𑒰𑒣-𑒠𑒰𑒠𑒰 𑒕𑒪𑒰 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒪𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰। 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒂𑒨𑒳 𑒠𑒱𑒢 𑒥𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒑𑒹𑒪। 𑒂𑒥𑒏𑒰 𑒕𑓂𑒕 𑒅𑒚𑒻𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒻 𑒖 𑒑𑒞𑒱𑒬𑒲𑒪𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒑𑒞𑒱𑒬𑒲𑒪 𑒥𑒢𑒋 𑒣𑒚𑓃𑒻𑒨। 𑒁𑒣𑒢 𑒏𑒯𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒅𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒨 𑒥𑒢𑒻𑒥𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒞𑒻𑒨𑒼 𑒥𑒰𑒞 𑒞𑒿 𑒞𑒞𑓂𑒫 𑒥𑒠𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖 𑒂𑒠𑒱𑒢𑒰 𑒫𑒰𑒧𑒢 𑒯𑒧𑒱𑒏𑒰𑒏𑒿 𑒧𑒖𑒠𑒴𑒩𑒲 𑒞𑒢𑓂𑒢𑒹 𑒕𑒻, 𑒞𑒞 𑒠𑒥𑒢𑒏𑒿 𑒮𑒧𑒰 𑒞𑒢𑓂𑒢𑒹 𑒖𑒕𑓂𑒕𑒰। 𑒑𑒹𑒢𑒰𑒧 𑒨𑒏𑒢𑓂𑒢𑒰 𑒥𑒰𑒞 𑒂𑒢𑒰 𑒁𑒕𑒱, 𑒂 𑒁𑒕𑒱 𑒖 𑒥𑒰𑒣𑒠-𑒞𑒣𑒠 𑒥𑒜𑓃𑒏 𑒂𑒠𑒱𑒧𑒰 𑒠𑒥𑒢 𑒕𑒪 𑒞𑒯𑒱𑒨𑒧𑒿 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒂 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒠𑒜𑓃 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒥𑒰𑒕𑒢 𑒏𑒢𑒋 𑒖𑒋 𑒪𑒑𑒪 𑒕𑒪𑒰। 𑒂𑒢𑒰, 𑒡𑒢𑒳𑒮𑒡𑒰𑒩𑒲𑒏 𑒮𑒧𑒮 𑒕𑒳𑒙𑒪𑒰 𑒥𑒜𑓃𑒻𑒢 𑒖 𑒂𑒜𑓃𑒢 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒐𑒹𑒞-𑒣𑒕𑒰𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒜𑓃𑒢 𑒞𑒿 𑒥𑒑𑒰𑒠 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒢 𑒠𑒥𑒢𑒰𑒏𑒿 𑒖𑒲𑒫𑒋 𑒣𑒚𑓃𑒞𑒻 𑒖 𑒁𑒣𑒢 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒕𑓂𑒕𑒪 𑒞 𑒂𑒠𑒱𑒢𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒖 𑒪𑒴𑒩𑒱 𑒮𑒲𑒜𑓃𑒢 𑒕𑒲 𑒂 𑒂𑒜𑓃𑒢 𑒠𑒥𑒢𑒰𑒏𑒿 𑒞𑓄 𑒖𑒑𑒰𑒞 𑒞𑒜𑓃𑒢 𑒢 𑒂𑒏𑒢𑒰 𑒁𑒣𑒢 𑒂𑒏𑒿 𑒮𑒞 𑒠𑒱𑒢 𑒏𑒮𑒰𑒕𑓂𑒕𑒏 𑒂𑒢𑓂𑒢𑒰 𑒥𑒢𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒔𑒪𑒻𑒞 𑒥𑒜𑓃𑒞𑒰। 𑒮𑒕𑓂𑒕𑒰 𑒮𑓀𑒑𑒏 𑒏𑒞𑒧𑒿 𑒥𑒠𑒪 𑒑𑒰𑒧𑒰 𑒂 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒁𑒕𑒱𑒨। 𑒮𑒰𑒢 𑒁𑒢𑓂𑒢-𑒣𑒰𑒢𑒱𑒏 𑒐𑒹𑒞𑒲-𑒣𑒕𑒰𑒩𑒲𑒏 𑒏𑒞𑒧𑒿 𑒪𑓄 𑒏𑓄 𑒑𑒰𑒕𑒲-𑒥𑒱𑒩𑒕𑒲, 𑒐𑒢𑒰-𑒐𑒥𑒩𑒰𑒢𑒱𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒧𑒰𑒪𑒰-𑒖𑒪 𑒂 𑒐𑒳𑒢𑒰-𑒥𑒳𑒗𑒰𑒥 𑒥𑒢𑒰𑒣𑒞𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒁𑒢𑒏 𑒏𑒞 𑒑𑒰𑒧𑒧 𑒁𑒕𑒱। 𑒂𑒕𑓂𑒕𑒧𑒿 𑒥𑒰𑒣𑒞𑒰 𑒧𑒰𑒮 𑒏𑒢𑒰-𑒢-𑒏𑒢𑒰 𑒏𑒞 𑒔𑒪𑒻𑒏 𑒮𑒧𑒨 𑒥𑒜𑓃𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒧 𑒮𑒞 𑒪 𑒢𑒯𑒱।

𑒂𑒢𑒰, 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒕𑓂𑒪𑒰𑒏𑒧 𑒮𑒰𑒢 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑓀𑒔𑒪𑒧 𑒥𑒰𑒞𑒱-𑒢𑒲𑒞𑒱𑒏 𑒨𑒳𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒂𑒕𑓂𑒕𑒨 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒞 𑒠𑒱𑒢𑒧𑒿 𑒥𑒠𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒏𑒩 𑒂𑒞𑒱 𑒏𑒥𑒞𑒰 𑒥𑓀𑒑𑒰𑒪𑒏 𑒐𑒰𑒛𑓃𑒲𑒧𑒿 𑒅𑒚𑒪 𑒧𑒰𑒢𑒮𑒴𑒢 𑒂 𑒅𑒞𑒩𑒥𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒣𑒯𑒰𑒛𑓃 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒰𑒢 𑒯𑒱𑒧𑒰𑒪𑒨𑒏 𑒯𑒱𑒧𑒐𑒛𑓃 𑒢𑒰𑒑𑒧𑒿 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒪 𑒥𑒩𑓂𑒤𑒲𑒪𑒲 𑒣𑒰𑒢𑒱𑒧𑒿 𑒔𑒾𑒛𑓃-𑒕𑒼𑒙𑒰 𑒢𑒠𑒲𑒏 𑒖𑒪 𑒥𑒱𑒕𑓂𑒪𑒰𑒨𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑒳𑒢𑒪-𑒥𑒳𑒗𑒪 𑒥𑒰𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖 𑒥𑒰𑒣𑒠

बखक बेटी नहि पल्लान्त कथानुसार मिथिला नरेश राजा जनक जखन अपन हाथे हर जोतलैन, तखन बेटिया सन्तान सा सीता सन जग-जननी बनिया नहलेन। सपाद तँ जीवन भी, अपन हाथ जखन अपन एता सा सनाक नार हथिया लत तखन पागिनाज जनक जनकँ राकल्प हाथ अग्निकुण्ड तँ एासर हाथ अमक छाती पर सकैया।

अपना संग एबनक कज एख धनुषधारीकेँ रातक विवाह सनस जागिप जुकल छलेन ज जँ बन्या आदुना पलैत बदत तैया पनिवारस कहिया जुख-एनित्रा नहि सीता। बेटास पिताक पत्र नऽ बदल अछि, आना आजुक पनिवत्तस पनिवारक सान पेछला पीतीकँ नाति बेगला पीतीक संस्कारक संगीकार नल ज बदल अछि। जखन माता-पिताकँ स्वयक अनस्थास कना खगता नन, बन्या-पुतादुसँ संतापजनक पूति हासरा तँ माता-पिताक विसबास बन्या-पुतादुपर बनित अछि, जसरँ आ नस्वाक पालक कापस खूदपस अंकित नरूप जसरा।

बीस बखक अनस्थास एबनकँ अपन ससिपोत नाप- कुलेसरकँ नँप नलेन। कुलेसर तीन सालसँ कलकत्तास बहि बदल छैथ। अखन तकक जीवनक जुनियाँ ज एबनक छल तरूस पालपाक जना अन्नार बातिस पान निकलल, तहिना कुलेसरकँ नँप नलापर एबनकँ नला कुलेसर अपन पेछला, सान कलकत्ता जसरँ पहिलुक जिनगीक हिस्सा सुनबैत अखुनक जिनगीपर आबि तखन गँप्पकल जखन सुखसँ अपन खसलै- 'एख धुनि जखन एखक सना कबैक अछि तखन जुनियाँ कतबा बंगक

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

𑒏𑒳𑒪𑒹𑒮𑒩 𑒮𑒠𑒰 𑒔𑒢𑒢 𑒍𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒱𑒢𑒳 𑒠𑒪𑒰𑒪-𑒥𑒱𑒔𑒾𑒪 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒓𑒹 𑒏𑒪𑒏𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒥𑒼𑒪𑒰𑒨𑒥 𑒔𑒜𑓃𑒪𑒻𑒢 𑒍 𑒑𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒮𑒢𑒞𑒥𑒠𑒿 𑒏𑒪𑒏𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒧𑒖𑒳𑒂𑒥𑒰𑒪 𑒮𑒯𑒱। 𑒍𑒯𑒻𑒢 𑒠𑒮𑒳𑒂𑒥𑒰𑒪 𑒮𑒦𑒻𑒢 𑒏𑓄 𑒮𑒰𑒑𑒴 𑒥𑒯𑒾𑒑 𑒞𑒯𑒻𑒢 𑒮𑒞 𑒣𑒲𑒍 𑒧𑒖𑒳𑒂 𑒍𑒏𑒯𑒞 𑒕𑒏𑓂𑒏𑒰 𑒥𑒰𑒏𑒩 𑒮𑒰𑒢 𑒚𑒴 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒳𑒗𑒥 𑒍 𑒮𑒰𑒪𑒠 𑒮𑒰𑒥𑒰 𑒥𑒰𑒏𑒞𑒲𑒮 𑒚𑒏𑓂𑒏𑒲𑒮𑒿 𑒠𑒴𑒥 𑒏𑒪𑒏𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒥𑒼𑒮𑒿 𑒞𑒱𑒢 𑒕𑒪𑒰। 𑒮𑒰𑒏𑓂𑒏 𑒮𑒮𑒣𑒮 𑒍𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒮𑒣𑒢𑒰 𑒮𑒥𑒠𑒏 𑒠𑒴𑒥𑒍 𑒕𑒪𑒰 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒠𑒳𑒢𑒏 𑒮𑒞𑒏 𑒕𑒪𑒻𑒢।

𑒏𑒳𑒪𑒹𑒮𑒩𑒏 𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒕𑒯 𑒮𑒰𑒪 𑒣𑒯𑒱𑒢𑒹 𑒧𑒩𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒐𑒱𑒢 𑒞𑒿𑒋 𑒏𑒳𑒪𑒹𑒮𑒩𑒣𑒩 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒦𑒰𑒩 𑒣𑒛𑓃𑒱 𑒑𑒹𑒪, 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒍 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒫 𑒏𑒳𑒪𑒹𑒮𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒕𑒪𑒻𑒢 𑒮𑒹 𑒔𑒢𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒪𑒻𑒢। 𑒏𑒱𑒋 𑒞𑒿 𑒔𑒢𑒢𑒏 𑒣𑒱𑒞𑒰 𑒡𑒢𑒳𑒭𑒡𑒰𑒩𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒖𑒲𑒫𑒱𑒞 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒣𑒩𑒱𑒫𑒰𑒩𑒏 𑒦𑒰𑒩 𑒔𑒢𑒢𑒣𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒕𑒪𑒻𑒢 𑒞𑒿𑒋 𑒍 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒫 𑒏𑒳𑒪𑒹𑒮𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒕𑒪𑒻𑒢 𑒮𑒹 𑒔𑒢𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒪𑒰। 𑒁𑒣𑒢 𑒁𑒢𑒳𑒦𑒫𑒏 𑒯𑒱𑒮𑒰𑒥𑒮𑒿 𑒏𑒳𑒪𑒹𑒮𑒩 𑒥𑒰𑒖𑒪 𑒕𑒪𑒰। 𑒑𑒰𑒕𑒲𑒏-𑒑𑒰𑒕𑒲 𑒢𑒴𑒢𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒯 𑒔𑒢𑒢 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒦𑒻𑒨𑒰, 𑒯𑒧𑒯𑒴𑒿 𑒏𑒪𑒏𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒖𑒰𑒋𑒥। 𑒁𑒯𑒲𑓀 𑒮𑓀𑒑 𑒩𑒯𑒥।"

𑒏𑒳𑒪𑒹𑒮𑒩 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑓀𑒑 𑒖𑒰𑒃𑒧𑒹 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒯𑒩𑓂𑒖 𑒢𑒯𑒱। 𑒍𑒯𑒱𑒢 𑒔𑒠 𑒡𑒳𑒢𑒱 𑒏𑒞𑒼 𑒜𑒹𑒥𑒠 𑒞𑒿 𑒍𑒚𑒰𑒧 𑒣𑒱𑒚 𑒍𑒏𑒹𑒿 𑒪𑒰𑒪 𑒥𑒮𑒲 𑒞𑒥𑒞 𑒞𑒹𑒚𑒰𑒧 𑒢 𑒩𑒯𑒥 𑒢𑒲𑒏 𑒯𑒋𑒞। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒥𑒱𑒢𑒰 𑒧𑒰𑒞𑒰-𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒥𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒢𑒢 𑒏𑒞𑒼 𑒍𑒥𑒠𑒰।"

𑒔𑒢𑒢 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒖𑒰𑒃𑒧𑒹 𑒏𑒞 𑒠𑒱𑒢 𑒪𑒑𑒞?"

𑒏𑒳𑒪𑒹𑒮𑒩 𑒥𑒖𑒪𑒰-

"𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒯𑒱, 𑒮𑒣𑒢𑒰 𑒢𑒏𑓂𑒏 𑒯𑒞𑒠 𑒞 𑒞𑒧𑓂𑒯𑒢𑒰𑒞 𑒯𑒧𑒩𑒰

ओकर आ काका कऽ बाबा कऽ छलहा। मुन्ना माता-पिताक विवाह नव बिना छ। हम लऽ छबद तँ हमरा न चाही हएत। मुदा सगर न कहता छ। पापॉं पापला कऽ ओकरनकँ लऽ गेलै आ छ। कामतै स गाबि-गाबि ललस्ला।"

सपना छनेत कुलेसर सपन बैसला छिनगी ओहि बाछल ल्ला मुन्ना स ओकर नहि बुझि पबैत। आबा, ओकरस सहेन आ विवाह नहि छगल ल्लैन छ माता-पिता की ल्लीया आ कुनकाब विवाह आ जीवन की ल्लिबौना। तँए कुलेसरक विवाहकँ पबनाहि कान बिना ओकर पुनः बछला-

"बैया, छहिया कलकमा छया लगब तहिया हमरा कहबा। हमहूँ छयाब।"

ओकरक छिह्न ओहि कुलेसर बछला-

"बौआ, बाबूकँ तूँ नहि पुछबहुन तँ हमरा पुछबैन मुन्ना बिनु विवाह काना लऽ छबदा।"

ओकर बछला-

"हमरा कहबैना। सहाँ काबी-ल कहबैना।"

ओकरक बात सुनि कुलेसरक मन मानि गेलैन आ तन सपन कुनू बाबूतस विवाहि लत स बमी नीक हएत।

पनबद छिनक पल्लाछत कुलेसर छहेन कलकमा छछक बैयारी कलैन तँ मनस छगलैन छ नीक हएत छ दू छिन पहिनहि ओकर बैताम छ कुनू बाबूतक बीज मामा-मामी गय-सब कबबा। मनस कूछा छगलैन छ छहेन सहनतक छिनगी बनौन ल्ली तहेन चाचा-नुकी चालि पकछैक कान हगता आल्ला। कछ न

𑒞𑒰𑒏𑒩 𑒕𑒱𑒢𑒑𑒱𑒨𑒰 𑒫𑒰 𑒮𑒧𑒮𑒰𑒩𑒏 𑒑𑒫𑒰𑒯𑒲 𑒠𑒹𑒞𑒃 𑒮𑒹𑒯𑒼।
𑒖𑒰𑒞 𑒠𑒱𑒢 𑒏𑒳𑒪𑒹𑒮𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒪𑒏𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒖𑒃𑒮𑒿 𑒮𑓀𑒑𑒲𑒏 𑒅𑒔𑒰𑒩𑒪 𑒢𑒰𑒃 𑒪𑒑𑒪𑒻𑒢, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂𑒥 𑒫𑒰 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒕𑒻𑒏 𑒖𑒹 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒞𑒲𑒣𑒳𑒩𑒧𑒹 𑒖𑒹 𑒑𑒰𑒛𑓃𑒲 𑒣𑒏𑒛𑓃𑒥 𑒥𑒑𑒰𑒠 𑒑𑒰𑒛𑓃𑒲 𑒞𑒰𑒥𑒞𑒰 𑒫𑒰 𑒮𑒱𑒨𑒰𑒪𑒠𑒯 𑒖𑓀𑒏𑓂𑒬𑒢 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔𑒰 𑒠𑒹𑒞। 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒞𑒲𑒣𑒳𑒩 𑒞𑒿 𑒮𑒛𑓃𑒏𑒹 𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰 𑒕𑒻𑒪 𑒕𑒲..।
𑒖𑒃 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒦𑒹𑒪 𑒏𑒪𑒏𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒖𑒃𑒮𑒿𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩, 𑒮𑓀𑒑𑒲 𑒮𑒹𑒯𑒼𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒏𑒳𑒪𑒹𑒮𑒩 𑒏𑒯𑒢 𑒕𑒪𑒰 𑒞𑒃 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒠 𑒧𑒰𑒋𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒥𑒱 𑒥𑒹𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒧𑒰𑒋 𑒞𑒿 𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒏𑒯𑒻𑒪 𑒏𑒯𑒪𑒻𑒢 𑒩𑒯𑒱। 𑒏𑒪𑒏𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒥𑒲𑒔 𑒏𑒳𑒪𑒹𑒮𑒩 𑒏𑒯𑒢𑒏 𑒮𑒠𑒮𑓂𑒨 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒪 𑒕𑒻𑒏 𑒖𑒹 𑒏𑒯𑒢𑒏 𑒮𑒠𑒮𑓂𑒨 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒧𑒹 𑒮𑒢𑒧𑒹𑒿 𑒅𑒣𑒫𑒢 𑒩𑒯𑒱। 𑒞𑒿𑒋 𑒏𑒪𑒏𑒞𑓂𑒞𑒰𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒲𑒏 𑒮𑒧𑒨 𑒕𑒰𑒛𑓃𑒱 𑒩𑒮𑓂𑒞𑒰 𑒮𑒧𑒨 𑒏𑒳𑒪𑒹𑒮𑒩 𑒧𑒢-𑒧𑒢 𑒏𑒢𑒰𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒖𑒰𑒏 𑒞𑒿 𑒧𑒰𑒋𑒥𑒏 𑒞𑒢𑓂𑒧𑒨 𑒧𑒰𑒋𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒠 𑒕𑒲, 𑒢𑒃 𑒏𑒯𑒢𑒰 𑒖𑒰𑒋𑒥। 𑒏𑒪𑒏𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒖𑒃𑒮𑒿𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒲 𑒔𑒪𑒱 𑒖𑒰𑒋𑒞 𑒞𑒿 𑒔𑒪𑒱 𑒖𑒃𑒞, 𑒩𑒧𑒑𑒪𑒰 𑒞𑒿 𑒖𑒃𑒮𑒿𑒨 𑒮𑒏𑒹 𑒕𑒲, 𑒞𑒢𑓂𑒧𑒨 𑒖𑒿 𑒠𑒹𑒥𑒢 𑒖𑒰𑒋𑒞 𑒞𑒿 𑒂𑒢𑒰 𑒮𑓀𑒑𑒲 𑒠𑒹𑒫 𑒏𑒯𑒞𑒰। 𑒢𑒪 𑒞𑒿 𑒮𑓀𑒑𑒲𑒏 𑒅𑒔𑒰𑒩𑒪 𑒖𑒰𑒞𑒫 𑒢 𑒖𑒹 𑒑𑒰𑒛𑓃𑒲𑒧 𑒑𑒨-𑒧𑒨𑓂𑒨 𑒏𑒢𑒱𑒞𑒰𑒥 𑒢𑒰𑒕𑒱 𑒫𑒰 𑒅𑒚𑒻𑒢 𑒫𑒰𑒯𑒢𑒏 𑒏𑒞𑒹, 𑒦𑒰𑒢 𑒑𑒰𑒛𑓃𑒲𑒧𑒹𑒿 𑒫𑒰𑒯𑒢𑒏, 𑒏𑒢𑒫𑒰 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒥 𑒞𑒚𑒻𑒢 𑒨𑒰𑒢𑒰-𑒨𑒰𑒢𑒲𑒏 𑒂𑒑𑒧𑒢𑒰𑒠𑒱 𑒠𑒳𑒩𑒫𑒰 𑒖𑒹 𑒨𑒰𑒥 𑒢 𑒨𑒰𑒥𑒰 𑒪𑒱𑒩𑒫𑒰। 𑒏𑒳𑒢𑒴 𑒏𑒞𑒹 𑒏𑒯𑒢𑒰 𑒩𑒧𑒰𑒡 𑒕𑒼𑒛𑓃 𑒕𑒲। 𑒅𑒚𑒻𑒢 𑒮𑒢𑒳𑒠 𑒕𑒲, 𑒮𑓀𑒑𑒧 𑒧𑒳𑒿𑒯 𑒩𑒯𑒱 𑒞𑒚𑒻𑒢 𑒖𑒿 𑒪𑒑𑒰𑒧 𑒥𑒹𑒧𑒪 𑒧𑒳𑒿𑒯𑒥𑒪𑒰 𑒧𑒢𑒳𑒭𑓂𑒨𑒰𑒧𑒹𑒿 𑒧𑒳𑒿𑒯𑒧𑒱𑒪𑒰𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒨𑒰𑒪 𑒠𑒨𑒰𑒞 𑒞𑒚𑒻𑒢 𑒏𑒱 𑒑𑒰𑒧 𑒣𑒼𑒥𑒫𑒻𑒪 𑒖𑒢𑒰 𑒢𑒢 𑒕𑒲...। 𑒧𑒰𑒡𑒹𑒞 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒻𑒞 𑒏𑒳𑒪𑒹𑒮𑒩 𑒩𑒧𑒢 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩, 𑒏𑒪𑒏𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒖𑒢𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩, 𑒧𑒲𑒏𑒨𑒥 𑒪𑒞𑓂𑒞𑒰𑒏 𑒏𑓄 𑒢𑒯𑒱 𑒪𑒪𑒻𑒢 𑒖𑒹 𑒨𑒠𑒱𑒢 𑒧𑒰𑒋𑒥 𑒖𑒰𑒋𑒥, 𑒂𑓀𑒑𑒢𑒰𑒧𑒹𑒿 𑒨𑒰𑒪𑒰 𑒣𑒘𑓂𑒔𑒰𑓀𑒑𑒞 𑒠𑒹𑒫𑒢 𑒥𑒼𑒪𑒰𑒧 𑒖𑒰𑒋𑒥 𑒫𑒰 𑒂𑓀𑒑𑒢𑒰𑒧 𑒖𑒹

𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒠𑒹𑒪𑒟𑒱 𑒞𑒏𑒩 𑒁𑒢𑒳𑒏𑒴𑒪 𑒮𑒧𑒨 𑒥𑒢𑒰 𑒏𑒼𑒢𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒖𑒰𑒨𑒞।
𑒁𑒣𑒢 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒡𑒰𑒩𑒱𑒞 𑒮𑒧𑒨𑒣𑒩 𑒏𑒳𑒪𑒹𑒮𑒩𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒲 𑒮𑒦 𑒏𑒼𑒢𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒔𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰। 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒞𑒱𑒢𑒰𑒟𑒏 𑒏𑒞𑓄 𑒮𑒧𑓂𑒦𑒫𑒹𑒧 𑒏𑒳𑒪𑒹𑒮𑒩 𑒣𑒚𑓂𑒚𑒳𑒂 𑒑𑒹𑒪𑒰। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮𑒦𑒏 𑒮𑒱𑒮𑒱𑒨𑒰 𑒢𑒰𑒔𑒱 𑒮𑒓𑓂𑒑𑒠 𑒢𑒯𑒱 𑒅𑒚𑒪𑒻𑒢 𑒍 𑒮𑓀𑒑𑒲 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒏𑒼𑒢𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒍 𑒠𑒹𑒪𑒞𑒰। 𑒏𑒼𑒢𑒏𑒼𑒢𑒰𑒧 𑒖𑒰𑒥𑒱 𑒮𑒰𑒪𑒮𑒿 𑒥𑒯𑒱 𑒏𑒳𑒪𑒹𑒮𑒩 𑒨𑒰𑒞 𑒞𑒿 𑒥𑒳𑒗𑒱𑒣𑓂𑒨 𑒑𑒹𑒪 𑒖𑓂𑒘𑒹𑒥 𑒍 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒧 𑒁𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒂𑒨𑒳-𑒨𑒰𑒠𑓂𑒩𑒏 𑒮𑓀𑒑𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒑𑒰𑒛𑒲 𑒔𑒪𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒣𑒞𑒱𑒢𑒰𑒟𑒰𑒧 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒢 𑒜𑒰𑒏𑓂𑒏𑒨 𑒍 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒣𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒁𑒞𑒱𑒢𑒰𑒟𑒏𑒏𑓂𑒭𑒧 𑒣𑒞𑒱𑒢𑒰𑒟 𑒔𑒪𑒻𑒨 𑒞𑒿 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒁𑒞𑒱𑒢𑒰𑒟𑒏𑒏𑓂𑒭𑒧 𑒂 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒠𑒳𑒪𑒏 𑒁𑒞𑒱𑒢𑒰𑒟𑒏𑒏𑓂𑒭𑒧 𑒮𑒠𑒰 𑒔𑒪𑒥 𑒏𑒩𑒞। 𑒁𑒣𑒢-𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒞𑒏 𑒮𑒲𑒧𑒰 𑒏𑓂𑒭𑒹𑒞𑓂𑒩।
𑒏𑒼𑒢𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒖𑒏𑓂𑒏𑒮𑒿 𑒠𑒴 𑒠𑒱𑒢 𑒣𑒯𑒱𑒢 𑒏𑒳𑒪𑒹𑒮𑒩 𑒠𑒹𑒫𑒢𑒏 𑒑𑒼𑒞𑒰𑒧 𑒍 𑒮𑒲𑒧𑒰 𑒪𑒑 𑒣𑒯𑒳𑒿𑒔 𑒠𑒳𑒑𑒰𑒧 𑒏𑒾𑒞 𑒥𑒖𑒪𑒰-
"𑒮𑒲𑒧𑒰, 𑒣𑒥𑒮𑒴 𑒏𑒼𑒢𑒏𑒼𑒢𑒰 𑒖𑒰𑒨𑒥, 𑒠𑒹𑒫𑒢 𑒮𑒠𑒰 𑒏𑒯𑒢 𑒥𑒯𑒨 𑒍 𑒠𑒹𑒮𑒯𑒴𑒿 𑒖𑒰𑒨𑒥, 𑒮 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒏𑒲 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩?"
𑒏𑒳𑒪𑒹𑒮𑒩𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒡𑒢𑒳𑒮𑒡𑒰𑒩𑒲𑒏 𑒮𑒢 𑒂𑒨𑒴-𑒨𑒰𑒠𑓂𑒩𑒴 𑒠𑒹𑒐𑒨 𑒪𑒑𑒪𑒻𑒢। 𑒡𑒼𑒥𑓂𑒥𑒪𑒰 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒏𑒲 𑒥𑓂𑒥𑒪 𑒂 𑒁𑒠𑒳𑒢𑒏 𑒏𑒲 𑒁𑒕𑒱..? 𑒁𑒣𑒢 𑒞𑒿 𑒂𑒠𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒁𑒡𑓂𑒨𑒧 𑒥𑒢𑒱 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒲 𑒍 𑒍𑒨𑒠 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒯𑒲𑒧 𑒠𑒱𑒢 𑒏𑒯𑒹 𑒕𑒲, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒑𑒼𑒑𑒪𑒰 𑒡𑒲𑒩𑒹𑒪 𑒞𑒿 𑒑𑒼𑒑𑒪𑒰 𑒕𑒱𑒢𑒑𑒲 𑒨𑒰𑒠𑒫 𑒏𑒩𑒲। 𑒁𑒣𑒢 𑒢𑒰𑒥 𑒏𑒳𑒪𑒹𑒮𑒩𑒣𑒩 𑒯𑒹𑒞 𑒡𑒢𑒳𑒮𑒡𑒰𑒩𑒲 𑒥𑒖𑒪𑒰-
"𑒥𑒼𑒂, 𑒞𑒰𑒯𑒴𑒿 𑒏𑒢𑒰 𑒂𑒢 𑒢𑒯𑒱𑒨𑒿 𑒕𑒠𑒰 𑒥𑒢𑒰 𑒥𑒢𑒱 𑒠𑒹𑒫𑒢 𑒅𑒠𑒹𑒢 𑒅𑒢𑒰 𑒪𑒢 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒯𑒢 𑒖𑒰𑒢𑒱𑒨𑒰𑒿𑒧 𑒏𑒞𑒲 𑒥𑒯𑒱 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒮𑒳𑒡𑒰𑒩𑒻𑒞 𑒔𑒪𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒨𑒰। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒅𑒢𑒹𑒧-𑒥𑒲𑒧 𑒥𑒯𑒏 𑒥𑒯𑒱𑒞𑒰 𑒠𑒹𑒫𑒢𑒏𑒿 𑒮𑒰𑒨 𑒞𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒢 𑒑𑒢𑒨 𑒁𑒥𑒹 𑒕𑒻 𑒂 𑒢 𑒁𑒣𑒢 𑒢𑒰𑒧-𑒑𑒰𑒧 𑒪𑒱𑒐𑒨 𑒁𑒥𑒹 𑒕𑒻, 𑒞𑒯𑒢 𑒑𑒰𑒧 𑒕𑒰𑒛𑒱 𑒥𑒰𑒯𑒩 𑒏𑒢𑒰 𑒖𑒰𑒨𑒞।"

𑒡𑒢𑒳𑒭𑒡𑒰𑒩𑒲𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒏𑒳𑒪𑒹𑒮𑒩 𑒧𑒢-𑒧𑒢 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒪𑒹𑒢 𑒖𑒹 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒞𑒿 𑒥𑒰𑒖𑒪 𑒚𑒲𑒏𑒹, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒧𑒢𑒮𑒿𑒑 𑒢𑒢 𑒥𑒰𑒞 𑒞𑒿 𑒢𑒏𑓂𑒭𑓂𑒨 𑒚𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢-𑒧𑒩𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒥𑒳𑒗𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒾𑓀 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒳𑒪𑒹𑒮𑒩 𑒥𑒰𑒖𑒪-

"𑒦𑒾𑒖𑒲, 𑒥𑒰𑒖𑒪 𑒏𑒱 𑒯𑒥𑒢𑒪𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒂𑒏𑒱 𑒥𑒰𑒖𑒪 𑒪𑒼𑒏𑒮𑒿 𑒑𑒰𑒧 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒢𑒥𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒪𑒏𑒞𑓂𑒞𑒰 𑒯𑒼𑒪𑒰𑒨𑒥 𑒧𑒢 𑒦𑒲𑒜𑓃 𑒪𑒹𑒞𑒰।"

-𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪𑒖𑒲𑒏 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒧𑒡𑒳𑒥𑒢𑒲 𑒖𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒹𑒩𑒧𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 5 𑒖𑒳𑒪𑒰𑒃 1947 𑒄𑒮𑓂𑒫𑒲𑒧𑒹 𑒦𑒹𑒪𑒢𑒱। 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪𑒖𑒲 𑒯𑒱𑒢𑓂𑒠𑒲 𑒋𑒫𑓀 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱 𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒧𑒹 𑒋𑒧.𑒋.𑒏 𑒅𑒣𑒰𑒡𑒱 𑒣𑒰𑒥𑒱 𑒖𑒲𑒫𑒱𑒏𑒼𑒣𑒰𑒩𑓂𑒖𑒢 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒏𑒵𑒭𑒱 𑒏𑒰𑒩𑓂𑒨𑒧𑒹 𑒮𑓀𑒪𑒑𑓂𑒢 𑒦𑓄 𑒩𑒳𑒔𑒱 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒮𑒹𑒫𑒰𑒧𑒹 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒑𑒹𑒪𑒰। 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒧𑒹 𑒫𑓂𑒨𑒰𑒣𑓂𑒞 𑒩𑒴𑒜𑓃𑒱𑒫𑒰𑒠𑒲 𑒋𑒫𑓀 𑒮𑒰𑒧𑒢𑓂𑒞𑒲 𑒫𑓂𑒨𑒫𑒮𑓂𑒟𑒰𑒏 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒫𑒱𑒏𑒰𑒮𑒧𑒹 𑒯𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒥𑒰𑒡𑒏 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒻𑒢। 𑒤𑒪𑒞𑓁 𑒖𑒧𑒲𑒢𑓂𑒠𑒰𑒩, 𑒮𑒰𑒧𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒑𑒰𑒧𑒧𑒹 𑒣𑒳𑒩𑒖𑒼𑒩 𑒪𑒛𑓃𑒰𑒃 𑒚𑒰𑒜𑓃 𑒦𑓄 𑒑𑒹𑒪𑒻𑒢। 𑒤𑒪𑒞𑓁 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪𑒖𑒲 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒏 𑒬𑒳𑒩𑒴𑒂𑒞𑒲 𑒮𑒧𑒨 𑒏𑒹𑒮-𑒧𑒼𑒏𑒠𑒧𑒰, 𑒖𑒯𑒪 𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒠𑒱𑒧𑒹 𑒫𑓂𑒨𑒞𑒲𑒞 𑒏𑒋𑒪𑒢𑒱। 2001 𑒄𑒮𑓂𑒫𑒲𑒏 𑒣𑒬𑓂𑒔𑒰𑒞 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒪𑒹𑒐𑒢-𑒏𑒩𑓂𑒧𑒧𑒹 𑒋𑒪𑒰। 2008 𑒄𑒮𑓂𑒫𑒲𑒮𑒿 𑒫𑒱𑒦𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒣𑒞𑓂𑒩-𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰𑒠𑒱𑒧𑒹 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒯𑒼𑒁𑒋 𑒪𑒑𑒪𑒻𑒢। 𑒑𑒲𑒞, 𑒏𑒰𑒫𑓂𑒨, 𑒢𑒰𑒙𑒏, 𑒋𑒏𑒰𑓀𑒏𑒲, 𑒏𑒟𑒰, 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮 𑒃𑒞𑓂𑒨𑒰𑒠𑒱 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏 𑒧𑒾𑒪𑒱𑒏 𑒫𑒱𑒡𑒰𑒧𑒹 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒮𑒞𑒞 𑒪𑒹𑒐𑒢 𑒁𑒠𑓂𑒫𑒱𑒞𑒲𑒨 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒦𑓄 𑒩𑒯𑒪𑒹𑒢 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑒐𑒢 𑒡𑒩𑒱 𑒯𑒱𑒢𑒏 𑒞𑒲𑒢 𑒢𑒰𑒙𑒏/𑒋𑒏𑒰𑓀𑒏𑒲, 𑒣𑒰𑒿𑒔 𑒮𑒋𑒮𑒿 𑒅𑒣𑒩 𑒑𑒲𑒞/𑒏𑒰𑒫𑓂𑒨, 𑒅𑒢𑓂𑒢𑒻𑒮 𑒑𑒼𑒙 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮 𑒂 𑒮𑒰𑒜𑓃𑒹 𑒂𑒚𑒮𑒋 𑒏𑒟𑒰-𑒏𑒯𑒰𑒢𑒲𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒧𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒰 𑒫𑒱𑒭𑒨𑒏 𑒪𑒹𑒐𑒰𑒠𑒱 𑒂𑒠𑒱𑒏 𑒣𑒳𑒮𑓂𑒞𑒏𑒰𑒏𑒰𑒩, 𑒮𑒋𑒮𑒿 𑒅𑒣𑒩 𑒑𑓂𑒩𑒢𑓂𑒟 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒕𑒻𑒢।

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰-𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒫𑒱𑒏𑒰𑒮𑒧𑒹 𑒬𑓂𑒩𑒲 𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒰𑒠 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪𑒖𑒲𑒏

योगदान अविस्मरणीय छैक। ओ अपन सतत क्रियाशीलता आ रचना धर्मिताक लेल विभिन्न संस्थासभक द्वारा सम्मानित/पुरस्कृत प्राप्त करैत छथि, यथा- विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'गामक जिनगी' लघु कथा संग्रह लेल 'विदेह सम्मान- 2011', 'गामक जिनगी ए समग्र योगदान हेतु साहित्य अकादेमी द्वारा- 'टैगोर लिटिरेचर अवार्ड- 2011', मिथिला मैथिलीक उन्नयन लेल साक्षर दरभंगा द्वारा- 'वैदेह सम्मान- 2012', विदेह सम्पादक मण्डल द्वारा 'नै धाड़ैए' उपन्यास लेल 'विदेह बाल साहित्य पुरस्कार- 2014', साहित्यमे समग्र योगदान लेल एस.एन.एस. ग्लोबल समिनरी द्वारा 'कौशिकी साहित्य सम्मान- 2015', मिथिला-मैथिलीक विकास लेल सतत क्रियाशील रहबाक हेतु अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा- 'वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' सम्मान- 2016', रचना धर्मिताक उत्तम अमूल्य योगदान हेतु ज्योत्स्ना-मण्डल द्वारा- 'कौमुदी सम्मान- 2017', मिथिला-मैथिलीक संग अन्य उत्कृष्ट सेवा लेल अखिल भारतीय मिथिला संघ द्वारा 'स्व. बाबू साहेब चौधरी सम्मान- 2018', चेतना समिति, पटनाक प्रसिद्ध 'यात्री चेतना पुरस्कार- 2020', मैथिली साहित्यक अद्वितीय सेवा आ सृजन हेतु मिथिला सांस्कृतिक समन्वय समिति, गुवाहाटी-असम द्वारा 'राजकमल चौधरी साहित्य सम्मान- 2020', भारत सरकार द्वारा 'साहित्य अकादेमी पुरस्कार- 2021' तथा साहित्य आ संस्कृतिमे महत्वपूर्ण अवदान लेल अमर शहीद रामफल मंडल विचार मंच द्वारा 'अमर शहीद रामफल मंडल राष्ट्रीय पुरस्कार- 2022'

रचना संसार : 1. इन्द्रधनुषी अकास, 2. राति-दिन, 3. तीन जेठ एगारहम माघ, 4. सरिता, 5. गीतांजलि, 6. सुखाएल पोखरिक जाइठ, 7. सतबेध, 8. चुनौती, 9. रहसा चौरी, 10. कामधेनु, 11. मन मथन, 12. अकास गंगा - कविता संग्रह। 13. पंचवटी- एकांकी संचयन। 14. मिथिलाक बेटी, 15. कम्प्रोमाइज, 16. झमेलिया बिआह, 17. रत्नाकर डकैत, 18. स्वयंवर- नाटक। 19. मौलाइल गाछक फूल, 20. उत्थान-पतन, 21. जिनगीक जीत, 22. जीवन-मरण, 23. जीवन संघर्ष, 24. नै धाड़ैए, 25. बड़की बहिन, 26. भादवक आठ अन्हार, 27. सधवा-विधवा, 28. ठूठ गाछ, 29. इज्जत गमा इज्जत बँचेलौं, 30. लहसन, 31. पंगु, 32. आमक गाछी, 33. सुचिता, 34. मोड़पर, 35. संकल्प, 36. अन्तिम क्षण, 37. कुश्मा- उपन्यास। 38. पयस्विनी- प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना। 39. कल्याणी, 40. सतभाइ, 41. समझौता, 42. तामक तमघैल, 43. बीरांगना- एकांकी। 44. तरेगन, 45. बजन्ता-बुझन्ता- बीहनि कथा संग्रह। 46. तंत्रनाथ, 47. बन्नी हेड़- दीर्घ कथा संग्रह। 48. गामक जिनगी, 49. अर्द्धांगिनी, 50. सतभैंया पोखैर, 51. गामक शकल-सूरत, 52. अपन मन अपन धन, 53. समरथाइक भूत, 54. अप्पन-बीरान, 55. बाल गोपाल, 56. ठकमाड़, 57. उलबा चाउर, 58. पतझाड़, 59. गढ़ैनगर हाट, 60. लजबिजी, 61. उकड़ू समय, 62. मधुमाछी, 63. पसेनाक धरम, 64. गुड़ा-खुद्दीक रोटी, 65. फलहार, 66. खसैत गाछ, 67. एगच्छा आमक गाछ, 68. शुभचिन्तक, 69. गाछपर सँ खसला, 70. डभियाएल गाम, 71. गुलेती दास, 72. मुड़ियाएल घर,

73. वीरांगना, 74. श्रुति समय, 75. बड़की बहीन, 76. [illegible], 77. [illegible], 78. पैंतीस साल पछुआ गेलौं, 79. [illegible], 80. [illegible] जिनगी, 81. [illegible] दिन, 82. गपक पियाहुल लोक, 83. दिवालीक दीप, 84. [illegible] गाम, 85. [illegible], 86. [illegible], 87. [illegible], 88. समयसँ पहिने चेत किसान, 89. [illegible], 90. गामक [illegible], 91. [illegible], 92. [illegible], 93. [illegible], 94. [illegible] परिवार, 95. [illegible] संग [illegible] संग, 96. गामक [illegible], 97. [illegible], 98. [illegible], 99. [illegible], 100. जीवनक [illegible] जीवनक [illegible], 101. [illegible], 102. [illegible], 103. [illegible], 104. जीवन [illegible] 105. [illegible] मोती- लघु कथा संग्रह।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

𑓙.𑓗.𑒦𑒰𑒩𑒞𑒲𑒨 𑒧𑒢𑒼𑒫𑒱𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢- 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯- 𑒣𑒩𑓀𑒣𑒢𑒰𑒢𑒰𑒪𑒲 𑒢𑒰𑒏𑒳𑒢 (𑒨𑒏 𑒬𑒼𑒡)

**𑒦𑒰𑒩𑒞𑒲𑒨 𑒧𑒢𑒼𑒫𑒱𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢**

𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩𑒯

𑒣𑒩𑓀𑒣𑒢𑒰𑒢𑒰𑒪𑒲 𑒢𑒰𑒏𑒳𑒢 (𑒨𑒏 𑒬𑒼𑒡)

(𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞 𑒬𑒼𑒡 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒂 𑒠𑒩𑒦𑓀𑒑𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒏𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒡𑓂𑒨𑒰𑒣𑒏 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩𑒏 𑒧𑒑𑒡 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒪𑒨 𑒂 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒡𑓂𑒨𑒰𑒣𑒏 𑒮𑒦 𑒠𑓂𑒫𑒰𑒩𑒰 𑒁𑒢𑒳𑒧𑒼𑒠𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒁𑓀𑒏-𑒁𑓀𑒏 𑒧𑒹 𑒬𑒼𑒡 𑒣𑓂𑒩𑒥𑒢𑓂𑒡𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒏S 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒣𑒰𑒚𑒏𑒮𑒿 𑒂𑒑𑓂𑒩𑒯 𑒬𑒼𑒡𑒏𑒩𑓂𑒞𑒰 𑒮𑒰𑒧𑒑𑓂𑒩𑒲 𑒣𑒜𑓏𑒱 𑒏S 𑒣𑒰𑒚𑒏𑒿 𑒪𑒹𑒐𑒏 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒣𑒜𑓏𑒪 𑒖𑒰𑒨, 𑒞𑒿𑒮 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒬𑒱𑒞 𑒏S 𑒂𑒢𑓂𑒠𑒼𑒪𑒢 𑒬𑒼𑒡 𑒏𑒰𑒩𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒀 𑒮𑒯𑒨𑒼𑒑 𑒠𑒰𑒢 𑒖𑒰𑒨)।



𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒣𑒮𑒱𑒢 𑒣𑒏𑒫𑒰-𑒫𑓂𑒨𑒘𑓂𑒖𑒢 𑒣𑒩𑒱𑒔𑒨- 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒫𑓂𑒨𑒘𑓂𑒖𑒢𑒧 𑒮𑒏𑒪 𑒦𑒼𑒖𑒢 "𑒧𑒢𑒫𑒱𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢𑒏 𑒑𑒳𑒣𑓂𑒞𑒏" 𑒢𑒞𑒰 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒠 𑒥𑒢𑒰𑒨𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒫𑒰 𑒑𑒳𑒣𑓂𑒞 𑒮𑒴𑒞𑓂𑒩𑒮𑒿 𑒄 𑒫𑓂𑒨𑒘𑓂𑒖𑒢 𑒕𑒧𑒞𑒰 𑒢𑒞𑒪𑒰। 𑒂𑒥 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒦𑒼𑒖𑒢𑒏 𑒫𑒱𑒫𑒩𑒝 𑒠𑓂𑒫𑒳--

𑓑) 𑒦𑒰𑒞- 𑒫𑓂𑒨𑒘𑓂𑒖𑒢 𑒮𑒦𑒏 𑒂𑒡𑒰𑒩𑒦𑒩 𑒄 𑒄𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒏𑒵𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒍 𑒄 𑒂𑒮𑒰𑒧𑒧 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒞𑒰𑒿 𑒢𑒪𑒑 𑒥𑒪𑒰 𑒣𑒰𑒅𑒢 "𑒮𑒰𑒢𑒰𑒣𑓂𑒞𑒱𑒏"𑒮𑒿 𑒦𑒰𑒞 𑒩𑒰𑒢𑓂𑒯𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒣𑒰𑒅𑒢𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒠𑓂 𑒫𑒮𑓂𑒞𑒳𑒮𑒿 𑒧𑒱𑒪𑒪 𑒁𑒕𑒱 '𑒮𑒰𑒢𑒰' 𑒫𑒰 '𑒢𑒰𑒣𑓂𑒞𑒱'। 𑒮𑒰𑒢𑒰 𑒧𑒢 𑒡𑒢, 𑒧𑒢 𑒄 𑒣𑒰𑒅𑒢 𑒮𑒿𑒠𑒑 𑒁𑒕𑒱। 𑒫𑒰 𑒞𑒱𑒢𑒏 𑒪𑒑 𑒮𑒰𑒢𑒰 𑒞𑒱𑒢𑒏 𑒪𑒑 𑒢𑒰𑒣𑓂𑒞𑒱 𑒥𑒠𑒞 𑒢𑒰। 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒣𑒰𑒅𑒢𑒮𑒿 𑒄 𑒥𑒳𑒗𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒍 "𑒧𑒢𑒫𑒱𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒑𑒳𑒣𑓂𑒞𑒏" 𑒄 𑒢𑒞𑒰 𑒮𑒰𑒧𑓀𑒞𑒫𑒰𑒠𑒲 𑒫𑒰 𑒠𑒫𑓀𑒑 𑒁𑒕𑒱। 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞 𑒦𑒰𑒞 𑒩𑒰𑒢𑓂𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒁𑒏𑓂𑒭𑒰𑒞 𑒖𑒰𑒯𑒱𑒧 𑒏𑒢𑒰 𑒢𑒫 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒑 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒰𑒯𑒱𑒮𑒿 𑒄𑒏𑓂𑒞𑒰 𑒮𑒰𑒫𑒱𑒞 𑒦𑒪 𑒍 𑒄 𑒢𑒞𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒑𑒞𑒱𑒬𑒲𑒪 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱 𑒫𑒰 𑒣𑒩𑓀𑒣𑒩𑒰𑒫𑒰𑒠𑒏 𑒂𑒨𑒏 𑒁𑒕𑒱। 𑒦𑒰𑒞 𑒏𑒩 𑒮𑒰𑒢𑒰 𑒠𑒫𑓂𑒫𑒪𑒰𑒮𑒿 𑒄 𑒮𑒰𑒡𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒏𑓂𑒭𑒨 𑒍 𑒄 𑒏𑒯𑒱𑒞 𑒢𑒞𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒫𑒑𑒮𑒿 𑒁𑒕𑒱। 𑒂𑒢𑒰 𑒏𑒩 𑒠𑒱𑒣𑓂𑒩𑒰 𑒧𑒨𑒢 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒠𑒲𑒧 𑒥𑒰𑒯𑒱 𑒪𑒢 𑒁𑒕𑒱। 𑒂𑒢𑒰 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒣𑒰𑒅𑒢𑒏

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

६) माघ- [illegible]

७) फाल्गुन- [illegible]

गामक प्रधानकेँ हम समाधान करबाक मानै छी भरसक ओ सुलझल छथि। क्षत्रीक प्रधान सभ लग सुलझल नै तँओ ओ नता निश्चित तौरपर सोचक अछि जँ गामक प्रधान लग प्रधान हरिजनक हेतु रहल छथि। ओ प्रधान सभा परंपरागत ढंगसँ बनल अछि, जकरा नियम सबल हेबाक चाही।

६) सभा- ग्रामीण क्षेत्र मे गामक सभा तँ अछि समाधानक मुदा जकरा निर्णय परंपरासँ चलल अछि तँओ ओहिना नीक नै। गामा सभा चलाबैँ ओ मानित करैत छथि ओहिना नता ग्रामीण छन तौरपर मुदा प्रधाना लग समाधाना नाहय जाइत अछि। ओ नीक ग्रामीण बात सभ ओ हम मुख्यधारा बला सभ प्रधाना लग ग्रामीणक बंधन जाति-धर्म वा दलित वा मुसलमान लोककेँ बाहि गामक नाम गना मानि लै छी ओ मैथिली सभ करैत छथि, मिथिला सभ कहितक छथि। ओ तँ माया-माया हमर सभक हर्षोंम सभा। गामा ग्राम कहब सभा करबाक नियम सबल हेबाक चाही।

७) पछड़ल गाम- ग्रामीण पछड़ल गाम बाहि ओहिना नता ओ मानित करैत छल ओ गा क्षेत्रमान सोचक करामे अछि गा बाहि ग्रामीण मानसिकतासँ गा समाधाना करैक सदैव ओहिलक अछि। कतबा करैत सोचनल बस्तु पा तँ प्रधान नुकसाती समस्याक सँदर्भ जरूरत छै पा ओकर बला समस्या। निश्चित तौरपर ओहिना नता मध्यकालीन मानसिकता अछि।

गामा बाहि बाम पाछक धन ओना सहैत छी ओ जतक क्षतिक्रम

𑒞𑒐𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒨𑒠𑒱 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒨𑒰𑒫𑒞 𑒫𑒰 𑒠𑒮𑒼 𑒠𑒱𑒢𑒏 𑒢 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒿 𑒠𑒮 𑒧𑒴𑒔𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒲 𑒍 𑒠𑒮𑒧 𑒠𑒳𑒑𑓂𑒡 𑒧𑒴𑒞𑓂𑒩 𑒏𑒩𑒪𑒏 𑒍 𑒨𑒰𑒫𑒞 𑒫𑒰 𑒠𑒮𑒲 𑒧𑒠𑒰 𑒁𑒪𑒻 𑒑𑒳𑒢𑒰 𑒂𑒏𑒢𑒰 𑒨𑒠𑒱 𑒥𑓂𑒩𑒰𑒯𑓂𑒧𑒝 𑒢𑒯𑒱 𑒪𑒪 𑒥𑒹𑒪𑒼। 𑒍𑒢𑓂𑒢𑒰 𑒢𑒞𑒰 𑒦𑒫𑒢𑒰𑒏𑒿 𑒂𑒠𑒱𑒢𑒰 𑒧𑒯𑒞𑓂𑒞𑒰𑒢𑒰 𑒥𑒑𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒱𑒞 𑒏𑒩𑒥𑒪 𑒨𑒰𑒠𑒹𑒞 𑒦𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒍 𑒧𑒼𑒯𑒱𑒪𑒲𑒏 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨𑒡𑒰𑒩𑒰 𑒪𑒫𑒏 𑒧𑒞 𑒦𑒴𑒧𑒏 𑒨𑒰𑒏𑓂𑒭𑒮𑒿 𑒦𑒪𑒰𑒢𑒲𑒢 𑒧𑒏𑓂𑒭𑒢 𑒥𑒢𑒰 𑒧𑒳𑒠𑓂𑒩-𑒧𑒳𑒢𑒱𑒡𑒰𑒧 𑒥𑒜𑓃𑒻𑒞 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒥𑒜𑓃𑒢𑒰𑒧 𑒑𑒩𑓂𑒧𑒲𑒥𑒏 𑒥𑒢𑓂𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒰 𑒏𑓄 𑒦𑒫𑒢𑒰𑒏𑒿 𑒧𑒯𑒞𑓂𑒞𑒰𑒢𑒰 𑒥𑒑𑒏 𑒧𑒰𑒢𑒱 𑒪𑒹𑒪 𑒦𑒏𑓂𑒞𑒱। 𑒨𑒠𑒱 𑒞𑒰𑒧 𑒍𑒢𑓂𑒢𑒰 𑒢𑒞𑒰 𑒨𑒰𑒥 𑒠𑒮𑒧 𑒧𑒢𑒏 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒏𑓄 𑒥𑒠𑒪 𑒦𑒏𑓂𑒞𑒱। 𑒦𑒰𑒯𑒱𑒢 𑒏𑓂𑒭𑒹 𑒢𑒞𑒰 𑒠𑒮𑒧 𑒧𑒢𑒏 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒏𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒥𑒹𑒨𑒰।

𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒨 (𑒮𑒿𑒞𑒱𑒧 𑒦𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒏𑓂𑒭𑒹, 𑒂 𑒥𑒢 𑒂 𑒏𑒱 𑒥𑒰𑒏𑓂𑒞 𑒞𑒰𑒞𑒱 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒥𑒹𑒪 𑒦𑒏𑓂𑒞𑒱)- 𑒍𑒢𑓂𑒢𑒰 𑒢𑒞𑒰 𑒍𑒏𑒩 𑒢𑒰𑒧 𑒠𑒳𑒑𑓂𑒡 𑒧𑒴𑒪𑒏 𑒦𑒢𑒳𑒧𑒰𑒢 '𑒂𑒞𑓂𑒧𑒲𑒨 𑒦𑒢𑒫𑒱𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢' 𑒁𑒕𑒱, 𑒂 𑒍 𑒦𑒫𑒢𑒰𑒏𑒿 '𑒦𑒢𑒫𑒱𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒠𑒳𑒑𑓂𑒡𑒏' 𑒢𑒞𑒰𑒏 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒱𑒞 𑒏𑒢 𑒦𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒧 𑒧𑒰𑒨𑒰-𑒧𑒰𑒨𑒰 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒨𑒮𑓀𑒨𑒧𑒰𑒥𑒰𑒠, 𑒧𑒡𑓂𑒨𑒏𑒰𑒪𑒲𑒢 𑒧𑒰𑒢𑒮𑒱𑒏𑒞𑒰𑒏 𑒂 𑒪𑒼𑒨𑒏 𑒥𑒑𑒏 𑒦𑒏𑓂𑒞𑒱। 𑒧𑓀𑒞-𑒧𑓀𑒑 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒏𑒩𑒥𑒰 𑒥𑒪𑒰 𑒂 𑒦𑒫𑓂𑒨𑒑𑒞𑒱𑒬𑒲𑒪 𑒦𑒏𑓂𑒞𑒱। 𑒨𑒰𑒏𑒢𑒰 𑒠𑒰𑒧𑓂𑒨𑒮𑒿, 𑒨𑒰𑒏𑒢 𑒧𑒴𑒠𑒮𑒿 𑒏𑒢𑒰 𑒢𑒥 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒻 𑒁𑒕𑒱। 𑒨𑒰𑒏𑒢𑒰 𑒪𑒪 𑒨𑒰𑒿𑒧𑒲 𑒏𑒢 𑒧𑒕 𑒧𑒡𑓂𑒨 𑒏𑒧 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒳𑒢𑒰 𑒠𑒧 𑒧𑒞 𑒧𑒰𑒢𑒫𑒞𑒰𑒥𑒰𑒠𑒲 𑒁𑒕𑒱 𑒞𑒿𑒏𑓂𑒭 𑒨𑒠𑒱 𑒥𑒜𑓃𑒥𑒰𑒪𑒰 𑒢𑒞𑒰𑒏𑒿 𑒧𑒰𑒯𑒱𑒨𑓂𑒨𑒏 𑒍𑒢𑒱𑒧𑒰𑒿𑒮𑒿 𑒥𑒯𑒱𑒭𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒂 𑒍𑒮𑓂𑒧𑒰𑒠 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒍 𑒠𑒮𑒧 𑒠𑒳𑒑𑓂𑒡𑒏 𑒏𑒢𑒰 𑒪𑒰𑒏 𑒂𑒏𑓂𑒭𑒮𑒿 𑒨𑒰𑒏𑒢 𑒢𑒰𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒪𑒞, 𑒨𑒰𑒏𑒢 𑒨𑒖𑓂𑒘 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒞𑒰। 𑒏𑓂𑒭𑒨𑒰𑒠 𑒧𑒡𑓂𑒨 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒧𑒯𑒱𑒭𑓂𑒨 𑒏𑒢 𑒧𑒰𑒢𑒫𑒲𑒨 𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒱𑒏𑒼𑒝𑒮𑒿 𑒧𑒠𑒲 𑒁𑒕𑒱।

𑒢𑒰𑒧- 𑒏𑓂𑒭𑒧𑒰𑒢 𑒠𑒳𑒑𑓂𑒡 𑒧𑒴𑒪𑒮𑒿 𑒏𑓂𑒭𑒞𑒰 𑒨𑒞𑒰 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒦𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒍 𑒏𑓂𑒭𑒹

अनविज्ञाक "मैथिली" बनबाक बङ्काबम अछि। ऊ मैथिली बाढ़ला बादन पङ्की अछि ओ अपन पंछ नाथि पुनः अपनाकँ तागतबन बना लैत अछि। ऊ पङ्की अतक छतबनाक ओ ओँ ओबिया ओछत छै छै तँ आबक छाओब मता यामबमँ पङ्की बनि ओछत छै। तँछ मुख्यधाराक मत लछकमँ आयत ओ अनविज्ञाबकँ मैथिली बनबामँ बाकबाम लल आछ बातिम ऊम मीलिंगपब आबी आ विमल्ल कबी ओ आबका कना बाकल ओगा।

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

𑓙.𑒣𑓂𑒩𑒮𑒢𑓂𑒢𑓀𑒏𑒩 𑒗𑒰 "𑒣𑒫𑒢"- 𑒣𑒬𑒳𑒡𑒢𑒏 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰 𑒮𑓀𑒞 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒏𑒰𑒩𑒴 𑒐𑒱𑒩𑒯𑒩


𑒣𑓂𑒩𑒮𑒢𑓂𑒢𑓀𑒏𑒩 𑒗𑒰 "𑒣𑒫𑒢"
𑒣𑒬𑒳𑒡𑒢𑒏 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰 𑒮𑓀𑒞 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒏𑒰𑒩𑒴 𑒐𑒱𑒩𑒯𑒩𑒱

𑒍𑒢𑒰 𑒞' 𑒯𑒱𑒢𑓂𑒠𑒴 𑒡𑒩𑓂𑒧𑒧𑒹 𑒮 𑒁𑒪𑒑-𑒁𑒪𑒑 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒨𑒰𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒡𑒰𑒢 𑒪𑒹𑒪 𑒁𑒪𑒑-𑒁𑒪𑒑 𑒠𑒹𑒫𑒲 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰𑒏𑓀 𑒣𑒴𑒖𑒰 𑒂𑒩𑒰𑒡𑒢𑒰 𑒏𑒋𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒰𑒯𑒴𑒧𑒹 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒿𑒔𑒪 𑒥𑒰𑒯𑒱𑒧 𑒁𑒣𑒢 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒞𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒂𑒠𑒱 𑒏𑒰𑒪 𑒮𑒿 𑒖𑒰𑒢𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒹𑒢𑒰𑒏𑒱 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒨𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒧𑒰𑒿 𑒮𑒩𑒮𑓂𑒫𑒞𑒲, 𑒡𑒢𑒏𑓀 𑒪𑒹𑒪 𑒧𑒰𑒿 𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒲 𑒂 𑒥𑒪𑒏𑓀 𑒪𑒹𑒪 𑒥𑒖𑒩𑓀𑒑𑒥𑒪𑒲𑒏 𑒂𑒩𑒰𑒡𑒢𑒰 𑒏𑒋𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒞𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒣𑒬𑒳𑒡𑒢𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒣𑒬𑒳𑒡𑒢𑒏 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰 𑒮𑓀𑒞 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒏𑒰𑒩𑒴 𑒐𑒱𑒩𑒯𑒩𑒱𑒏𑓀 𑒣𑒴𑒖𑒰 𑒁𑒩𑓂𑒔𑒢𑒰 𑒏𑒋𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒮𑓀𑒞 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒏𑒰𑒩𑒴 𑒐𑒱𑒩𑒯𑒩𑒱𑒏𑓀 𑒖𑒢𑓂𑒧 𑒮𑓂𑒟𑒪 𑒮𑒯𑒩𑒮𑒰 𑒖𑒱𑒪𑒰𑒏 𑒧𑒯𑒱𑒭𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒐𑓀𑒛𑒏 𑒧𑒯𑒣𑒳𑒩𑒰

𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒢𑒱 𑒢𑒠𑒲𑒏 𑒏𑒱𑒢𑒰𑒩 𑒮𑒥 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒁𑒕𑒱। 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒏𑒰𑒩𑒴 𑒐𑒱𑒩𑒯𑒩𑒱 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒣𑒾𑒭 𑒬𑒱𑒫 𑒞𑒟𑒰 𑒏𑒪𑒰𑒏𑒰𑒩 𑒂 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝𑒏 𑒣𑒕𑓂𑒭𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒠𑒩𑓂𑒬𑒢 𑒬𑒱𑒫 𑒂𑒩𑒰𑒡𑒢𑒰 𑒮 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯, 𑒍𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒨 𑒪𑒼𑒏 𑒯𑒳𑒢𑒏 𑒮𑓀𑒞 𑒬𑒱𑒩𑒼𑒧𑒝𑒱 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒮𑓀𑒞 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒏𑒰𑒩𑒴 𑒐𑒱𑒩𑒯𑒩𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒩𑒰𑒡𑓂𑒨 𑒠𑒹𑒫 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒢𑒰𑒑𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫 𑒕𑒪𑒟𑒱। 𑒍 𑒧𑒯𑒱𑒭𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒐𑓀𑒛 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒂𑒩𑒏𑓂𑒭𑒱𑒞 𑒧𑒯𑒰𑒦𑒰𑒩𑒞 𑒏𑒰𑒪𑒲𑒢 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒁𑒕𑒱। 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒢𑒰𑒑𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩𑒏 𑒬𑒱𑒫𑒪𑒱𑓀𑒑 𑒏𑒪𑒰𑒏𑒵𑒞𑒱𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒮𑒳𑒣𑓂𑒩𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒁𑒕𑒱। 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒍 𑒍𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒨 𑒣𑓀𑒛𑒱𑒞 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒧𑒝𑓂𑒛𑒪 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒏𑒰𑒢 𑒕𑒪𑒰𑒯 𑒍𑒯𑒱 𑒮𑒧𑒨 𑒍𑒯𑒱 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩𑒏 𑒢𑒰𑒧 𑒢𑒰𑒑𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒢𑒱। 𑒪𑒼𑒏𑒰 𑒮𑒧𑒨𑒧 𑒍𑒯𑒱𑒚𑒰𑒧 𑒡𑒢𑒡𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒖𑓀𑒑𑒪 𑒕𑒪। 𑒑𑒰𑒧 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒍𑒯𑒱 𑒖𑓀𑒑𑒪𑒧𑒹 𑒑𑒰𑒨 𑒔𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒁𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒍𑒯𑒱𑒧𑒹 𑒮𑒿 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒑𑒰𑒨 𑒢𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒁𑒣𑒢 𑒟𑒢𑒮𑒿 𑒍𑒯𑒱 𑒮𑓂𑒟𑒪 𑒣𑒩 𑒠𑒳𑒑𑓂𑒡𑒰𑒦𑒱𑒭𑒹𑒏 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒕𑒪। 𑒋𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒔𑒩𑒥𑒰𑒯𑒰 𑒮𑒦 𑒠𑒴𑒡 𑒠𑒳𑒯𑒪𑒏 𑒞' 𑒍𑒯𑒱 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒼𑒛𑓃𑒥𑒰𑒏 𑒏𑒼𑒬𑒱𑒬 𑒏𑒋𑒪𑒏, 𑒂𑒏𑒵𑒞𑒱 𑒋𑒏𑒙𑒰 𑒣𑒰𑒟𑒩 𑒢𑒖𑒩𑒱 𑒣𑒛𑓃𑒪𑒻𑒏 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒢𑒱𑒏𑒰𑒪𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒏𑒪𑒰। 𑒣𑒬𑒳𑒣𑒰𑒪𑒢 𑒞𑒟𑒰 𑒔𑒩𑒥𑒰𑒯𑒰 𑒣𑒰𑒟𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒠𑒱𑒢𑒰 𑒮𑒰𑒩𑒱 𑒖𑒪𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂 𑒠𑒴𑒡 𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒂𑒏𑒵𑒞𑒱 𑒥𑒛𑓃𑒻𑒢 𑒏𑒰𑒢 𑒥𑒯𑒪 𑒂 𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 𑒂𑒏𑒵𑒞𑒱 𑒮𑒣𑒢𑒰𑒧 𑒂𑒥𑒱 𑒍𑒯𑒱 𑒬𑒱𑒫 𑒪𑒱𑓀𑒑𑒏𑒹𑒿 𑒣𑒴𑒖𑒰 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑒯𑒪𑒰𑒯𑒱𑒢। 𑒞𑒰𑒯𑒱 𑒠𑒱𑒢𑒮𑒿 𑒍𑒯𑒱 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒣𑒩 𑒣𑒴𑒖𑒰 𑒁𑒩𑓂𑒔𑒢𑒰 𑒯𑒼𑒧𑒨 𑒪𑒰𑒑𑒪। 𑒡𑒲𑒩𑒹-𑒡𑒲𑒩𑒹 𑒃 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒬𑒱𑒫 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 "𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒢𑒰𑒑𑒹𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫" 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒧𑒹 𑒖𑒰𑒢𑒪 𑒧𑒰𑒢𑒪 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢𑒏 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒂𑒥𑒱 𑒑𑒹𑒪। 𑒂𑒍𑒩 𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒠𑒱𑒢 𑒍𑒯𑒱 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩𑒧𑒹 𑒬𑓂𑒩𑒠𑓂𑒡𑒰𑒪𑒳𑒏𑒹𑒿 𑒂𑒥𑒰 𑒖𑒰𑒯𑒲 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒧𑒯𑒰𑒬𑒱𑒫𑒩𑒰𑒞𑓂𑒩𑒱, 𑒮𑒰𑒫𑒢 𑒂 𑒢𑒫𑒏 𑒬𑒱𑒫𑒩𑒰𑒞𑓂𑒩𑒱 𑒁𑒢𑒳𑒭𑓂𑒚𑒰𑒢𑒏 𑒁𑒫𑒮𑒩 𑒣𑒩 𑒦𑒲𑒛𑓃 𑒠𑒱𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒹𑒪𑒰 𑒪𑒰𑒑𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒯𑒰𑒬𑒱𑒫𑒩𑒰𑒞𑓂𑒩𑒱 𑒣𑒩 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩𑒧𑒹 𑒬𑒱𑒫 𑒫𑒱𑒫𑒰𑒯𑒏 𑒅𑒞𑓂𑒮𑒫 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒧𑒢𑒰𑒌𑒪

𑒣𑓂𑒩𑒐𑓂𑒨𑒰𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒯𑒰𑒬𑒱𑒫 𑒩𑒰𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏 𑒠𑒱𑒢 𑒬𑒱𑒫 𑒦𑒏𑓂𑒞𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒡𑒰𑒧 𑒣𑓂𑒩𑒐𑓂𑒨𑒰𑒞 𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢, 𑒂𑒠𑒱 𑒏𑒰𑒪𑒮𑒿 𑒬𑒱𑒫𑒪𑒱𑒓𑓂𑒑 𑒮𑓂𑒫𑒨𑒧𑓂𑒦𑒴 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒱𑒞 𑒮𑒯𑒼 𑒏𑒩𑒺𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒐𑓂𑒨𑒰𑒞 𑒁𑒕𑒱।

𑒮𑓀𑒞 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒏𑒰𑒩𑒴 𑒐𑒱𑒩𑒯𑒩𑒱𑒏𑓀 𑒣𑒬𑒳𑒡𑒢𑒏 𑒩𑒏𑓂𑒭𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒫𑒩𑒠𑒰𑒢 𑒠𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒢𑒱। 𑒏𑒯𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒐𑓂𑒨𑒰𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒏𑒰𑒩𑒴 𑒢𑒰𑒟 𑒖𑒰𑒞𑒱 𑒢𑒢𑓂𑒠𑒰𑒏𑓀 𑒢𑒰𑒟𑒳𑒣𑒢𑓂𑒟𑒏 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫𑒏𑓀 𑒁𑒦𑒱𑒭𑒹𑒏 𑒏𑒩𑒺𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯। 𑒂𑒠𑒱𑒮𑒿 𑒠𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒁𑒦𑒱𑒭𑒹𑒏𑒏 𑒢𑒰𑒟𑒳𑒣𑒢𑓂𑒟𑒏 𑒧𑒯𑒰𑒠𑒹𑒫 𑒣𑒴𑒖𑒢 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒠𑒳𑒑𑓂𑒡𑒢 𑒯𑒢 𑒕𑒪𑒟𑒱𑒢 𑒂 𑒫𑒩𑒠𑒰𑒢 𑒧𑒿𑒑𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑒯𑒪𑒟𑒱𑒢 𑒞' 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒏𑒰𑒩𑒴 𑒁𑒧𑒵𑒞𑒧𑒨 𑒣𑒬𑒳𑒏𑓀 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒠𑒰𑒢 𑒠𑒹𑒥𑒏 𑒫𑒩𑒠𑒰𑒢 𑒧𑓀𑒑𑒪𑒢𑒱। 𑒞𑒏𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒏𑒰𑒩𑒴 𑒣𑒬𑒳𑒡𑒢𑒏𑓀 𑒩𑒏𑓂𑒭𑒰 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒑𑒪𑒰𑒯 𑒂 𑒪𑒼𑒏 𑒠𑒹𑒫𑒞𑒰𑒏𑓀 𑒩𑒴𑒣𑒧𑒹 𑒣𑒴𑒖𑒢𑒲𑒨 𑒦𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒯।

𑒫𑒩𑓂𑒞𑒧𑒰𑒢 𑒧𑒹 𑒮𑓀𑒞 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒏𑒰𑒩𑒴 𑒐𑒱𑒩𑒯𑒩𑒱𑒏𑓀 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒧𑒹 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒿𑒔𑒪 𑒂 𑒢𑒹𑒣𑒰𑒪 𑒮𑒿 𑒮𑒹𑒯𑒼 𑒣𑒬𑒳𑒡𑒢𑒏 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒮𑓂𑒟𑓂𑒨 𑒪𑒰𑒦 𑒪𑒹𑒪 𑒧𑒢𑒼𑒏𑒰𑒧𑒢𑒰 𑒏𑒩𑒺𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒁𑒥𑒺𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒂 𑒧𑒢𑒼𑒏𑒰𑒧𑒢𑒰 𑒣𑒴𑒩𑒰 𑒦𑒹𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒑𑒰𑒨𑒏 𑒠𑒴𑒡 𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒏𑒰𑒩𑒴𑒏𑓀 𑒠𑒳𑒑𑓂𑒡𑒰𑒦𑒱𑒭𑒹𑒏 𑒏𑒩𑒺𑒞 𑒕𑒟𑒱। 𑒃 𑒁𑒢𑒫𑒩𑒞 𑒧𑒹𑒪𑒰 𑒢𑒯𑒱 𑒔𑒪𑒺𑒞 𑒩𑒯𑒺𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒬𑓂𑒩𑒰𑒫𑒝𑒲𑒨 𑒢𑒫𑒩𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰𑒏 𑒧𑒯𑒰𑒬𑒱𑒫𑒩𑒰𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑓀 𑒧𑒯𑒠𑒳𑒪𑒰 𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞 𑒮𑓀𑒞 𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒏𑒰𑒩𑒴 𑒐𑒱𑒩𑒯𑒩𑒱𑒏𑓀 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩 𑒧𑒹 𑒁𑒣𑒰𑒩 𑒦𑒲𑒚𑓃 𑒅𑒧𑒚𑓃𑒺𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒐𑓂𑒨𑒰𑒞 𑒕𑒢𑒱 𑒂 𑒥𑒰𑒥𑒰𑒏𑓀 𑒠𑒳𑒑𑓂𑒡𑒰𑒦𑒱𑒭𑒹𑒏 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒐𑓂𑒨𑒰𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒯𑒢 𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨𑒞𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒖𑒹 𑒖𑒯𑒱 𑒠𑒱𑒢 𑒠𑒳𑒑𑓂𑒡𑒰𑒦𑒱𑒭𑒹𑒏 𑒏𑒩𑒥 𑒮𑒿 𑒮𑒥 𑒧𑒢𑒼𑒏𑒰𑒧𑒢𑒰 𑒣𑒴𑒩𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒐𑓂𑒨𑒰𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒂𑒠𑒱 𑒏𑒰𑒪𑒮𑒿 𑒖𑒯𑒱 𑒠𑒱𑒢 𑒯𑒖𑒰𑒩𑒰𑒏𑓀 𑒮𑓀𑒐𑓂𑒨𑒰𑒧 𑒪𑒼𑒏 𑒅𑒧𑒚𑓃𑒺𑒞 𑒞' 𑒯𑒖𑒰𑒩𑒼 𑒪𑒲𑒙𑒩 𑒠𑒳𑒑𑓂𑒡𑒰𑒦𑒱𑒭𑒹𑒏 𑒏𑒩𑒺𑒞 𑒕𑒟𑒱 𑒖𑒹 𑒧𑒢𑓂𑒠𑒱𑒩𑒏 𑒣𑒰𑒕𑒴 𑒧𑒹 𑒥𑒯𑒺𑒞 𑒏𑒼𑒬𑒲 𑒢𑒠𑒲𑒧𑒹 𑒮𑒧𑒰𑒯𑒱𑒞 𑒦𑒹𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒐𑓂𑒨𑒰𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒠𑒴𑒡𑒏𑓀

अलावा बाबा कारूकेँ [illegible], पायस, लाठी, [illegible] आ फूल पालकेँ संग दूध अर्चना कयल जाइत अछि। दूध अर्चनाकेँ संग भक्त गान सेहो करैत छथि जाहि सँ मन्दिर परिसर भक्तिमय भय जाइत अछि। महाशिवरात्रीकेँ मन्दिर परिसरम गाय दूधसँ बनल खीरकेँ महाप्रसाद बनैत अछि। महाप्रसादक लेल बड़ नमहर कतार लगैत अछि आ भक्त [illegible] भक्त इंतज़ार कय महाप्रसाद प्राप्त करैत छथि। जाहि लेल [illegible] पुलिसकेँ बहुत परिश्रम करय पड़ैत छनि। जाहि दिन भीड़केँ [illegible] [illegible] [illegible] दू किलोमीटर पहिने [illegible] भक्त पैदल करयल जाइत अछि आ श्रद्धालु सँ भक्त पैदल मन्दिर परिसर भक्त पहुँचैत छथि।

कोना पहुँचब बाबा कारू खिरहरि मन्दिर

सहरसा रेलवे स्टेशन, जतय देशकेँ सब जगह सँ ट्रेन अबैत अछि पहुँचि, ओतय सँ १०किलोमीटर बाबा कारू खिरहरिकेँ मन्दिर छनि। देश केँ प्रमुख शहर सँ
सीधे बस सँ सेहो सहरसा पहुँचि जतय सँ ऑटो बुक करय बाबा कारू खिरहरि मन्दिर आसानी सँ पहुँचल जा सकैत अछि। स्थानीय नेता लोकनिकेँ प्रयाससँ ई जगह पर्यटक स्थलकेँ रूपमे सेहो विकसित नय भेल अछि, ताहिठाम सब सुविधा उपलब्ध अछि। ओना त' मिथिलाक माटिपर स नहि नाव बसल बसल अछि ताहू स जहि क्षेत्र स किछु विलय अछि, ताहि कारणेँ जहि स्थल केँ पवित्रता जानब करी।

लोक आस्थाक केन्द्र बाबा कल्याणेश्वर स्थान

एहन मान्यता अछि जे बाबा कल्याणेश्वर मन्दिरमे जे कियो भक्त मनोकामना अबैत छथि ओ अवश्य पूरा होइत अछि। आदि कालसँ एतय दूर-दूर सँ भक्त आबि मनोकामना अबैत छथि ओ मनोकामना पूरा भेलाक बाद पुनः आबि बाबाकेँ दूध चढ़बैत छथि आदिसँ रोज दीप जरैत अछि आ भक्त प्रसाद ग्रहण करैत छथि। मन्दिरमे बाबा कल्याणेश्वरकेँ बगलमे हुनक [illegible] बाबा [illegible] केँ मूर्ति स्थापित छनि। दुनू गोटेक बीच अगाध प्रेम छलनि। बाबा कल्याणेश्वर स्थानमे गाँजा सेहो चढ़ाओल जाइत अछि। मन्दिरकेँ पुजारी कहैत छथि जे बाबा गाँजा केँ प्रेमी छलाह आदि कालसँ दू किलो गाँजा रोज चढ़ाओल जाइत अछि। मन्दिर कमला नदीक बिलकुल किनार पर बनलाक बान्ह कमला नदीक जल धारा अखन तक बाबाक मन्दिरकेँ कोनो क्षति नहि पहुँचलनि अछि। ई बाबा केँ चमत्कार छनि जे एक साल कमला नदीक बाढ़ि मन्दिरकेँ बिना कोनो नुकसान पहुँचने चलि जाइत अछि। ई स्थान केवल धर्म स्थानटा नहि अपितु मिथिलाक एकटा सांस्कृतिक विरासत सेहो अछि।

-प्रेमनन्दन झा "पवन" संगम विहार, दिल्ली

-

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

𑓑. 𑒛𑒰. 𑒫𑒱𑒣𑒱𑒢 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒗𑒰- 𑒧𑒯𑒰𑒏𑒫𑒱 𑒦𑒰𑒮 𑒣𑓂𑒩𑒝𑒲𑒞 𑒏𑒩𑓂𑒝𑒦𑒰𑒩𑒏 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠 (𑒦𑒰𑒑-𑓖)

𑒧𑒯𑒰𑒏𑒫𑒱 𑒦𑒰𑒮 𑒣𑓂𑒩𑒝𑒲𑒞 𑒏𑒩𑓂𑒝𑒦𑒰𑒩𑒏 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠

(𑒔𑒞𑒳𑒩𑓂𑒟𑒦𑒰𑒑)

𑒛𑒰. 𑒫𑒱𑒣𑒱𑒢 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩 𑒗𑒰

(𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰𑒣𑒏 𑒂 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏- 𑒖𑒰𑒯𑓂𑒢𑒫𑒲 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞 𑒄-𑒬𑒼𑒡𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰)

(𑒨𑒠𑒱 𑒮𑒿 𑒣𑒴𑒩𑓂𑒫 𑒧𑒯𑒰𑒏𑒫𑒱 𑒢𑒰𑒧 𑒏𑒋𑒪 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒏𑒪𑒰𑒢𑒰𑒟𑒧 𑒍 𑒏𑒟𑒰𑒏 𑒧𑒢𑒼𑒩𑒘𑓂𑒖𑒢𑒰 𑒠𑒋 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒑𑒹𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒰𑒔𑒲𑒢𑒞𑒧 𑒩𑒔𑒢𑒰 𑒁𑒕𑒱, 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞 𑒮𑒿 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒨𑒠𑒱 𑒑𑓂𑒩𑒢𑓂𑒟𑒏 𑒞𑒵𑒞𑒲𑒨𑒐𑒝𑓂𑒛𑒦𑒰𑒑 𑒡𑒩𑒱 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒁𑒢𑒳𑒫𑒰𑒠𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒮𑓂𑒞𑒳𑒞 𑒏𑒋𑒪 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑒦, 𑒂𑒢𑒢𑓂𑒠 𑒪𑒰𑒠𑒱 𑒮𑒿 𑒂𑒨𑒳)

𑒏𑒟𑒰𑓁- 𑒞𑒞𑓁 𑒏𑒞𑒱𑒣𑒨𑒏𑒰𑒪𑒰𑒞𑒱𑒏𑓂𑒩𑒧𑒹 𑒏𑒠𑒰𑒔𑒱𑒔𑓂𑒔𑒰𑒪𑒢𑒧𑒴𑒪𑒮𑒧𑒲𑒣𑒢𑓂𑒞𑒏𑒳𑒮𑒳𑒧𑒰𑒠𑒰𑒢𑒰𑒨 𑒑𑒞𑒫𑒞𑒰 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒏𑒰 𑒧𑒯𑒰𑒢𑒳𑒑𑒞𑒰𑓄𑒮𑓂𑒧𑒱।

𑒏𑒟𑒰- 𑒂𑒑𑒰𑒿𑒏 𑒥𑒠 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒮𑒧𑒨 𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩𑒏𑒹𑒿 𑒮𑓀𑒑 𑒤𑒪-𑒧𑒴𑒪-𑒮𑒧𑒱𑒡𑒰-𑒤𑒴𑒪 𑒂𑒠𑒱 𑒁𑒢𑒥𑒰𑒏 𑒯𑒹𑒞𑒳 𑒯𑒧 𑒑𑒹𑒪 𑒕𑒪𑒲

𑒁𑒢𑓂𑒫𑒨𑓁- 𑒞𑒞𑒮𑓂𑒞𑒞𑓁।

[illegible]- [illegible]

[illegible]- 𑒞𑒞𑓁 𑒮 [illegible] 𑒢𑒱𑒠𑓂𑒩𑒰𑒫𑒬𑒧𑒳𑒣𑒑𑒞𑓁।

[illegible]- [illegible]

[illegible]- [illegible]।

[illegible]- [illegible]

[illegible]- 𑒞𑒞𑓁

[illegible]

[illegible] 𑒢𑒰𑒧 [illegible]

[illegible]।

[illegible] 𑒮 [illegible]।

[illegible] ॥ 10 ॥

𑒬𑒰𑒏𑒹𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒠𑒳𑒩𑓂𑒑𑒰𑒣𑒴𑒖𑒢 𑒥𑒢𑓂𑒡𑒳𑒧𑒯𑒱𑒪𑒰𑒧𑒏 𑒥𑒲𑒞𑒰 𑒠𑒧𑒢 𑒏𑒵𑒞𑓂 𑒮𑓀𑒑𑓂𑒩 𑒮𑓀 𑒏𑒯𑒱 𑒪𑒪𑒏, 𑒞𑒹𑒐𑒰 𑒑𑒳𑒝𑒫𑒞𑒲 𑒏 𑒢𑒱𑒠𑓂𑒩𑒰 𑒞𑓀𑒑 𑒢𑒯𑒱 𑒢𑒨 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒢 𑒥𑒯𑒱 𑒅𑒥 𑒮𑓀 𑒠𑒧 𑒬𑒰𑒠𑒱 𑒮𑒧𑒮𑓂𑒏 𑒥𑒠𑒢𑒰 𑒏 𑒫𑒻𑒬𑒨𑒢𑓂𑒢 𑒮𑒯𑒱 𑒪𑒪𑒞𑒳𑓀। 𑒬𑒰𑒏𑒹𑒩 𑒥𑒰𑒠 𑒠𑒴𑒢 𑒮𑓀 𑒪𑒥𑓂𑒥𑒨𑒥𑓂𑒥 𑒢𑒨 𑒥𑒰𑒪𑒰𑒏 𑒏𑒥𑒫𑒰 𑒂 𑒅𑒚𑒱 𑒏𑓀 𑒥𑒻𑒮 𑒥𑒰𑒪𑒰 𑒂 𑒠𑒧𑒥 𑒆𑒪𑒱𑒨 𑒠𑒳𑒨 𑒖𑓂𑒘𑒰𑒡𑒰𑒧𑒱 𑒮𑓀 𑒡𑒡𑒏𑒻𑒞 𑒢𑒰𑒨 𑒆𑒪𑒰𑒥𑓂𑒥𑒱 𑒏𑒱 𑒮𑒧𑒨 𑒥𑒰𑒪𑒰𑒨𑒥 𑒮𑒞𑒰𑒿 𑒏 𑒮𑒧𑓂𑒥 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒩𑒰𑒪 𑒢𑒨 𑒖𑓂𑒘𑒨𑒞।

𑒁𑒢𑓂𑒫𑒨𑓁- 𑒮𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰𑒧𑒢𑒱𑒠𑒱𑒞𑓀 𑒞𑒞𑒢𑒫𑒞𑒰।
𑒁𑒢𑓂𑒫𑒨- 𑒬𑒰𑒠 𑒏𑒵 𑒞 𑒥𑒠𑒳𑒞 𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰𑒏𑒹𑒩 𑒑𑒩𑓂𑒦 𑒏𑒯𑒱 𑒆𑒪𑒰𑒥𑓂𑒥𑒱।

𑒙𑒲𑒏𑒰𑓁- 𑒨𑒫𑒲𑒏𑓂𑒭𑒧𑒠 𑒞𑒰𑒫𑒠𑒮𑓂𑒧𑒮𑓂𑒨 𑒫𑒵𑒢𑓂𑒠𑒰𑒢𑒧𑒰। (𑒞𑒠𑓂𑒫𑒰 𑒏𑒵𑒠𑓂𑒫𑒰) 𑒨𑒞𑒰𑒞𑓂𑒨𑒮𑓂𑒧𑒰𑒞𑒱 𑒢𑒱𑒫𑒲𑒨𑒰𑒞𑒲𑒫 𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒧𑒢𑒰। 𑒮𑒠𑒱 𑒨𑒰।
𑒙𑒲𑒏𑒰- 𑒞𑒰𑒫𑒞 𑒡𑒢𑒱 𑒠𑒧 𑒮𑒨𑒢 𑒮𑒧𑓂𑒥 𑒏𑒢𑓂𑒨𑒰 𑒏 𑒨𑒫𑒲𑒏𑓂𑒭𑒞𑒰 𑒏𑒻𑒞 𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒲। 𑒏𑒵 𑒮𑒥 𑒢𑒰𑒬𑓂𑒔𑒱𑒫𑒠𑒱𑒞 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒥𑒠𑒪 𑒮𑒞𑓂𑒫𑒱 𑒬𑒲𑒫...

𑒬𑓂𑒩𑒧𑓀 𑒯𑒱 𑒫𑒻𑒭𑓂𑒝𑒢 𑒢𑒱𑒧𑒲𑒪𑒱𑒞𑒹𑒏𑓂𑒭𑒝𑒰।

𑒧𑒳𑒯𑒳𑓁 𑒮𑓂𑒐𑒪𑒢𑓂𑒞𑒰 𑒫𑒱𑒫𑒩𑓂𑒞𑒰𑒮𑓂𑒫𑒫𑒏𑓂𑒩𑒧𑒰𑓁।

𑒑𑒞𑒮𑓂𑒨 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒠𑒢𑒰𑒢𑒑𑒡𑓂𑒫𑒱𑒢𑒰।

𑒢𑒱𑒫𑒹𑒠𑒨𑒢𑓂𑒞𑒲𑒫 𑒥𑒪𑒼 𑒢𑒱𑒫𑒩𑓂𑒞𑓂𑒞𑒢𑒧𑓂 ॥11॥

जखन दीनता मे आँखि बन्न कएन ई श्वासो जखन विवशता मे कानबाक बाधा मे ठिठकि बढ़ल छथि। मनसन्देशाय ओ समान कल्पमधुपाना बला तापीनाक्ष मता दीनदीन सम करा सुख्यल मे मान् नाग ओवाक दन्तु कहैत छथि।
तस्यावलोकनस्य निःश्वासः।

तं वत्स दुष्टुनि मन्दा निद्रा सम बाल

सख्यः- ताः कथं किं नु दृश्यसे।

सखी: ई त मदन कहुसा छथि ई की सम बदल छथि।

करा:- सख्यमाने! गलमलं विषादेन।
करा- सख्यमाने! गदनि विषाद ग्रस्त छथि।

दत्ताऽपि लभत स्वर्गं क्रिया नु लभत यत्नः ।

ओत बदुमत लाक नामि निश्चलता बरो ॥ 12 ॥

सुख मे मबला मे स्वग सन्ते स्त्री क्रितला मे बाक गतगाब सुख मे दानि ने किमाक त संसार मे ओनू माच्य छथि।

जारि ज
जारी ..

ई दि सुखेश्वानिबतिताना

𑒠𑒵𑒭𑓂𑒙𑒰𑓁 𑒮𑒳𑒣𑒩𑓂𑒝𑒹𑒢 𑒮𑒧𑒰𑒢𑒫𑒩𑓂𑒑𑒰𑓁

𑒦𑒲𑒧𑒮𑓂𑒞𑒳 𑒏𑒪𑓂𑒣𑒰𑒢𑓂𑒞𑒏𑒰𑒪𑒮𑓂𑒨 𑒖𑒰𑒞𑒰𑓁

𑒣𑒯𑓂𑒢𑒳 𑒧𑒰𑓀 𑒣𑒮𑓂𑒨𑒰𑒣𑒱 𑒣𑒯𑓂𑒢𑒲𑒞𑒮𑓂𑒨𑒧 ॥13॥

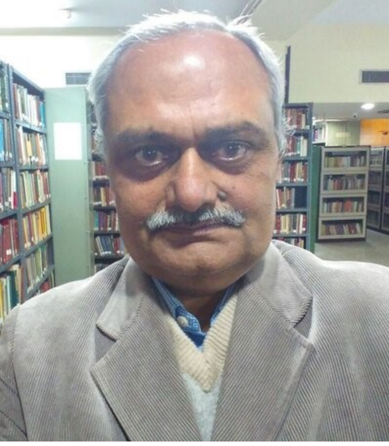
𑒖𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒮 𑒨𑒳𑒠𑓂𑒡 𑒧𑒹𑓀 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒫𑒰𑒯 𑒢𑒻 𑒢𑒨 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒣𑒰𑒝𑓂𑒛𑒫 𑒑𑒝𑒰𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒢 𑒫𑒩𑓂𑒑𑒏 𑒪𑒼𑒏 𑒞𑒟𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒰𑒫𑒪𑒰 𑒏𑒹 𑒪𑒼𑒏𑒰𑒣𑒧𑒰𑒢 𑒏𑒩𑒳𑒪𑒲 𑒖𑒰𑒞𑒰 𑒖𑒱𑒢𑒏𑒰 𑒣𑒏𑓂𑒭 𑒠𑒹𑒧𑒰𑒢 𑒏 𑒥𑒰𑒏 𑒣𑒰𑒞𑒲 𑒕𑒰 𑒠𑒹𑒧𑒏 𑒣𑒏𑓂𑒭 𑒏𑒨𑒰।

𑒏𑓂𑒩𑒧𑒬...

-

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒋।

𑓙.𑓔.𑒩𑒫𑒲𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩- 𑒧𑒰𑒞𑒵𑒦𑒴𑒧𑒱 (𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮)- 𑓔𑒧 𑒐𑒹𑒣


𑒩𑒫𑒲𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒢𑒰𑒩𑒰𑒨𑒝 𑒧𑒱𑒬𑓂𑒩

𑒧𑒰𑒞𑒵𑒦𑒴𑒧𑒱 (𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮)- 𑓔𑒧 𑒐𑒹𑒣

𑓔

𑒋𑒯 𑒧𑒡𑒳𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞𑒏 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒰𑒪𑒑𑒞 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒦𑒹𑒪। 𑒧𑒰𑒮 𑒠𑒱𑒢 𑒥𑒲𑒞𑒻𑒞-𑒥𑒲𑒞𑒻𑒞 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒅𑒢𑓂 𑒮𑒰𑒿𑒗𑒱𑒏 𑒖𑓂𑒨𑒼𑒞𑒱 𑒥𑒰𑒨𑒮 𑒦𑒰 𑒑𑒹𑒪। 𑒖𑒢𑒮𑒢𑓂𑒢𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒢𑓂𑒢𑒞𑒰𑒏 𑒁𑓀𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒹𑒪। 𑒂𑒥 𑒪𑒼𑒏𑒏 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮 𑒦𑒹𑒪𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒂 𑒮𑒨𑒢 𑒨𑒳𑒫𑒏𑒏 𑒮𑒴𑒞 𑒖𑒳𑒏 𑒮𑒏𑒞𑒰𑒯। 𑒏𑒞𑒼𑒏 𑒣𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏𑒰𑒮𑒿 𑒂𑒧𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩𑒱𑒞 𑒫𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒏 𑒅𑒣𑒢𑓂𑒨𑒰𑒮 𑒮𑒧𑒰𑒖 𑒏𑒪𑓂𑒨𑒰𑒝 𑒏𑒩𑒞 𑒏𑒩𑒰 𑒮𑒏𑒞𑒰𑒯। 𑒧𑒰𑒮𑒠𑒱𑒢𑒮𑒿 𑒂 𑒏𑒞𑒩𑒳 𑒥𑒹𑒪 𑒢𑒯𑒱 𑒩𑒯𑒪𑒱 𑒢 𑒪𑒼𑒏𑒏𑒮𑒿 𑒏𑒏𑒰 𑒖𑓀𑒑 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒁𑒢𑒳𑒧𑒞𑒱 𑒩𑒯𑒻𑒏। 𑒋𑒯𑒏 𑒏𑒩𑒥 𑒩𑒯𑒢𑒱 𑒖𑒹 𑒮𑓂𑒤𑒳𑒪𑒰𑒖𑒏

[illegible]

। हमरा विश्वास अछि जे अहाँ अपन कौलिक मर्यादाक अनुकूल चलि परम्पराकेँ ध्यानमे रहब करबाक दृढ़ संकल्प राखब । हमरा लेल चलिमे पैघ परम्पराक अपन आधार की तरह सकैत अछि?"

"हमरा तँ अपनेक बिना चिन्ता जग समधिक मामिलामे बुझा रहल अछि । भगवत्कृपा! हम जे किछु छी से जे किछु चलैन धरि कएल सकलहुँ से अपनेक कृपा थिक । आब तँ किछु पुरुष नहि रहल अछि जे कहबाक जरूरी पड़ैक अपनेक आशीर्वाद आ वैदहीक सहयोगसँ हमर नवक शक्ति चयन नव बोल अछि । मुदा ...."

"मुदा की? अहाँ तँ परमविद्वान आ ज्ञानी छी । स्वयं अपन मार्ग प्रशस्त करए सकैत छी आ करब करबा धरि हम कतहु अध्यक्ष क्षोभ जे रहल छी । मिथिलावासी तँ अपनेकेँ सतत स्वागत करबाक हेतु तत्पर रहत । "

"रहत मामिलामे लोकसभ बाँचि सकत । चलिनाम चलैत रस्ते के करत? कतौ आ कुशासन चलतु पहाड़ कलक तहन?"

"बेसी चिंता नहि करू । समस्या अपन समाधान स्वयं करैत अछि ।"

पतिक गप्प कलाक बाद जयन्तक विशेष चिंता रहल कएलनि । हुनक चिंतन आ उदास देखि भगवत्की पुछलथिन-

"𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒔𑒱𑓀𑒞𑒰𑒏 𑒏𑒰𑒩𑒝 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒂𑒍𑒩 𑒥𑒳𑒗𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒮𑓂𑒣𑒭𑓂𑒙 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲 ।"

"𑒮𑓀𑒏𑒼𑒔𑒫𑒬 𑒢𑒯𑒱 𑒏𑒯𑒱 𑒣𑒰𑒥𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒲 𑒂𑒔𑒰𑒩𑓂𑒨𑒫𑒩!"

"𑒯𑒧𑒩𑒰-𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒮𑓀𑒥𑓀𑒡𑒧𑒹 𑒮𑓀𑒏𑒼𑒔 𑒏𑒯𑒱𑒂 𑒮𑒿 𑒦𑒹𑒪? 𑒁𑒣𑒢 𑒧𑒢𑒏 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒏𑒯𑒥 𑒢𑒯𑒱 𑒞𑒿 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒥𑒳𑒗𑒥𑒻𑒏 𑒏𑒼𑒢𑒰? 𑒮𑒧𑒰𑒡𑒰𑒢 𑒞𑒰𑒏𑒞 𑒏𑒼𑒢𑒰?"

"𑒯𑒧 𑒮𑒲𑒞𑒰 𑒪𑒑 𑒏𑓄 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒳𑒙𑒲 𑒕𑒲 । 𑒂 𑒯𑒧𑒩 𑒥𑒰𑒪𑒮𑒐𑒰 𑒫𑒱𑒫𑒹𑒏 । 𑒑𑒰𑒧 𑒁𑒣𑒰𑒪𑒰 𑒧𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒢𑒮𑒿 𑒥𑒮𑒲 𑒞𑒨 𑒦𑒹𑒪 । 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒂𑒞𑓂𑒧𑒥𑒪𑒱 𑒩𑒴𑒣 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒮𑒏𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒂 𑒂 𑒍 𑒞𑒰𑒪𑒧 𑒕𑒟𑒱, 𑒕𑒟𑒱𑒢𑒰 𑒏𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒟𑒱?"

"𑒯𑒧 𑒫𑒹𑒠 𑒧𑒡𑒳𑒏𑒰𑒢𑓂𑒢𑒮𑒿 𑒣𑒜𑒱 𑒢𑒱𑒩𑒮𑓂𑒨𑒣𑒩 𑒏𑒹𑒏𑒩𑒥 𑒨𑒖𑓂𑒘 𑒏𑒩𑒥𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒏𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒣𑒩𑓀𑒞𑒳 𑒂 𑒥𑒰𑒞 𑒏𑒿 𑒏𑒞𑒯𑒳 𑒮𑒰𑒧𑒩 𑒕𑒱𑒧 𑒣𑓂𑒩𑒳𑒧𑒰 𑒯𑒼𑒞 𑒕𑒪𑒰𑒯 । 𑒏𑒯𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒂 𑒣𑒰𑒢𑒰 𑒏𑒱𑒣𑒰𑒏 𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒪𑒯𑒱?"

"𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒲𑒞𑒰𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒖𑒱𑒖𑓂𑒘𑒰𑒮𑒰 𑒥𑒴𑒗𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒞𑒿 𑒯𑒧 𑒩𑒯𑒳𑒞 𑒣𑒩𑓂𑒨𑒰 𑒏𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒮𑒿 𑒮𑒞𑒲 𑒮𑒴𑒣𑒢𑒰 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒏𑒿 𑒠𑒲 । 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒮 𑒮𑓀𑒦𑒫 𑒢𑒯𑒱 𑒦𑒪 । 𑒑𑒰𑒧𑒰𑒏 𑒪𑒼𑒏𑒮𑒦 𑒣𑒜𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒩𑒫 𑒮𑒲𑒢 𑒞𑒨 𑒖𑒰𑒖𑒰 𑒕𑒟𑒱 । 𑒏𑒯𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒣𑒰𑒯𑒢 𑒏𑒼𑒢 𑒥𑒰𑒞 𑒕𑒻𑒏 𑒮𑒿 𑒂 𑒮𑒞 𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒏𑒯𑒥𑒰𑒮𑒿 𑒥𑒰𑒿𑒔𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒕𑒟𑒱 । 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒁𑒯𑒰𑒿 𑒣𑒹𑒩𑒨 𑒩𑒰𑒐𑒳 𑒂𑒥 𑒞𑒿 𑒑𑒰𑒧𑒧 𑒩𑒯𑒥 । 𑒮𑒞𑒥𑒰𑒞 𑒁𑒣𑒢 𑒣𑒞𑒰 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒖𑒰𑒨𑒞 ।"

"𑒣𑒞𑒰 𑒪𑒰𑒑𑒨 𑒖𑒰𑒨𑒥 𑒯𑒞𑒹𑒏 𑒞𑒯𑒢 𑒢? 𑒢𑒰𑒢𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒰𑒩𑒏

𑒁𑒢𑒱𑒩𑒳𑒠𑓂𑒡𑒏 𑒂𑒢𑓀𑒠𑒏 𑒚𑒰𑒧 𑒥𑒠𑒪 𑒁𑒕𑒱 । 𑒁𑒧𑓂𑒧𑒰 𑒥𑒹𑒙𑒏𑒹𑒿 𑒢𑒰𑒢𑒰 𑒞𑒳𑒭𑓂𑒨 𑒏𑒱𑒋𑒏 𑒥𑒠𑒪𑒞𑒢𑒱?"

"𑒥𑒰𑒞 𑒄 𑒕𑒻𑒏 । 𑒋𑒢𑒰 𑒁𑒯𑒰𑒿𑒮𑒦 𑒫𑒱𑒠𑓂𑒫𑒰𑒢 𑒂 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒲 𑒨𑒳𑒫𑒏𑒮𑒦𑒏𑒹𑒿 𑒅𑒔𑒱𑒞 𑒢𑒯𑒱 𑒁𑒕𑒱 । 𑒄 𑒖𑒲𑒫𑒢 𑒏𑓂𑒭𑒝𑒦𑓀𑒑𑒳𑒩 𑒁𑒕𑒱। 𑒋 𑒥𑒴𑒕𑒱 𑒄 𑒣𑒩𑒱𑒮𑓂𑒟𑒱𑒞𑒱 𑒁𑒕𑒱 𑒂𑒠𑒲𑒬 𑒁𑒣𑒢 𑒂𑒬𑒰𑒏 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒅𑒠𑓂𑒡𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒥 𑒅𑒔𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱।"

𑒂𑒬𑒰𑒣𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒄𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒂𑒬𑓂𑒔𑒩𑓂𑒨 𑒪𑒑𑒪𑒻।

𑒧𑒼𑒯𑒢𑒥𑒰𑒥𑒴𑒏 𑒮𑒳𑒧𑒢𑒏 𑒪𑒑 𑒏𑒋 𑒂𑒬𑒰𑒣 𑒧𑒢𑒰 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒱𑒞 𑒥𑒜𑒱𑒞 । 𑒋𑒢𑒰 𑒂𑒠𑒱𑒨𑒰𑒧 𑒥𑒠𑒱𑒨𑒰 𑒏𑒋 𑒂 𑒏𑒲 𑒏𑒋 𑒪𑒹𑒞𑒯𑒱? 𑒄𑒬𑓂𑒫𑒩𑒲𑒡𑒰𑒧 𑒞𑒿 𑒮𑒞 𑒥𑒰𑒥𑒹𑒏 𑒥𑒠𑒥 𑒏𑒋𑒥𑒯𑒱 𑒢𑒯𑒰𑒫𑒱 𑒏𑒲 𑒚𑒩?

𑒢𑒥𑒠-𑒢𑒥𑒠𑒮𑒿 𑒄𑒬𑓂𑒫𑒩𑒏𑒿 𑒥𑒳𑒧-𑒮𑒳𑒧 𑒏𑒋 𑒂𑒬𑒰𑒣𑒏 𑒁𑒣𑒢 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒨𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒄𑒬𑓂𑒫𑒩𑒲𑒡𑒰𑒧 𑒠𑒳 𑒥𑒰𑒢 𑒏𑒪𑒰𑒠। 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒏 𑒏𑒠𑒧 𑒕𑒪𑒰𑒏𑒏 𑒪𑒰𑒏 𑒂𑒥𑒱 𑒏𑒋 𑒠𑒳𑒢𑒏𑒮𑒢𑒏𑒿 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒮𑒲𑒧𑒰𑒢𑒮𑒿 𑒥𑒜𑒞 𑒠𑒴𑒩 𑒡𑒩𑒱 𑒁𑒥𑒱𑒬𑓂𑒫𑒰𑒮 𑒯𑒪𑒏। 𑒏𑒞𑒰 𑒥𑒰𑒨𑒮 𑒠𑒥𑒰𑒏 𑒠𑒳 𑒞𑒹𑒨𑒰𑒩 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒪𑒞 𑒕𑒪 । 𑒄𑒬𑓂𑒫𑒩𑒏 𑒞𑒿 𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒰𑒞 । 𑒂 𑒞𑒿 𑒢𑒢𑒰 𑒄𑒏𑒿 𑒏𑒰𑒢𑒱 𑒥𑒠𑒪 𑒕𑒪𑒰𑒠। 𑒠𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒂𑒿𑒠𑒱𑒮𑒿 𑒢𑒱𑒩𑓀𑒞𑒩 𑒢𑒰𑒩 𑒨𑒠𑒩-𑒨𑒠𑒩 𑒕𑒧𑒱 𑒥𑒠𑒪 𑒕𑒪।

𑒡𑒰𑒥𑒏 𑒨𑒰𑒩 𑒕𑒪𑒞𑒯𑒱 𑒂𑒬𑒰𑒣𑒏 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒨 𑒮𑓀𑒑 𑒂𑒨𑒳 𑒥𑒰𑒢𑒹 𑒕𑒪𑒰𑒠। 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒪𑒰𑒏𑒮𑒢 𑒮𑒢𑒰 𑒪𑒲𑒪𑒹 𑒕𑒪𑒰𑒠 । 𑒄𑒬𑓂𑒫𑒩 𑒁𑒣𑒢𑒹 𑒡𑒰𑒥𑒏 𑒏𑒰𑒞𑒧 𑒥𑒹𑒮𑒪 𑒥𑒜𑒱 ।

𑓒.𑓔.𑒛ॉ 𑒬𑒹𑒤𑒰𑒪𑒱𑒏𑒰 𑒫𑒩𑓂𑒧𑒰- 𑒨𑒳𑒫𑒰𑒢 𑒥𑒱𑒠𑒹𑒬𑒲𑒏 𑒩𑒓𑓂𑒑 (𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝)

𑒛ॉ 𑒬𑒹𑒤𑒰𑒪𑒱𑒏𑒰 𑒫𑒩𑓂𑒧𑒰

𑒨𑒳𑒫𑒰𑒢 𑒥𑒱𑒠𑒹𑒬𑒲𑒏 𑒩𑒓𑓂𑒑 (𑒨𑒰𑒞𑓂𑒩𑒰 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒧𑒩𑒝)

𑒖𑒐𑒢 𑒥𑒱𑒠𑒹𑒬𑒲 𑒥𑒰𑒿𑒡 𑒥𑒢𑒱 𑒑𑒹𑒪 , 𑒮𑒥 𑒢𑒰𑒑𑒩𑒱𑒏 𑒏𑒹 𑒨𑒳𑒫𑒰𑒢 𑒥𑒱𑒠𑒹𑒬𑒲

सँ 'नवी जिन्दगी' मे स्वागत छ' कहल गेल तँ दुनूक अंगद बाबूजी नमहर साँस निकालल आ मंदिर सब सम्पूर्ण महादेव ,पंडी कहलथिन , तेसर मंदिर काशी अयना छ नै कहा सकलेब ; हुना आदि दुबान जिन्दगीक साक्षी हम सब -- हह हह आ हह अस्फुरण छ हस्तहता म रमा श्री छ महाप्रसादक अवधान हमरा बम्बा सब दिसम्बर म दिल्ली ल' अनलक , तकरा विकास श्रीक ममुखी अबाक ठिक्क न' गेल . नुकत नू झाड़ि गेल झलाह , हम विश्विद्यालय म झलों। हम मना छ' कलों ता सब अ हमरा झाड़ि। हम त ताव काबरा अबा ल चाहैत छी मधी , सब नाऊ वादिन ताथा संग त कहता , बाजीब मंजीब छ अबाक दूर मान झल ढाली अरा अलसा कहल झलीह , आकाधि अविति अझलि कहल झलीह संस्कृति मात मामक मानू । ९९ दिसंबर छ नावताव हाम सीहाव क़्ाबालिन गाड़ी म हम सब बिना नलों। अदिदास कुहसक कावरा हान सब आप हम ध्रुंधा लहा चलि कहल झल , आदिदास बम्बा मतक पहाड़ पव अबाक ठिक्क कुआदम झल ना। गाड़ी म हम आदमी त झलों हुना आदु म बसी नाल ,काठिगन, काहा सब तबल झला। मवव नहव म बादव बाबूजा बादक बाकन पव गाड़ी कुकल - हम सब बाद पीवैत कहलों आ तकरा गाड़ी मे तवह तवह कव अलढे बाँबी मन बमबमाइत झुकाप निकालि आदि म घूड़ी नुकिया, तवह तवह छ धुँआव मनक दिस लगलीह। हमव आँखि नावा गेल ---आय तकरा छ याया कहितैब तँ नुकत- आव की सब झी गुड़िया निकल निकल --तवह तवह कव नाअन कुनक

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

नदी- झरना गगन नलिनि में ससस वसुधा कँ जीवनदान दैत रहल . नदी मेदनी विद्यापतिक नगर छीक , गाँम ,तुकम , पीड़ हवनार में तनिसर तनिसर पहाड़ोक मध्य छ नवीन बस्ती --युवान मेदनीक विद्यापतिक गाम ! हमर मनक गाछी ऊंच नीच सघातक सड़क पर नीचा दिस जागि रहल छल .गढ़वालक पहाड़ोक मध्य गहवर क विस्तृत लागल छ रहल छल . उपरि में गंगा स मेदनी ओस

क दृश्य बड़ मनोरम लागि रहल छला नांति नांति क मशीन में पहाड़क छाती क चिरी पाकरा समतल मैदान बनैँ जोतस पा समतल बना देल गेल छल . टैक , मोटर ,क्रेन आदि मशीन सब नीचा स ऊपड़ा सऊपड़ा एतक लागि रहल छलाकेल एतुत छल ए १२०६ मी . ऊँच मेदनी बांधक स्थान विश्व भरि सब में ऊँच बांध स में पाँचम स्थान पाबत . हिमालयक कोर स बनि रहल छ बांध मुरुकत में गप्पी किलोमीटर उत्तर स नागिनरी ए तिलंगना नदीक उद्गम स्थान में कशीर ऊढ़ किलोमीटर नीचा मेदनी स बनि रहल छला यादि बांध में कशीर ११२०मेगावाट बिजली निकलबाक ए ३२६ लाख हेक्टर खेत पटाबाक योजना छला यादि बांध लल ऊपात ६६५०लाख घनमिक मीटर पानि जमा कएल जएता याकरा लल गर्भाज़ कएल गेल छ याकर तल स ४२ मीटर पानि याकर पा सब में ऊपर १०मी- याकर नदी स्थानीक वस्थानी जलाशयक निमाण न' रहल छल . युवान मेदनी पहुंचना लल नागिनरी पर बनल कापक पुल हमर मनक ऊंतज़ार क' रहल छल , पुना पुल पर गाड़ी याना

[illegible]

[illegible]

[illegible]

पर शाक्त आ विशेषता । धूतगंगा , तिलंगना आ नागेश्वरीक संगम स्थल पर बनल सप्तेश्वर महादेवक मंदिर अद्भुत छैक सेहो पहुँचलौं तँ आदिवास पौराणिक के सहस्र गज बांध विराधी नाराक संग धरना पर बैसल बलात्‌ बड़का बैनर टाँगल छल

' हम त' कहब पहिल बेर गहबाछयाँ स पाब या छथि , लेकिन हमार आ सपन कहाँ छयेर ! हम त' सपन बी ल टूब कहब बात के गम किस, ओसा केन सा नश्व है छ नज़र हमस मिलाय , लोग कल्पत छत है पक स्तर बनान स , कछु बकता नदी वासियाँ उजाड़न स शिहरी उजाड़ः लोगों के नहर है -
----------' (हम तँ पहिल बेरक गहिर कें पाब के लब ; मुदा हमर आ सपन कतय छयत , सपनहि लोग हमरा ल टूबल पहि बात कर दुःख ककरा ; के सब्हि छ हमरा सं आँखि मिलायत , लोक कल्पी छयत सब्हि पकल्प स्तर बनयबा स , कथा स्वार्थित नय सब्हि गाम स्तर उजाड़बा स ; शहरी उजाड़ल लोकक नहर सब्हि)
हमर मनक पविजय सुनतहि आ मन खीगल पलैद --सहाँ पहला सं आयल छी , सहाँ मन दिल्ली स --सहाँ मन आत छ हमर मनक व्यथा सुनाबू, लोग पकला कल्पना किनेत सब्ब त आकता सं लगाब त' छयत छैक , कछु त हमर मनक सपन नहर छी। माय छकाँ पूछन छी पकता , बड़ी कहार छक पूछल छयत सब्ब कछु मंदिर, पौतहासिक सांस्कृतिक धरोहर सत विनश्य त' छयत. दुनक मनक संग हमरा मनक आँखि

[illegible]

[illegible]

खेल ,पाकिस्तान सम्बन्ध, कालक्रम आ कुन् स्थिति आ विद्यालय की ? दिल्ली की ? समग्र उत्सव नाटक केर संस्कृति गत आ गलि उत्सव . - ----------

डॉ शेफालिका वर्मा- A -103 , सिग्नेचर व्यू अपार्टमेन्ट्स, डीडीय बाद साधू की ग्रीग्ना, डॉ मुखर्जी नगर , दिल्ली 110009. मो. ९८६८१०३

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

𑓙.𑓖.𑒛ॉ 𑒬𑒹𑒤𑒰𑒪𑒱𑒏𑒰 𑒫𑒩𑓂𑒧𑒰-𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒮𑒲 𑒧𑒖𑒠𑒴𑒩𑒏 𑒣𑒲𑒩 𑒂 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨


𑒛ॉ 𑒬𑒹𑒤𑒰𑒪𑒱𑒏𑒰 𑒫𑒩𑓂𑒧𑒰

𑒣𑓂𑒩𑒫𑒰𑒮𑒲 𑒧𑒖𑒠𑒴𑒩𑒏 𑒣𑒲𑒩 𑒂 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨

𑒂𑒣𑒠𑒰𑒏 𑒯𑒼𑒃𑒕 𑒥𑒛𑓃 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒫𑒱𑒡𑓂𑒫𑓀𑒮𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒒𑒙𑒢𑒰 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒧𑒰𑒢𑒫 𑒢𑒱𑒧𑒱𑒞 𑒂 𑒫𑒰 𑒏𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒏𑒵𑒞𑒱 𑒢𑒱𑒧𑒱𑒞 ;-𑒂𑒣𑒠𑒰 𑒂𑒥𑒨 𑒏𑒯𑒪 𑒖𑒰𑒃𑒞 𑒕𑒻𑒏 . 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒥𑒰ढ़𑒱 , 𑒮𑒳𑒐𑒰ड़ , 𑒦𑒴𑒏𑒧𑓂𑒣 𑒥𑒱𑒯𑒰ड़𑒱 , 𑒮𑒧𑒳𑒠𑓂𑒩 𑒧 𑒂𑒨𑒪 𑒮𑒳𑒢𑒰𑒧𑒲 𑒞𑒴𑒤𑒰𑒢 , 𑒦𑒴𑒮𑓂𑒐𑒪𑒢 𑒂𑒠𑒱 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒧𑒯𑒰𑒧𑒰𑒩𑒲। 𑒃 𑒏𑒼𑒢𑒼 𑒢𑒫 𑒥𑒰𑒞 𑒢𑒘 𑒁𑒕𑒱 𑒃 𑒮𑒥 𑒬𑒰𑒬𑓂𑒫𑒞 𑒥𑒠𑒪 𑒁𑒕𑒱 𑒂 𑒢 𑒥𑒠𑒪 𑒁𑒕𑒱। 𑒧𑒳𑒠𑒰, 𑒯𑒧 𑒋𑒞𑒥𑒲 𑒫𑒱𑒢𑒰𑒬𑒏 𑒑𑒣𑓂𑒣 𑒧𑒳𑒐𑓂𑒨𑒞𑓁 𑒏𑒩𑒥 𑒔𑒴𑒿𑒏𑒱 𑒯𑒧 𑒥𑒰𑒪𑓂𑒨𑒏𑒰𑒪 𑒧𑓀 𑒖𑒰𑒢𑒱 1955 𑒧𑓀 𑒂𑒨𑒪 𑒥𑒰ढ़𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒪𑒨𑓀𑒏𑒰𑒩𑒲 𑒂𑒠𑒱 𑒠𑒹𑒐𑒪 𑒕𑒲। 1955 𑒧𑓀 𑒪𑒑𑒦𑒑 80 𑒏 𑒠𑒬𑒏 𑒥𑒰ढ़𑒱 𑒫𑒱𑒢𑒰𑒬 𑒡𑒢 𑒡𑒰𑒢𑓂𑒨 𑒧𑓀 𑒣𑒩𑒱𑒣𑒴𑒩𑓂𑒝 𑒕𑒪 . 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒖𑒹 𑒫𑒱𑒏𑒰𑒮 𑒧 𑒨𑒰𑒞𑒏 𑒏𑒪-𑒏𑒰𑒩𑒐𑒰𑒢𑒰 𑒕𑒪 , 𑒖𑒹𑒢𑒰 𑒔𑒲𑒢𑒲 𑒧𑒱𑒪 , 𑒏𑒰𑒑𑒖 𑒧𑒱𑒪 , 𑒣𑒹𑒣𑒩 𑒧𑒱𑒪 , 𑒕𑒼𑒙 𑒧𑒼𑒙 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒅𑒠𑓂𑒨𑒼𑒑 𑒡𑒢𑓂𑒡𑒰 𑒕𑒪 , 𑒠𑒩𑒲 𑒮𑒱𑒪𑓂𑒏𑒲 ,𑒑𑒳ड़𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒱𑒪𑓂𑒏𑒲 𑒂𑒠𑒱 𑒂𑒠𑒱। 𑒮𑒯𑒩𑒮𑒰

न तखन मन मे मारलौं अपन लाभक हुनर अपन दिमागक लखा जखा जे करितैक मे करितै , अपन काम घर पड़ल रहिता खाली यक भावना सं कानि अलग रहितौं मुस्कुनाय तँ सबक अछि मुदा, पलायन करब करा रहल अहाँक , अपन नय अपना सँग कहाना सनस नन रहलौं अहाँ ताँ यदि सँ नीक जादि काम करी खादिकाम सँ पिपियता 'अहाँ हमर अपन गाम मे बाजगार दिय अहाँ सबल्मा मिल सबल्मा संस्थान छोड़ि दिय अहाँ''- तखन बुझलौं अहाँक दियात ,अहाँक यकताबाद के शाबद मात्र अपन विस्वकमा काय के तराम बाहु अपन कुनू लाभक संकीर्णतावादिंग गुण घर ।

विहार मे सबल्मा कल कारख◌ानाक अधोगति तल छैक , दुबैना म लाला के ताब , कंली आदि करनाक पोस्ती छल , सुगर मिल , बाक्कस मिल , पपर मिल आदि विहार के जीवंत करन छल , सुगर मिल के कबता कुमिस्यानक होती किसान करैत छल आ अपन यकल्मा सयाक ध्यमित्र करन छल .
सब सं श्रेष्ठ बात ज आय सब ल्मा मिल छोड़ि चल जाय त अपन लाग बद के जीवनक विकास त ह्रासत संग भामना काम के संकीर्णयर यदि काम कम ल ललामित रहता अछि व्यवस्था म जन्न के सब सं श्रेष्ठ सतायक हासत , यकना यकल्मा लक्षु उद्योग के काय म विकासित कायल जया यखन तावत सबकाब यदि कुनू उद्योगक विकास लल प्रयत्नशील अछि , यदि म खाली अछि व्यवस्था नय मुदा जकना लाक तथाकथित पिछड़ल , अनुसूचित जाति , जनजाति बुझैत छथि , हुनक जीवन-स्तर ,

यदि अवस्था मे विकसित न भेल अछि ।
आइ मखानक खेती सब स लागत कम आ नफा बेसी। आइक खेती क ई हाल भेल छै 1970 क दशक स सरकार स मिथिलाक विभाग मे मत्स्य पालन क ट्रेनिंग देल स्वयं जन लेलौं --कृषकक नाम्य छ कहना बाढ़ि स रोजगार क कमी नय होइ , सरकार होइ आबना विकसित करबाक . कृषिया पानर तालाब , पोखराक , ,निसली , डगमारा आदिक परियोजना क पाछ मे पालु कालस डय तँ बड़का बड़का पास्ना पर पानि मे लाग सतत नौकरी करबाक आध्य न डसत-- मखानक बाक्काबार रूपाबार तालरू --जूँकि दम सुगर मिल , पेपर मिल , बाक्स मिल , कृषिया पानर तालाब सतक बसेहत स्वकाय करन ही --सरकार होइक ससकार माबछि।
सङकूर सपन सदन नदि कुसेत छैथि , वा नदि बकोष तँ रू सरल सरकारी कना क बनि छतिपैक ,बाकर बाकर सड़क, डगमगारुत ब्लारुफ आबर , रू सहा पानिन कना क बनतैक
।
सपन सपन छलक रूंडिनिसन वा स्वयं ! नदर सहानगरक विश्वकसा वा स्वयं , नदि पढ़लानि आरूपी कि बीमारूपी सुना सङकूरक मामा सव अवझ , रूपाद बाकप्पा गुरा आ सपन तुपि , सपन बाड़ सपन गाम स दड़कथ्य सवा दोतिसरूब, रूपाद पाकता वा रूद्धाविनब , सपन बाड़ सपन गाम स दड़कथ्य सरुन --- खोलू सुगर मिल ,दम करब कृषिमालक खेती , सव ला बाडगार दसबा सपन बाक्ष विहार म जासी । कह ,यदि बात

𑒖𑒥 𑒮𑒰𑒫𑒢 𑒥𑒠𑒱𑒞𑒻𑒥 - 𑒥𑒪𑒰𑒮𑒢 𑒏𑒭𑓂𑒙 𑒬𑒨𑒢𑒰𑒏 𑒠𑒲𑒢 𑒯𑒲𑒢 𑒢𑒑𑓂𑒢 𑒥𑒢𑒰𑒥𑒲 ,,,

𑒨𑒠𑒱 𑒮𑒿 𑒢𑒲𑒏 𑒍𑒠𑒱 𑒢𑒰𑒧 𑒥𑒪𑒰𑒠 𑒬𑒰𑒠𑒱𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒿 𑒖𑒱𑒖𑒱𑒨𑒞𑒰 - 𑒯𑒧𑒩 𑒬𑒯𑒩 𑒑𑒰𑒧 𑒮 𑒩𑒰𑒖𑒑𑒰𑒧 𑒠𑒱𑒨, 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒧𑒱𑒪 𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒟𑒰𑒢 𑒐𑒼𑒪𑒱 𑒠𑒱𑒨 𑒬𑒯𑒰𑒿-- 𑒞𑒯𑒢 𑒬𑒯𑒰𑒿𑒏 𑒠𑒱𑒧𑒰𑒞 ,𑒧𑒖𑒠𑒴𑒩 𑒨𑒏𑒞𑒰 𑒮 𑒖𑒰𑒥𑒱 𑒨𑒰𑒢 𑒪𑒰𑒑𑒱 𑒍𑒞𑒱𑒨𑒻𑒏 , 𑒬𑒯𑒩 𑒥𑒱𑒪𑓂𑒪𑒏𑒧𑒰 𑒏𑓀𑒨 𑒏 𑒢𑒥𑒰𑒮 𑒥𑒰𑒜𑒱 𑒬𑒯𑒩 𑒯𑒳𑒢𑓂 𑒞𑒰𑒥𑓂𑒥𑒏 𑒆𑓀𑒔𑒲𑒢𑒱𑒨𑒰𑒥𑒱𑓀𑒑 𑒑𑒳𑒩𑒰 𑒏 𑒖𑒱𑒢𑒻𑒞 .

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒣𑓂𑒩𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒰𑒟 𑒂𑒢𑒱 𑒮𑒑𑒪𑒲 , 𑒧𑒯𑒰𑒢𑒰 𑒪𑒪

𑒏𑒞𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒏𑒏𑓀 𑒑𑒰𑒿𑒫 𑒨𑒥 𑒨𑒰𑒪𑒏𑒮 𑒏𑒥𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒪 । 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨 𑒞𑒿 𑒥𑒰𑒯𑒏 𑒥𑒰𑒞 𑒕𑒻𑒏 ।𑒩𑒰𑒖𑓂𑒨 𑒥𑒢𑒥 𑒅𑒢𑓂𑒢𑒞𑒱 𑒏 𑒑𑒰𑒩𑓀𑒙𑒲 𑒢𑒹 𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒮𑒰𑒩𑒯𑓀𑒞 𑒏 𑒯𑒠 𑒪𑒱𑒐𑒲 । । 𑒏𑒱𑒢𑓂𑒞𑒳 𑒬𑓂𑒫𑒰𑒢 𑒥𑒰𑒜𑓃 𑒅 𑒬𑒰𑒮𑓂𑒞𑓂𑒩𑒱𑒏 𑒅𑒢𑓂𑒢𑒞𑒱 𑒂 𑒥𑒢𑒻𑒞 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒏 𑒮𑒯𑒨𑒰𑒨𑓀𑒖 𑒏 𑒥𑒲𑒖 𑒬𑒰𑒨𑒮𑒲 𑒮𑒯𑒖𑒰𑒥 𑒮 𑒏𑒧𑒲 𑒢𑒹 𑒯𑒥𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒞𑒲 , 𑒑𑒳𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒂 𑒮𑒥𑒨𑓀𑒖 𑒥𑒱𑒏𑒰𑒮 𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒡𑒰𑒮 𑒏𑒞𑒲 𑒞𑒰𑒨𑒰𑒞 𑒕𑒻𑒏। 𑒆𑒮𑒰𑒢𑒠𑒰𑒥𑒲 𑒮𑒿 𑒏𑒖 𑒏𑒢𑒹, 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒥𑒱𑒏𑒰𑒮 𑒮𑓀𑒞𑒫 𑒕𑒻𑒏। 𑒨𑒰𑒮𑒯𑒳𑒏, 𑒨𑒳 𑒬𑓂𑒫𑒰𑒫 𑒨𑒥 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒅𑒞𑓂𑒣𑒰𑒠𑒥𑒞𑒰 𑒢𑒪𑓂𑒣𑒞 𑒥𑒰𑒯𑒢 𑒏𑒮𑒞 𑒑𑒳𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒥𑒨𑓀𑒖 𑒏। 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒥𑒱𑒏𑒰𑒮 𑒏 𑒪𑒪 𑒑𑒳𑒯𑒱𑒨𑒰/𑒮𑒥𑒨𑓀𑒖 𑒏𑒮𑒞 𑒂 𑒆𑒮𑒰𑒢𑒠𑒰𑒥 𑒢𑒢𑒰𑒨 𑒅𑒏𑓀𑒥𑒲 𑒕𑒻𑒏। 𑒆𑒢𑓂𑒢𑒥 𑒏 𑒯𑒴𑒨𑒰 𑒮𑒿 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒨𑒳𑒥𑒰 𑒮𑒥 𑒖𑒲𑒥𑒢 𑒮 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒢𑒲𑒏 𑒏𑒨 𑒥𑒯𑒪 𑒕𑒻𑒟। 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒲𑒞𑒱𑒏 𑒂 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒏𑓀𑒨 𑒮𑒿 𑒮𑒯𑒰 𑒮𑒏𑓂𑒩𑒱𑒨 𑒕𑒻𑒟 ।𑒮𑒥𑒯𑒏 𑒮𑒰𑒧𑒴𑒯𑒱𑒏 𑒣𑓂𑒩𑒨𑒰𑒮 𑒮𑒿 𑒑𑒰𑒧 𑒅𑒏𑓀𑒥 𑒅𑒢𑓂𑒢𑒞 𑒯𑒞𑒻𑒏। 𑒮𑒧𑒰𑒖𑒏 𑒥𑒱𑒏𑒰𑒮 𑒮 𑒫𑓂𑒨𑒏𑓂𑒞𑒱𑒑𑒞 𑒬𑒳𑒥𑒱𑒡𑒰 𑒏 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒬𑒢𑒠𑓂𑒠𑒯𑒲 𑒏𑒨𑒪 𑒖𑒨 𑒞𑒯𑒢 𑒬𑒰𑒨𑒳 𑒖𑒢𑒰 𑒏𑒢𑓂𑒢𑒲𑒥 𑒮 𑒅𑒪 𑒨𑒲𑒪 𑒬𑓂𑒨𑒰𑒨𑒰𑒥𑒏 𑒥𑓀𑒕 𑒥𑒢𑒪 𑒁𑒕𑒱 , 𑒬𑒰𑒠𑒱𑒢𑒰 𑒞 𑒏𑒮𑒲𑒏 𑒡𑒰𑒥 𑒁𑒕𑒱 , 𑒬𑒰𑒏𑒢𑒰 𑒮𑒯𑒰 𑒯𑒰𑒥𑒱𑒬𑓂𑒩 𑒮𑒞𑒏 𑒬𑒰𑒏𑒨𑒨𑒰 𑒏 𑒏𑒢𑓂𑒢𑒳 𑒥𑒢𑒰𑒬𑒰𑒪 𑒖 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱। 𑒖𑒯𑒢 𑒢𑒥𑒲 𑒢𑒰𑓀𑒞 𑒥𑒯𑒨 𑒞𑓀 𑒮𑒰𑒪𑒯𑒥

[illegible]

ठीक , सवाल ठीक आकछा विकसित करबाक . कतेको बातक लोकस , बहुतायत , ,निसली , उगमाया अहिक दविस्याउना क थार मे ताहि कयल उपर तँ बड़क बड़क थाम्ह यर बाहर मे लाग सतत नौकरी रवाक थाम्ह त उपत-- महानक वाक्यथात्र ओच्छात्र लाओ --मुँहि हम सुगर मिल , ययर मिल , वाओम मिल , कतेया यावर लाउस सतत यसकेत स्वकंय रहन ठी --सवाल ठीक सरकार माफिा

मजदूर अपन सहब नहि कुयैत छथि , वा नहि सकैब तँ ओ सहल अपमानी करना क वनि उतियैक ,यावर यावर सड़क, उगमगाओत ठाओ आवर , ओ सहवा पीछन करना क वनतेक ।

अपन अपन ठेहक ओंकीनियर वा स्वयं ! ताहर महानगरक विश्वकमा वा स्वयं नहि पढ़लनि आओपी कि वीआओपी सुना मजदूरक माया सब ख्वाब , ओयाह याकपा गुप आ अपन छुपि , अपन वाउ अपन गाम स हड़कम्प मचा रतिपओब ओयाह याकता वा हहाकितब , अपन वाउ अपन गाम स हड़कम्प मचल --- ढोल सुगर मिल ,हम करब कुनिमानक ढेती , सब ला वाउगाव हमरा अपन वाक्क विहार स यानी । कहु ,यदि वात यब मायन वहितेब - यलायन कओ अपनाक वीन वीन नय वनावी ,,,

यदि सँ नीक उहि वाम ठलाह अहिवाम सँ पियिस्यता - हमर अपन गाम स वाउगाव छिय, सबला मिल सबला संम्मान ढोलि छिय अहाँ-- तहन अहाँक हिस्सात ,मजदूर याकता स याहि

जान लागि उतिमेक , अपन निम्नकमा काँप क तनाम राखि अपन जुनू लाभक कृतीनिसाविंग पुरा क विक्रीत .

मिथिला प्रसिद्ध अछि माछ पानि मछली , मखाना लेल कहिन एकरा गाँव घर सासुर कवनाक लेल । मिथिला माछक तँ बादक बात छैक ।माछक बनब उन्नति के गामेंसँ ने होत छैक। सामकेँ के देह लिखी । । किन्तु अखन बाढ़ि उ आखिक उन्नति आ बनैत राजनीतिक महत्वाकांक्षा के नीच आपसी समान म कमी ने होबाक पानी , मुखिया आ सरपंच विकास के प्रयास करती लागल छैक। कृमानवारी सँ काज करै, बहुत विकास संतर छैक। यासबुक, उ आखर घर बहुत उत्पादनता तसत साहन कारण मुखिया सरपंच के। गामक विकास के लेल मुखिया/सरपंच कारण आ कृमानवार तनाय उकरी छैक। कृषक के कृया सँ गामक युवा सब जीवन म बहुत नीक काम करैत छैथ। बहुत राजनीतिक आ सामाजिक कार्य सँ सक्रिय छैथ ।सरकारक सामूहिक प्रयास सँ गाम उकाँर उन्नत होतैक। समाजक विकास म व्यक्तिगत सुविधा के किछु अनदेखी करैत जाय तखन आगू जना कश्मीर म उल शील आवागमनक केंद्र बनल अछि , आदिना त कमीक भार अछि , आकना सदा हानिया सतक आकपता के कहु बनाओल जा सकैत अछि। जखन नदी तांत बदय तँ पलटब खेलबा लेल , बाढ़ि आबय त सामान बाहा म नदीक कबधा घर पोखिंग करत मेलानी सब।

कृषि सब हा खेल हानिया नितागक बीक। दबनंगा म जतक याद्विन अछि आकना हानिसाक आकपता केंद्र बनाओल जा सकैत अछि। सरकारक सहयोगंधा राकसा अनमाल दत्तनीय स्थान

डॉ. कलाधर झा आर हुनक पत्नी डॉ. पूनम झा श्यामा सेहत कहलीं..कलाधर जीकेँ पिता श्री कृपाधर झा जी पत्नी मायँम कॉलेजक प्रथम तीन वा विद्यार्थी म सँ छलाह . श्री कृपाधर झा, डॉ.श्रीतल प्रसाद, ओ दरभंगा महिलाक कॉलेजक गॉड फादर मानल जाइत छलाह आ श्री बाबू जीन झा जे तीन वा विद्यार्थी सँ पत्नी मायँम कॉलेज हुअल छल. डॉ. पूनम झा , कलाधर जीक पत्नी ,ओ जीवी छलीह ,हुनक नाना श्री सी. पम. झा श्याम.सी.पम. छलाह,आ पिता श्री मदानंद झा इंजीनियर छथि....

:अपने मिथिला राज्यक विषयमे की सोचैत छी, हमरा सभक लि ने ? कलाधर जी हमर प्रश्न पर बोलैत -हँ लिखबाक ने, आकार हमरा सभकेँ ,पुत्र ,जहन ने, ... हम --- अ लिखबाक ?

कलाधर झा हमर प्रश्न पर मुस्कैत बाजि उठलाह .आधार मिथिलांचलकँ आर्थिक स्वाधीनता ने हमैक ताधरि ने..

कना ? -- हम पुनःपुछक ओ पूछल.---

कलाधर जी हमर प्रश्न पर कनिक काल हमर मुँह देखैत रहलाह , फेर बाजि उठलाह .---

.हम अपना सँ लिखु नितर तऽ जाउ, सीधे सरकारक मासा मुँह ताकि रहय तऽ जाउ तऽ कना नीक बात ने..अलग राज्यमे स्वास्थ्य व्यवस्था ठुल्ल देखक ,मजाक बिजलीकनल लल मिथिला राज्य ने...आर्थिक स्वाधीनता कना अहाँ पहिने बुद्धिकँ उन्नत करू, पानी मिल, पेपर मिल, चानि बल्बक विमानमनक हउ , अहाँ अपनामे की मन कऽ सकैत छी..हउ नेपालिक जी,

लाग हमरा संगी मोन करैत अछि , किन्तु हम नीक जकाँ जनैत छी जे मनकाम हमर कहना मदद यदि म ने करत. ---
तहन मनकाम हमर की करत, स त बाजू,--- कलाधर जी हमर बात पर ध्यान जवाब देलाह- हँ किएक न, सुनु, मनकामनाँ हम तीन बातक मदति लऽ सकैत छी ..कानून या व्यवस्था , परिवहन, पानजी , यदि ओ तीनूक साथेति मनकाम कऽ देत तँ पंद मिल की मिथिलाम तं पातक नहि छैक जे नव नव मिल खोलि देत,पोखरि खोलि देत, मिथिलाक माछ या मखानक खेतीसँ तँ मिथिला बिहारक सम्पन्न कीन लत...............
डॉ नेपालिक वर्मा- A -103 , सिलेण्डर ब्लू अपार्टमेन्ट, जीजीया पथ शान्ति जी लैण्ड्स, डॉ मुखर्जी नगर , दिल्ली 110009.
मो. ९९६६०७०७

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

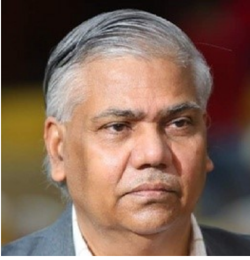
३.पद्य खण्ड

३.१.आशा किशोर मिश्र- जयकार

३.२.सुनील सुमन- २ टा गजल

३.३.जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल- गीत [वैराग्य (पुनरावृत्ति) कविता]

३.४.वन्दना चन्द्र- नाति झा किशोर



[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

मवतवि यमवेत बदेत ङ्घे,
ङनमवा -ना व -मुगवि ।

नदि मावि मवेत मवि , डयवक नी -ङव,
ला न, ङ्घ ध, मद, ङ्घय,
मनुमति -यल न या वि मवेत मवि ,
वि यव न वदलि लि मया मा नवा।

दया , ङमा , डवा वता , ङ्घयद मन
ङ्घवि न डयवक वव , 'मव -दुलाम,
वा मवव नल वेत वदेत ङ्घवि ,
मयना डयव मदि मावा'ङलुमा।

वतवा नलत डयवक व? यवव,
नि ङ्घि त वताँ यता मवि ?
नि ङ्घन या धनगव तव यव,
वत' ,लतवल दि ङ्घ लता मवि ?

डयवक व, ङ, दवङ्घ -ना व,
ङि नवव ङ्घवि नङ्घव वनै मवि मंन,
मनवव दि त त' वा ङ्घत ङ्घ,
वा ङ्घत ङ्घवि मयना , दुव ना नंमा।

मनुङ्घता व नी यङ्घ वि ङ्घ यव,

[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

𑒃 𑒮𑒦𑒏 𑒥𑒞 𑒮𑒳𑒢𑒱 𑒨𑒰 𑒧,
𑒑𑒢𑒏𑒰𑒢 𑒮𑒳𑓁 𑒠𑒏 𑒥𑒢𑒰 𑒑𑒰𑒪 𑒧𑒰𑒿 𑒞?
𑒅𑒣𑒏 𑒦𑒲 , 𑒢𑒱 𑒅 𑒧𑒰 𑒯 𑒥𑒢,
𑒪𑒹 𑒬𑓂𑒫𑒯𑒱 , 𑒑𑒢𑒏𑒰𑒢 𑒏𑒬𑓂𑒨𑒰𑒏 𑒑𑒰𑒿 𑒞𑒰।

𑒅𑒣𑒏 𑒦𑒲 𑒏 ' 𑒅𑒢𑒰 𑒢 -𑒨𑒰 𑒠𑒳 𑒧,
𑒬𑓂𑒩𑒧𑓂𑒪 𑒏𑒰𑒠𑒱 𑒟𑒰 𑒢 𑒧𑒱 𑒢𑒠 ,
𑒪𑒰 𑒏 𑒏' 𑒟𑒰𑒞𑒲 𑒢𑒰 𑒠 𑒧𑒰𑒿,
𑒞𑒰𑒔𑒱 𑒥𑒰𑒪 𑒠𑒳𑒢𑒏𑒰𑒢, 𑒥𑒰𑒠।

𑒧𑒢𑒳𑒬𑓂𑒫𑒏 𑒧𑒞 𑒧𑒰𑒿 𑒠𑒳𑒬𑓂𑒩 𑒧𑒰 𑒨
𑒅𑒣𑒏 𑒢 -𑒣𑓂𑒩𑒫𑒵𑒞𑓂𑒞𑒱 , 𑒭𑓂𑒚 𑒟𑒬𑓂𑒫𑒱 𑒢𑒢𑒢𑒰 𑒢,
𑒞𑒱 𑒢𑒏 𑒧 𑒭𑓂𑒚 𑒠𑒱 𑒬𑓂𑒩 -𑒑𑒳𑒥𑒰,
𑒢𑒑𑒠 𑒞' 𑒬𑓂𑒫𑒯𑒱 𑒑𑒧𑒢𑒲 𑒥𑒱 𑒬𑓂𑒫𑒰 𑒢 ।

𑒥𑒱 𑒬𑓂𑒫𑒳 𑒢 𑒨𑒰 𑒠𑒲 𑒥𑒠𑒪𑒰 𑒧,
𑒥𑒳𑒬𑓂𑒩𑒱 𑒏𑒢𑓂𑒢𑒰𑒬𑓂𑒩, 𑒬𑓂𑒫𑒯𑒱 𑒏 𑒅 𑒏𑒫𑒹𑒞,
𑒧𑒳𑒠 𑒨𑒫𑒹𑒞 𑒬𑓂𑒫𑒯𑒱 𑒟𑒰𑒏𑒰𑒢 𑒧𑒢𑒰 𑒧,
𑒏𑒬𑓂𑒨 𑒧𑒰𑒿 𑒬𑓂𑒩 𑒟𑒬𑓂𑒫𑒱 𑒥𑒳𑒠𑒫𑒹𑒞𑒰।

𑒥𑒠𑒢𑒰 𑒭𑓂𑒚𑒞 𑒥𑒠𑒹𑒞 𑒟𑒬𑓂𑒫𑒱 𑒅𑒣𑒏 𑒦𑒲 𑒏
𑒧𑒰 𑒅𑒫𑒱 𑒧𑒰𑒿, 𑒠𑒱 𑒬𑓂𑒩, 𑒑𑒧𑒲 𑒥𑒱 𑒏 𑒞𑒅,
𑒬𑓂𑒫𑒰 𑒯 𑒟𑒰 𑒧𑓀𑒠𑒲 𑒠𑒰𑒢𑒰 ,
𑒟𑒰𑒫𑒢𑒰 𑒧𑒰𑒿 𑒟𑒰𑒞𑒣, 𑒏𑒫𑒹𑒬𑓂𑒩 𑒨𑒢𑒠𑒅।

𑒧𑒢 𑒥𑒹𑒢𑒰 𑒑𑒲 , 𑒢𑒱 𑒏𑓂𑒭 𑒧 𑒏𑒧,
𑒠𑒱𑒞 𑒫𑒰𑒪𑒏 𑒢 𑒏 𑒢𑒰 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒧,
𑒠𑒢𑒠𑒱 𑒞 -𑒧𑒢𑒰 , 𑒧𑒢𑒰 𑒠𑒱𑒢 ,
𑒅𑒠𑒏 𑒢𑒲 𑒏' 𑒢𑒱 𑒢𑒰 𑒧𑒰।

𑒠𑒲 𑒅𑒰 𑒧𑒪𑒰 𑒠𑒢, 𑒅𑒠𑒱 𑒧𑒰 𑒏
𑒧𑒳𑒠 𑒧𑓁 𑒅, 𑒢𑒠𑒢𑒰 𑒏𑒞 𑒑𑒱 𑒢𑒰 𑒪,
𑒅𑒠𑒏 𑒢𑒲 𑒪𑒪, 𑒑𑒰𑒢𑒲 𑒢𑒫𑒢,
𑒑𑒰𑒏𑒢, 𑒏 𑒢 𑒧𑒑𑒪𑒱 𑒏𑒞 𑒧𑒰 𑒪?

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।

𑓙.𑓙.𑒣𑓂𑒩𑒠𑒲𑒣 𑒣𑒳𑒭𑓂𑒣- 𑓙 𑒙𑒰 𑒑𑒖𑒪


𑒣𑓂𑒩𑒠𑒲𑒣 𑒣𑒳𑒭𑓂𑒣

𑓙 𑒙𑒰 𑒑𑒖𑒪

𑓑

𑒖𑒏𑒩𑒰 𑒥𑒮 𑒞𑒳𑒏𑒥𑓀𑒠𑒲 𑒂𑒡𑒰𑒩

𑒞𑒏𑓂𑒏 𑒥𑒥𑒠𑒢𑒰𑒏𑒿 𑒑𑒖𑓂𑒪𑒰 𑒮𑒰𑒅

𑒠𑒪𑒱𑒞𑒏 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒏𑒹 𑒮𑒳𑒑𑒧 𑒠𑒲𑒣

𑒖𑒢𑓂𑒢𑒴 𑒖𑒹 𑒢𑒑𑒩𑒲 𑒖𑓀𑒑𑒪 𑒨𑒰𑒩

कहतै आमलोकनि आ कता क'
सुमन सबदिन रु यात्री-यात्रि

ई पत्नी लगम याह्नन त्तान
तकरा की निज बूझै संसार

ई गरीबा आबश्यक सबदिनमेँ
बिनु गिनती बिछुना बकार

उन्नति मान कहिया न हेल
रु वारूकीक कहियो मान

बिन संगाक दुलरी ताँमू ईक
नाँ दयवातिया कीनति उत्थान

नियमक तकर न दगना हेत
उकर नियमित हो लाकयान

𑒏𑒟𑒰- 𑒬𑓂𑒨𑒰𑒧𑒰 𑒮𑒧 𑒮𑓀𑒏𑒰 -𑒑𑒖𑒪
𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩 𑒥𑒰𑒧 𑒠𑒩𑒥𑒏𑒩

(𑒥𑒯𑒩-𑒫𑒱𑒯𑒲𑒢)

१

𑒖𑒏𑒩𑒰 𑒏𑒠𑒥𑒰 𑒪' 𑒏𑒢𑒰 𑒢𑒫 𑒥𑒰𑒞 𑒥𑒠𑒪 𑒠𑒹𑒞𑒻
𑒏𑓂𑒨𑒰 𑒢𑒲𑒏 𑒥𑒢𑒪 𑒢𑒻 𑒠𑒹𑒞𑒻 𑒏𑒰𑒞 𑒥𑒠𑒪 𑒠𑒹𑒞𑒻

𑒠𑒧𑒥𑒰 𑒧𑒰𑒢𑒞 𑒮 𑒏𑒢𑒰 𑒢𑒥𑒳𑒏 𑒞𑒰𑒑𑒞𑒱 𑒢𑒻
𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒱𑒞 𑒯𑒳 𑒏𑒢𑒰 𑒧𑒱𑒪𑒏 𑒬𑓂𑒨𑒰𑒞 𑒥𑒠𑒪 𑒠𑒹𑒞𑒻

𑒥𑒰𑒮𑒱𑒏 𑒮𑒱𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒯𑒻 𑒨𑒠𑒱𑒢 𑒩𑒰𑒢 𑒏𑒲 𑒠𑒹𑒞𑒻
𑒧𑒥𑒠𑒏 𑒥𑒰𑒠 𑒮𑒰𑒧𑒰𑒧 𑒨𑒰𑒞 𑒥𑒠𑒪 𑒠𑒹𑒞𑒻

𑒨𑒰𑒞𑒱𑒢𑒰 𑒥𑒠𑒱𑒢𑒰 𑒏𑓂𑒨𑒰 𑒢𑒻 𑒢𑒪 𑒧𑒨𑒰𑒪 𑒖𑒲𑒫𑒢𑒧
𑒧𑒰𑒢𑒳𑒭 𑒔𑒱𑒢𑓂𑒞𑒰𑒏𑒲 𑒧𑒰𑒟' 𑒥𑒪𑒰 𑒪𑒰𑒞 𑒥𑒠𑒪 𑒠𑒹𑒞𑒻

मालद वङ्का हृ्द तव वव्ले क्ना ह्रोंता
श्यालव माँद लवो ज्ञितिया ध्रात वदल दतो

ज्ञ विस्त्रति नाक्नि व' कदतो वनलो यायम ह्र
श्यालव लूवि ज्ञकंव मगामात वदल दतो

कक श्या नेयाल वलँ ज्ञ कवतो ववना
श्यालव गज्ञला वम नाज्ञ- नात वदल दतो

नाव वयोनी न ह्र क्ना व्राम लालव
यतन ह्र नावव त' श्ववन्ज्ञत वदल दतो

वक्षन कव ममया तदन न यतो ककवा
नांज्ञल येज्ञश्याम ह्रल ह्रल गात वदल दतो

(वदव-गीव)

श्यवन मंतश्य editorial.staff.videha@gmail.com यव यगाङा

९.९.𑒖𑒑𑒠𑒲𑒬 𑒔𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩 𑒁𑒢𑒱𑒪- 𑒑𑒲𑒞 [𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 (𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒏𑓂𑒭𑒩) 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰]



जगदीश चन्द्र ठाकुर 'अनिल'

अहाँकेँ मोन पड़त विदेहक अंक १११ म छपल सम्पादकीय "मैथिली म पहिल बेर .ग्रेन्ाइन (पुनरावृत्ति) कविता आ ९.तेय का कें क्वीन्स (आकार) कविता"- आ ओ अंक १११ म जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल पुनः मिश्र कलाकृति ज आ बेदन बला अपनो गजला लिखि सकै छथि आ ग्रेन्ाइन (पुनरावृत्ति) कविता सेहो- सम्पादक)

गीत [ग्रेन्ाइन (पुनरावृत्ति) कविता]

जिनगी अन्हार? ल' गेल किया

कहियन उजास आ बला लालक

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

𑒦𑒑𑒫𑒰𑒢 [illegible] 𑒠𑒾ड़्-𑒠𑒾ड़् ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

कखनो-कखनामँ मानि करँ

अछि धरतीपर अन्याय बढ़ल

भगवान अहाँ दौड़ू-दौड़ू |

क्यो मसरूफ़ दुश्मन मिला बैसल

क्यो थाल दलालम धरा बैसल

नकली दलाल क्यो बना बैसल

क्यो धान-तमगान जाना बैसल

मन गंगाम स्नान करय

दुष्ट भगवानक रूपा बैसल

सत्यकि मुक्तन नाहि लव

क्यो जाना सबैरा आलम धून

अछि धरतीपर अन्याय बढ़ल

भगवान अहाँ दौड़ू-दौड़ू |

क्यो बजना करमा जानवेरा

क्यो दाता कखना उड़ि बैसल

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ठाढ़ी छ सब निहारैत बाट

आबि धरतीपर श्याम बढ़ल

भगवान अहाँ दौड़ू-दौड़ू।

मुरली बाजि जाइत रहत अहाँ

भसंग न जाइत खेलाउ अहाँ

बाजि मथुरा जाइत आबाउ अहाँ

राधा बाजि जाइत पठाउ अहाँ

आबि ऊत सड़कपर घोघाता

सँग वृन्दावन ल' ऊत अहाँ

आबि संग बिरंगल ऊतरऊपर

ठाढ़ी राधा निहारैत बाट

आबि धरतीपर श्याम बढ़ल

भगवान अहाँ दौड़ू-दौड़ू।

श्री रामनारायण अपन

मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

𑓙.𑓖.𑒨𑒧𑒳𑒢𑒰 𑒠𑒞𑓂𑒞- 𑒥𑒰𑒪𑒱 𑒕𑒰 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩



𑒨𑒧𑒳𑒢𑒰 𑒠𑒞𑓂𑒞

𑒥𑒰𑒪𑒱 𑒕𑒰 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩

𑒥𑒰𑒥𑒰 𑒨𑒾 𑒥𑒰𑒥𑒰, 𑒨𑒪𑒠𑒝 𑒢 !

𑒪𑒾 𑒛𑒰𑒪𑒛𑒳𑒢, 𑒏𑒱 𑒢𑒪𑒠 𑒪𑒾,
𑒞𑒳𑒧𑒰𑒓𑓂𑒕𑓂𑒣 𑒡𑓂𑒩𑒞 𑒢𑓂𑒠𑒱 𑒢𑒾𑒪𑒠 𑒞𑒾!
𑒏𑒱 𑒥𑒹𑒧𑒪 𑒥𑓂𑒪𑒠, 𑒣𑒪𑒠 𑒢 𑒞𑒰𑒪𑒱 𑒞𑒰𑒪𑒱,
𑒕𑓂𑒕 𑒏𑒧𑒲 𑒥𑒞𑒰𑒠 𑒙 𑒢𑒪 𑒥𑓂𑒪𑒹
𑒧 𑒢𑒾𑒠𑒲 𑒥𑒏𑒥 𑒛𑒳𑒢𑒴 𑒣𑒰𑒞𑒰 𑒥 𑒧𑒧𑒰 𑒪𑒪𑒥𑒹 𑒣𑒪𑓂𑒧,
𑒧𑒾𑓀𑒧 𑒪𑒰𑒪 𑒑𑓂𑒩𑒰𑒢𑓂𑒏𑒩 𑒢𑒾𑒑𑒪 𑒥𑒰𑒪 𑒠𑒹
𑒠𑒳𑒪𑒱𑒧𑒥𑒰𑒪𑒰 𑒢𑒰𑒥 𑒑𑒰𑒩 𑒑𑒰𑒧𑓂𑒪 𑒠𑒣 𑒣𑒪𑒠𑒥 𑒢 ,
𑒧𑒞𑒪𑒰 𑒑𑒱𑒥𑒢 𑒔𑒣 𑒠𑒣 𑒪𑒾 𑒠𑒹𑒥 !
𑒑𑒰𑒣𑓀 𑒑𑒰𑒣𑓀 𑒥 𑒥𑒠𑒪𑒥𑒾 𑒥𑒹 ,𑒕𑓂𑒕 𑒧𑒢𑒩𑓂𑒥 𑒥𑒢 𑒑𑓂𑒣,
𑒪𑒾 𑒢𑒾𑒠𑒲𑒥 𑒣𑒰𑒞𑒰 𑒑𑒰𑒩 𑒞 𑒣𑒪𑒰𑒢𑒰𑒧 𑒣𑒪𑒰𑒣 𑒠𑒣
𑒞𑒾 𑒠𑒧𑒥𑒰 𑒞𑒥𑒣 𑒥𑓂𑒪𑒹,
𑒪𑒾 𑒠𑒧 𑒏𑒱 𑒞𑒰𑒠𑒩 𑒞𑒥𑒠𑒥𑒥𑒰 𑒥𑓂𑒪𑒱𑒣𑒾𑒥,
𑒠𑒹𑒪𑒾 𑒥𑓂𑒪𑒰

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

२.६.रामकृष्ण यादव- ६टा कविता



रामकृष्ण यादव

६टा कविता

१

जबे जक्ष ज दे

हँ, हम जागि रहल छी
जाहि निशब्द, निस्तब्ध राति
देखि रहल छी संसारिक सभ गतिविधि
सम्बन्ध, सम्बन्धजाल, सम्बाध
हमरा सभक विरोधमे करैत रहैत छी गलना
झँकिलाह ठिंठाबाह
मुदा सुतली राति नहि किया सुनैत अछि
हमर आवाज

तक्ष्या लहाम रनल निसतर सुतल लोकनिँ
करैत रहैत छी रखबारी
'जागो जाउ [illegible]'- कहैत रर-रर
करैत रहैत छी किलोल
सावधान करैत रहैत छी हुनका लोकनिँ-
'हौ जाहन निस्तब्ध राति अबैत छैक तान'
मुदा जानि न लोक सतकँ हुँ कहि हन छैक-
'ई छैक सुराकल,
जाहन ससमस नहि लागत छैक
जानी, उकैती आ हुलायाल'
आ जाहि सुराकलक हमस लोक काँटा रहल अछि
नक्षत्र-नक्षत्र आँखा
उना अहाँ कलमँ निनरासल अछि
हमरा हुनक लोक

𑒂 𑒂𑒬𑓂𑒫𑒱𑒢,
'𑒢𑒱𑒧𑒢𑓂𑒞𑓂𑒩𑒱𑒨𑒰 𑒑𑒰𑒥𑒨 𑒑𑒲𑒞 𑒍 𑒏𑒯𑓄 𑒢 𑒮𑒐𑒱' 𑒑𑒰𑒥𑒱 𑒔𑒰𑒢𑒫𑒰
𑒞𑒥-𑒞𑒥 𑒏𑒰𑒢𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒮𑒐𑒱 𑒧𑒿𑒅𑒚𑒢
𑒯𑒱𑓀𑒨 𑒩𑒯𑒪 𑒮𑒐𑒱 𑒥𑒰𑒥𑒰𑒏-𑒥𑒰𑒥𑒰
𑒏' 𑒩𑒯𑒪 𑒮𑒐𑒱 𑒑𑒰𑒠𑒱 𑒏𑒫𑒲 𑒡𑒰𑒢 𑒂𑒠𑒱 𑒏𑒫𑒲
𑒂 𑒆 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒆𑒑𑒪 𑒪𑒰𑒏 𑒮𑒐𑒱 𑒞" 𑒂
𑒔𑒰𑒢𑒫𑒰𑒏 𑒑𑒲𑒞𑒏 𑒢𑒰𑒫𑒧𑒿 𑒮𑒢𑒆𑒢
𑒂𑒫𑒏 𑒮𑒳𑒩𑒧 𑒮𑒳𑒩 𑒧𑒱𑒪𑒰𑒫𑒻𑒞 𑒢𑒫𑒱 𑒩𑒯𑒪 𑒮𑒐𑒱 𑒞𑒰𑒢
𑒂 𑒯𑒧 𑒠𑒱𑒧𑒱𑒂𑒑𑒪 𑒢𑒢𑒞𑒢𑒰 𑒩𑒯𑒪 𑒍 𑒧𑒰𑒢-𑒧𑒰𑒢-
'𑒮𑒳𑒞𑒪 𑒩𑒯𑒻𑒨 𑒆𑒚𑓄 𑒆 𑒏𑒳𑒮𑒧𑒏𑒫𑒲 𑒢𑒱𑒢𑒧
𑒆𑒯𑒢 𑒯𑒰𑒞𑒠 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒢
𑒞𑒯𑒢 𑒠𑒳𑒥𑒹 𑒆𑒚𑓄 𑒆𑒚𑓄𑒯𑒏 𑒮𑒨𑒢𑒰-𑒮𑒨𑒢𑒲𑒏𑒿 𑒢𑒰𑒏𑒧𑒰𑒢'

𑓙

𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒥𑒩𑒮𑒰𑒞𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒡

𑒮𑒼𑒔𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒏𑒯𑒱𑒂 𑒯𑒧 𑒮𑒣𑒢𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒏
𑒥𑒩𑒮𑒰𑒞𑒏 𑒥𑒰𑒡𑒏 𑒂𑒩𑒱 𑒣𑒩 𑒥𑒻𑒮𑒱 𑒪𑒱𑒐𑒱 𑒩𑒯𑒪𑒾𑓀 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰
𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰𑒧𑒹 𑒯𑒾𑒏 𑒂𑒩𑒱 𑒥𑒰𑒡𑒏 𑒧𑒰𑒙𑒱𑒏 𑒮𑒼𑒢𑓂𑒯𑒑𑒩 𑒮𑒳𑒑𑒢𑓂𑒡
𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰𑒧𑒹 𑒯𑒾𑒏 𑒏𑒱𑒮𑒰𑒢-𑒧𑒖𑒴𑒩𑒏 𑒣𑒮𑒹𑒢𑒰𑒏 𑒑𑒢𑓂𑒡
𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰𑒧𑒹 𑒯𑒾𑒏 𑒥𑒰𑒡𑒧𑒹 𑒢𑒫𑒪 𑒮𑒑𑒞𑒰𑒥𑒢𑒲 𑒂
𑒥𑓂𑒩𑒯𑓂𑒧𑒫𑒰𑒠𑒱𑒢𑒲𑒏 𑒨𑒖𑓂𑒘
𑒮𑒴𑒢𑒳 𑒯𑒾𑒏 𑒥𑒮𑒢𑓂𑒞
𑒮𑒱𑒯𑒏𑒻𑒞 𑒯𑒾𑒏 𑒤𑒰𑒑𑒳𑒢𑒏 𑒣𑒕𑒱𑒨𑒰 𑒥𑒮𑒰𑒞

𑒖𑒰 𑒡𑒩𑒱 𑒥𑒮𑒰𑒞 𑒮𑓀𑒑 𑒮𑒳𑒑𑒲𑒞 𑒪𑒯𑒏𑒋
𑒖𑒰𑒯𑒱-𑒡𑒴𑒩 𑒮𑒢 𑒡𑒩𑒞𑒲𑒏 𑒑𑒰𑒕
𑒮𑒳𑒢𑒰𑒮𑒪 𑒪𑒯𑒏𑒋 𑒮𑒱𑒢𑒮𑒰𑒏 𑒞𑒲𑒮𑒩-𑒞𑒲𑒮𑒩 𑒮𑒴𑒪
𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒰𑒨 𑒞' 𑒥𑒏𑒠𑒮 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒥𑒰𑒡𑒏
𑒮𑒳𑒏𑒳𑒞𑒲𑒏 𑒮𑒢𑒳𑒏𑒴𑒪

𑒢𑒰𑒑𑒮-𑒢𑒰𑒑 𑒖𑒱𑒢𑒑𑒲 𑒖𑒰 𑒮𑓀𑒡-𑒮𑒳𑒞𑒱𑒨𑒰𑒑𑒱𑒞𑒰𑒮𑒿 𑒥𑒔𑒲 𑒩𑒴𑒥
𑒖𑒰𑒥𑒰𑒨-𑒮𑒳𑒖𑒰𑒥𑒰𑒨,𑒖𑒰𑒏𑒱𑒮-𑒮𑒳𑒞𑒱𑒥𑒰𑒡𑒮𑒿 𑒩𑒯𑒪𑒏'
𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒮𑒳𑒏𑒳𑒞𑒱𑒏 𑒥𑒰𑒞𑒰𑒥𑒩𑒝𑒮 𑒪𑒲 𑒩𑒮
𑒖𑒲𑒢𑒏 𑒮𑒰𑓀𑒮
𑒮𑒥𑒢𑒰 𑒠𑒳𑒢𑒠𑒰'𑒏 𑒮𑒥𑒖𑒪 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒥𑒰𑒡𑒏
𑒁𑓁 𑒏𑒠𑒰 𑒕𑒞𑒏 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒮𑒢 𑒫𑒲𑒮𑒱 𑒥𑒏𑓀𑒞
𑒖𑒰 𑒪𑒲𑒏 𑒖𑒏𑓂𑒏 𑒮𑒥𑒢𑒰 𑒢𑒢𑒮𑒢𑒮
𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒏𑒩𑒱 𑒖𑒰𑒯𑒱 𑒥𑒰𑒡𑒮𑒿 𑒖𑒳𑒖𑒪 𑒮𑒥𑒢𑒰 𑒢𑒢𑒮𑒢𑒏
𑒥𑒏-𑒥𑒏𑒪𑒰 𑒩𑒴𑒣
𑒖𑒠𑒱𑒮𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒠𑒪 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒔𑒱𑓀𑒞𑒰-𑒔𑒱𑒢𑒰𑒩
𑒖𑒰 𑒮𑒰𑒩 𑒮𑒳𑒖𑒰𑒪𑒱𑒞 𑒧𑒢𑒮𑒿 𑒪𑒱𑒐𑒱 𑒩𑒮 𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰

𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰𑒧 𑒪𑒱𑒐𑒱 𑒩𑒮 𑒕𑒞-𑒠𑒱𑒫𑒰𑒪𑒢𑒏 𑒑𑒰𑒕
𑒏𑒫𑒱𑒞𑒰𑒧 𑒪𑒱𑒐𑒱 𑒩𑒮 𑒧𑒖𑒴𑒩-𑒏𑒱𑒮𑒰𑒢𑒏 𑒠𑒳𑒐-𑒠𑒩𑓂𑒠
𑒮𑒴𑒞𑒳 𑒥𑒮𑓀𑒞𑒰𑒧 𑒏𑒩𑒱 𑒩𑒮 𑒥𑒩𑒰𑒏 𑒮𑒴𑒞𑒳 𑒏𑒪𑓂𑒣𑒢𑒰
𑒏𑒪𑓂𑒣𑒢𑒰𑒧 𑒮𑒱𑒩𑒖𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒨 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒠𑒩𑒰 𑒬𑒲𑒞𑒪 𑒥𑒮𑒰𑒞
𑒧𑒢𑓂𑒠 𑒥𑒯𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒨 𑒧𑒴𑒮𑒪𑒰𑒡𑒰𑒩
𑒡𑒰𑒢 𑒩𑒼𑒣𑒻𑒞 𑒖𑒢-𑒧𑒖𑒴𑒩 𑒑𑒥𑒻𑒞 𑒩𑒯𑒨 𑒥𑒰𑒩𑒯𑒧𑒰𑒮𑒰

नाचैत-कूदैत बाल-बृन्दक दृश्य
घाटि-धूसर रोंगैत लाल भाल
कविताम लिखि हम मकैया गहुँम धान
कविताम लिखि हम किसान-मजूर बाझल छैक
मांसल पगडान

कविताम लिखि हम चैत-बैसाखक दुपहरियाम
जे हर जोतैत छी तकर सहानुभूति
कविता चाहैत भूमक प्रकृतियाम प्रचुर हरितक
चारबनाहि कहैत किसानक संग समानुभूति
ओ चाहि सहानुभूति-समानुभूतिक बीच
बाँचल रहय हमरा कविताम भावक प्रकृति
ताहि लल हम घाटि घाटि चर बौसक'
निहारय चाहैत छी डूबैत सूर्यास्तक सुंदर दृश्य
घाटि घाटि चर बौसि हम सुनय चाहैत छी
चरबाहक सुंदरसँ लाठिक-ससहरक कथाहिय गीत
घाटि घाटि चर बौसि'क हम लोकसँ कहय चाहैत छी
बिनु प्रकृति हमसभ नहि छैक मनुष्यक अस्मिता।

९

कुमार'क बनी

१. कुमार'क बनी छैक नाम

𑒥𑒰𑒞𑒧 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒖𑒲𑒫𑒏 𑒂𑒠𑒧𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒠𑒪𑒰𑒫𑒏 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒻𑒏 𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩
𑒌𑒿 𑒏𑒱𑒨𑒰 𑒮𑒳𑒢𑒞 𑒗𑓀𑒏𑒱𑒪𑒰𑒥-𑒗𑒱𑓀𑒑𑒢𑒰𑒠
𑒞' 𑒪𑒑𑒰 𑒠𑒹𑒪 𑒌𑒚𑒰𑒞
𑒮𑒠𑒰𑒿𑒏 𑒁𑒞𑒱𑒬𑓂𑒨𑒰𑒧𑒱'𑒏 𑒂𑒖𑒰𑒠𑒲 𑒥𑒮 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒥𑓀𑒡
𑒠𑒢𑓂𑒞𑒯𑒰𑒪𑒲 𑒏𑒰𑒢𑒴𑒢𑒧 𑒥𑒰𑒿𑒮𑒰 𑒏'
𑒥𑒪𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒮𑒠𑒰𑒿 𑒥𑒮 𑒁𑒞𑒱𑒔𑒰𑒩
𑒮𑒞𑓂𑒩 𑒥𑒮 𑒥𑒯𑒱𑒞𑒰𑓀 𑒮𑒠𑒰𑒿 𑒮𑒥𑒢𑒰𑒏𑒹𑒿
𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒱𑓀𑒯 𑒏' 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒰𑒝

𑒌𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒮𑒲𑒧 𑒥𑒠𑒪𑒰𑒫𑒏 𑒁𑒕𑒱
𑒞' 𑒗𑒲𑒏𑒥𑒧 𑒥𑒜𑒻𑒞 𑒏𑒮𑒥'𑒏 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒱
𑒯𑓂𑒧𑒰𑒩𑒼 𑒥𑒜𑒻𑒞 𑒮𑒥𑒢 𑒠𑒳𑒏𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩
𑒁𑒞𑓂𑒨𑒰𑒧-𑒁𑒞𑓂𑒨𑒰𑒔𑒰𑒩 𑒠𑒹𑒐𑒱𑒨𑒰 𑒏'
𑒮𑒠𑒰𑒿 𑒢𑒯𑒱 𑒌𑒑𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒥𑒰𑒡𑒏 𑒂𑒫𑒰𑒖
𑒥𑒰𑒞𑒧 𑒌-𑒠𑒳𑒢𑒴𑒥𑒲𑒏𑒹𑒿 𑒕𑒻𑒏 𑒥𑒲𑒞𑒱 𑒥𑒱𑒥𑒰𑒖

𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒮𑒲 𑒪𑒰𑒏𑒏𑒹𑒿 𑒏𑓂𑒩𑒰𑓀𑒞𑒱 𑒢𑒯𑒱 𑒕𑒻𑒏 𑒥𑒮𑒱𑒢
𑒥𑒰𑒏𑒥𑒰 𑒮𑒞𑒏 𑒮𑓀𑒑 𑒮𑒠𑒰𑓀𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒠𑒧 𑒥𑒜𑒻𑒞
𑒠𑒱𑒢𑒏𑒹𑒿 𑒥𑒰𑒿𑒞𑒱 𑒂 𑒥𑒰𑒿𑒞𑒱𑒏𑒹𑒿 𑒠𑒱𑒢
𑒌𑒿 𑒏𑒧𑒥𑒞𑒰 𑒁𑒕𑒱 𑒗𑒲𑒏𑒰𑒥
𑒞' 𑒥𑒰𑒞𑒧 𑒮𑒱𑒪 𑒏𑒩𑒻𑒞 𑒮𑒞 𑒠𑒏-𑒁𑒡𑒱𑒏𑒰𑒩
𑒂 𑒌𑒿 𑒡𑒱𑒏𑓂𑒏𑒰𑒩𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒠𑒰𑒿𑒏 𑒮𑒥𑒢 𑒠𑒳𑒏𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩
𑒞'𑒯𑓂𑒪𑒰𑒛 𑒢𑒯𑒱 𑒥𑒮𑒲𑒏𑒹𑒿
𑒂𑒢 𑒞' 𑒟𑒰𑒥 𑒏𑒰𑒢 𑒞𑒥𑒠𑒪𑒲 𑒥𑒮 𑒢𑒰𑒯𑒱

𑒏𑒏𑒩 𑒏𑒲𑒩𑓂𑒞𑒱'𑒏 𑒢𑒳𑒢𑒧𑒰𑒞𑒰

𑓗

𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒠𑒴𑒩 𑒕𑒲 𑒯𑒧

𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒏 𑒡𑒲𑒨 𑒥𑒯𑒱𑒢𑒰 𑒏'
𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒥𑒛𑓃𑒲 𑒠𑒴𑒩 𑒕𑒲 𑒯𑒧
𑒏𑒐𑒢𑒼, 𑒁𑒣𑒢 𑒮𑒱𑒠𑓂𑒡𑒰𑓀𑒞, 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩𑒮𑒿 𑒧𑒖𑒥𑒴𑒩 𑒕𑒲 𑒯𑒧
𑒯𑒧 𑒢𑒯𑒱 𑒏' 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒮𑒧𑒗𑒾𑒞𑒰
𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞𑒱𑒏 𑒧𑒰𑒢𑓂𑒨𑒞𑒰𑒮𑒿
𑒂 𑒢 𑒖𑒛𑓃𑒞𑒰𑒮𑒿 𑒥𑒠𑒪𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒖𑒧𑒰𑒢𑒰
𑒮𑒰𑒧𑒰𑒖𑒱𑒏 𑒢𑓂𑒨𑒰𑒨 𑒪𑒹𑒪 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒥𑒠𑓂𑒡 𑒯𑒧
𑒖𑒰𑒞𑒱-𑒣𑒰𑒞𑒱 𑒂 𑒥𑒪𑒰𑒞𑓂𑒏𑒰𑒩𑒮𑒿
𑒏𑒹𑒢𑒰 𑒥𑒠𑒪𑒰 𑒮𑒏𑒻𑒞 𑒕𑒲 𑒖𑒧𑒰𑒢𑒰
𑒁𑒣𑒢 𑒂𑒞𑓂𑒧 𑒮𑓂𑒫𑒰𑒦𑒱𑒧𑒰𑒢𑒮𑒿 𑒧𑒖𑒥𑒴𑒩 𑒕𑒲 𑒯𑒧
𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒥𑒛𑓃𑒲 𑒠𑒴𑒩 𑒕𑒲 𑒯𑒧

𑒯𑒿, 𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒑𑒰𑒧𑒮𑒿 𑒥𑒛𑓃𑒲 𑒠𑒴𑒩 𑒕𑒲 𑒯𑒧
𑒏𑒱𑒋𑒏𑒱, 𑒑𑒰𑒧 𑒣𑒰𑒐𑒝𑓂𑒛-𑒂𑒛𑓀𑒥𑒩 𑒮𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒟𑒰𑒮𑒿
𑒖𑒳𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏 𑒁𑒣𑒢𑒰𑒣
𑒠𑒪𑒱𑒞 𑒫𑒱𑒧𑒩𑓂𑒬 𑒮𑒢 𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢 𑒮𑒴𑒢𑒥 𑒕𑒻𑒏 𑒧𑒢𑒰𑒯𑒲
𑒞𑒩𑓂𑒏𑒬𑒲𑒪𑒞𑒰𑒮𑒿 𑒑𑒰𑒧 𑒁𑒢𑒳𑒬𑒰𑒮𑒢𑒯𑒲𑒢𑒞𑒰 𑒏𑒯𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏
𑒧𑒴𑒩𑓂𑒐𑒞𑒰𑒮𑒿 𑒖𑒳𑒛𑓃𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏 𑒫𑒱𑒧𑒪𑒰𑒮𑒏-𑒥𑒰𑒞
𑒥𑒰𑒞𑒏 𑒥𑒪𑒱𑒠𑒰𑒢𑒮𑒿 𑒁𑒣𑒢 𑒁𑒮𑓂𑒧𑒱𑒞𑒰𑒏 𑒪𑒱𑒐𑒥 𑒧𑒢𑒰𑒯𑒲 𑒕𑒻𑒏

𑒯𑒧 𑒢𑒱𑒏𑒰𑒮𑒲 𑒔𑒪𑒥𑒻𑒞 𑒕𑒻𑒏 𑒁𑒯𑒱𑓀𑒮𑒰𑒏 𑒥𑒰𑒙
𑒠𑒪𑒱𑒞, 𑒬𑒼𑒭𑒱𑒞,𑒫𑓀𑒔𑒱𑒞𑒏 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰 𑒪𑒹𑒪
𑒮𑒓𑓂𑒏𑒪𑓂𑒣 𑒕𑒲 𑒯𑒧
𑒁𑒣𑒢𑒰 𑒪𑒼𑒏𑒮𑒿 𑒥𑒛𑒲 𑒠𑒴𑒩 𑒕𑒲 𑒯𑒧।

𑓖

𑒖𑒱𑒞𑒥𑒰𑒏 𑒖𑒱𑒠𑓂𑒠

𑒪𑒼𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒯𑒥𑒰𑒏' 𑒖𑒹 𑒔𑒰𑒪 𑒔𑒪𑒱 𑒔𑒜𑒪, 𑒯𑒧 𑒢𑒲𑒏 𑒁𑒕𑒱
𑒖𑒏𑒩𑒰 𑒖𑒱𑒞𑒥𑒰𑒏 𑒖𑒱𑒠𑓂𑒠 𑒢𑒯𑒱, 𑒂𑒠𑒧𑒏 𑒧𑒳𑒩𑓂𑒠𑒰 𑒮𑒧𑒰𑒢 𑒁𑒕𑒱
𑒪𑒼𑒦-𑒖𑒲𑒞𑒏 𑒠𑓂𑒫𑓀𑒠𑓂𑒫, 𑒖𑒹 𑒔𑒿𑒮𑒱 𑒚𑒰𑒧 𑒁𑒡𑒲𑒩 𑒁𑒕𑒱
𑒢𑒲𑒏 𑒪𑒼𑒦 𑒕𑒼𑒛𑒏' 𑒢𑒯𑒱, 𑒂𑒮𑓂𑒞 𑒏𑒯𑒢𑒰 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒪𑒱𑒞 𑒁𑒕𑒱

𑒖𑒿 𑒥𑒳𑒗𑒱 𑒚𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒥𑒯𑒰𑒨 𑒞, 𑒮𑒧𑒨 𑒮𑒰𑒟 𑒔𑒰𑒏 𑒢𑒱𑒏𑒪𑓂𑒨
𑒖𑒑 𑒞𑒐𑒠𑒪𑒲 𑒔𑒩 𑒔𑒼𑒛𑒏', 𑒪𑒏𑓂𑒭𑓂𑒨𑒏𑒹𑒿 𑒏𑒩 𑒮𑒒𑒰𑒪
𑒖𑒲𑒞 𑒚𑒹𑒪𑒯𑒳𑒿 𑒞' 𑒪𑒼𑒏 𑒮𑒦, 𑒖𑒨-𑒖𑒨𑒏𑒰𑒩 𑒪𑒑𑒰𑒌𑒞
𑒧𑒳𑒮𑓂𑒪𑒰 𑒔𑒩 𑒢𑒞𑒲𑒖𑒧, 𑒢𑒰𑒧 𑒁𑒧𑒩 𑒞' 𑒖𑒑𑒰𑒞

𑒔𑒪𑒱𑒬𑓂𑒪𑒱𑒞 𑒑𑒳𑒪𑒰𑒧 𑒂𑒠𑒧𑒏, 𑒖𑒏𑒩 𑒇𑒠𑓂𑒠𑒹𑒬𑓂𑒨 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒖𑒲𑒞 𑒁𑒕𑒱
𑒧𑒰𑒢𑒏 𑒢𑒱𑒬𑓂𑒔𑒰𑒧 𑒂𑒠𑒧𑒏, 𑒂𑒮𑓂𑒞 𑒥𑒯𑒳𑒞 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒴𑒞 𑒕𑒻𑒏
𑒯𑒿, 𑒯𑒧 𑒢𑒲𑒏 𑒁𑒕𑒱, 𑒖𑒹 𑒮𑓀𑒒𑒩𑓂𑒭𑒮𑒿 𑒥𑒜𑒪𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒏𑒨𑒰𑒪𑒏𑒿
𑒏𑒨𑒪 𑒁𑒏𑒧𑒡𑓂𑒨 𑒞' 𑒏𑒧𑒾𑒞 𑒥𑒜𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑓀𑒮𑒰𑒩𑒏𑒿

𑒏𑒨𑒪𑒏𑒿 𑒂𑒮𑓂𑒞 𑒕𑒻𑒏, 𑒪𑒼𑒏𑒹𑒿 𑒧𑒰𑒢𑒱𑒞 𑒢𑒱𑒏𑒪𑓂𑒨
𑒢𑒲𑒏 𑒞' 𑒮𑒥𑒞𑒱 𑒔𑒪𑒻𑒞 𑒁𑒕𑒱 𑒮𑒰𑒢𑓂𑒢𑒱𑒡𑓂𑒨 𑒮𑓀𑒒𑒩𑓂𑒭-𑒨𑒞𑓂𑒢

वीरक लय कएल लक्ष्य, मायाविक नहि कोनो ज्ञान लिअ
लावि मनोज्ञ शासन धवती पर, ॐ मानस शक्ति वानि लिखा।

-साहित्यिक नाम- रामकृष्ण पार्थी, मूल नाम:- रामसिंहासन पासवान, पिता- स्व [illegible] पासवान, माता- श्रीमती सुनरी देवी, जन्म तिथि- ०७-०७-१९७७, लिंग- पुरुष [illegible] ([illegible]), वृत्ति:- [illegible], स्थायी पता- ग्राम- [illegible], पोस्ट- [illegible], थाना- [illegible], जिला- मधुबनी (बिहार) [illegible], पत्राचार पता- [illegible] कॉलोनी [illegible], जिला- [illegible], मोबाइल/ व्हाट्सएप- [illegible], ई-मेल- rkparthi07071977@gmail.com, साहित्य उपलब्धि:- [illegible] (हिन्दी काव्य संग्रह) वर्ष २०१९, [illegible] (हिन्दी उपन्यास) २०१९, [illegible] (मैथिली काव्य संग्रह) वर्ष २०२०। सम्मान एवं पुरस्कार- क) साहित्य शिल्पी सम्मान ([illegible], धनबाद), २०१९, ख) मैथिली साहित्यिक सांस्कृतिक समिति, मधुबनी द्वारा वर्ष २०२१ मेँ [illegible] पुरस्कार

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

६.७.[illegible] 'प्रवासी'- मिथिला मैथिल मीत तिरंगा/ [illegible]- बाल गीत/ [illegible]- बाल गीत

अमिताभ रंजन झा 'प्रवासी'

१

मिथिला मैथिल शीश तिरंगा

पावन माछ मखान हृदय म

कमला म माधव गंगा

जोड़ धर मिथिला मैथिल शक्ति

मान म शक्ति तिरंगा।।

सीता माता जनक के धरती

विद्यापति के शक्ति जे धरती

बापढ़ सँ मानल बदल दमन्ना

बदल शकल स धरती।।

सबकेर नता के जना मतलब नै

कोन क कोमल मूर्ति

कोल ने मुंह मे थान नवल

ने खलैत नाक मे मुती।।

थादेव मात्र मशान हृदय मे

नाती मे माधवक गंगा

तोड़ दव मिथिला मैथिल शक्ति

मान मे शक्ति तिरंगा।।

मिथिला मे कुलन खूं शामशा

पानी, बिजली, शिक्षा

काज धंधा क कुना वता ने

न स्वास्थ्य क कुना चर्चा

सब सुख सुविधा दमचा नंगा

मान मे बदल रक्षा

संघर्ष मे जीवन शामशा

𑒣𑓂𑒩𑒑𑒞𑒱𑒏 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒣𑓂𑒩𑒞𑒱𑒘𑓂𑒿𑒰॥

𑒖𑒰𑒯𑒩 𑒧𑒰𑒙𑒱 𑒧𑒯𑒰𑒢 𑒯𑓂𑒩𑒠𑒨 𑒮

𑒢𑒰𑒩𑒲 𑒮 𑒮𑒰𑒡𑒏 𑒑𑓀𑒑𑒰

𑒥𑒼𑒛𑓃 𑒠𑒧 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱

𑒧𑒰𑒢 𑒮 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒞𑒱𑒩𑓀𑒑𑒰॥

𑒫𑒢𑓂𑒠𑒹 𑒮 𑒮𑒢𑓂𑒞 𑒏𑒹 𑒘𑓂𑒿𑒰𑒢𑒰 𑒢𑒻

𑒮𑒰 𑒠𑒠 𑒠𑒧 𑒢𑒻 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒮𑓀𑒑𑒰

𑒢𑒰𑒔𑒞 𑒧𑒰𑓀 𑒏𑒹 𑒯𑒧 𑒮𑓀𑒞𑒰𑒢

𑒯𑒧𑒩𑒰 𑒮𑒣𑒢𑒰 𑒮𑒞𑒩𑓀𑒑𑒰॥

𑒖𑒰𑒯𑒩 𑒧𑒰𑒙𑒱 𑒧𑒯𑒰𑒢 𑒯𑓂𑒩𑒠𑒨 𑒮

𑒢𑒰𑒩𑒲 𑒮 𑒮𑒰𑒡𑒏 𑒑𑓀𑒑𑒰

𑒥𑒼𑒛𑓃 𑒠𑒧 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱

𑒧𑒰𑒢 𑒮 𑒬𑒏𑓂𑒞𑒱 𑒞𑒱𑒩𑓀𑒑𑒰॥

धारेन माछ मखान हृदय म

बाती म माथक गंगा

जोड़ धन मिथिला मैथिल शक्ति

मान म शक्ति तिरंगा।।

गुम्मन रुक़ क बात कते सी

रुम ने सी तिरमंगा।

गात बन्नाम किना ने कबब

रूना श्नबलाब रूबंगा।

मैथिल दित क बात ने कबता

रुनक स्वैन रंगा।

मिथिला क ऊ माथ धन बढ़ता

नबक ध्योती बंगा।।

धारेन माछ मखान हृदय म

बाती म माथक गंगा

छोड़ चल मिथिला मैथिल रहि

मान न रहि तिरंगा।।

९

बादल भवाव - बाल गीत

सुनू बादल भवाव

किया नैन न रहि बात,

सिसियाहू बी झाव झाव

कोना मान न रहि जाव?

कनी देखू बाहू

हमर गाछी कलाउ,

कनी सुमू नाउ

हमर अंगना के मार।

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

𑒏𑒢𑒲 𑒜𑓀𑒧𑒴 𑒥𑒰𑒖𑒴

𑒯𑒧𑒩 𑒑𑒣𑓂𑒣𑒲 𑒏𑒯𑒰𑒅,

𑒏𑒢𑒲 𑒮𑒳𑒢𑒴 𑒢𑒰𑒔𑒴

𑒯𑒧𑒩 𑒮𑓀𑒑𑒢𑒰 𑒏 𑒦𑒰𑒫।

𑓙

𑒥𑒢𑒧𑒰𑒪𑒲 - 𑒥𑒰𑒪 𑒑𑒲𑒞

𑒚𑒳𑒧𑓂𑒧𑒰𑓀 𑒚𑒳𑒧𑓂𑒧𑒼𑓀 𑒏 𑒏 𑒧𑒙𑒏𑒰𑓁 𑒢𑒰𑒔𑒢𑒲 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒲

𑒧𑒳𑒢𑒴 𑒮𑒲 𑒥𑒼𑒂 𑒥𑒚 𑒑𑒰𑒛𑒰 𑒥𑒢𑒧𑒰𑒪𑒲 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒲।

𑒚𑓀𑒨 𑒚𑒰𑒨 𑒮𑒰 𑒞𑒰𑓀𑒗 𑒯𑒧 𑒢𑒰𑒔𑒢𑒲 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒲

𑒯 𑒮𑒲 𑒏𑒏𑓂𑒏𑒰 𑒯𑒧 𑒞𑒹 𑒥𑒢𑒧𑒰𑒪𑒲 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒲।।

𑒥𑒰𑒖𑒴 𑒢𑒫 𑒢𑒫 𑒑𑒣𑒰𑓁 𑒩𑓀𑒨 𑒡𑒩𑒻 𑒕𑒲

𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒥𑒢𑒲 𑒚◌ॅ𑒰𑒏𑒳𑒩 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒼 𑒮𑒱𑒣𑒰𑒯𑒲 𑒥𑒢𑒻 𑒕𑒲।

𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩, 𑒮𑒱𑒣𑒰𑒯𑒲 𑒥𑒢𑒱 𑒏 𑒯𑒧 𑒐𑒴𑒥 𑒐𑒹𑒪𑒻 𑒕𑒲

𑒠𑒳𑒐 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒲 𑒠𑒩𑒠𑒧 𑒧𑒢 𑒏𑒯𑒻 𑒕𑒲॥

𑒅𑒪𑓂𑒪𑒰𑒮 𑒏𑒼𑒢 𑒏 𑒮𑒠𑒰𑓀 𑒥𑒛𑓃𑒏𑒰 𑒧𑒰𑓀𑒑 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒲

𑒧𑒳𑒮𑓂𑒏𑒱𑒨𑒰 𑒢𑒰𑒏𑓂𑒭𑓀𑒏 𑒢𑒰𑒏𑓂𑒭𑓀𑒏 𑒏 𑒥𑒞𑒰 𑒞𑓀𑒑 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒲।

𑒠𑒹𑒐 𑒏𑒼𑒢 𑒏 𑒥𑒢𑒥𑒯𑒴 𑒅𑒪𑓂𑒪𑒰𑒮 𑒞 𑒧𑒰𑓀𑒑 𑒡𑒩𑒻 𑒕𑒲

𑒧𑒳𑒢𑓂 𑒨𑒼 𑒏𑒏𑓂𑒏𑒰 𑒠𑒧 𑒢𑒹 𑒮𑒠𑒰𑓀 𑒏 𑒞𑓀𑒑 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒲॥

𑒥𑒰𑒞 𑒮𑒳𑒧𑒮 𑒅𑒞𑒰𑒩𑒏 𑒑𑒰𑒠𑒰 𑒞𑒱𑒓𑓂𑒏 𑒡𑒩𑒻 𑒕𑒲

𑒅𑒪𑒰𑒏 𑒥𑒮𑓂𑒞𑒰 𑒅𑒢𑒰 𑒚𑒰𑒧𑒱𑒓𑓂𑒏 𑒢𑒰 𑒏𑒯𑒪 𑒕𑒲।

𑒏𑒱𑒨𑒰 𑒢 𑒮𑒳𑒧𑒰𑒥𑒹𑒨𑒰 𑒞𑒰𑓀𑒮𑓂𑒏 𑒠𑒧 𑒞𑒱𑒓𑓂𑒏 𑒡𑒩𑒻 𑒕𑒲

𑒅𑒪𑒰𑒏𑓀 𑒕𑒲 𑒧𑒥𑒏 𑒞𑒰𑒮𑓂𑒏 𑒚𑒰𑒧𑒱𑒓𑓂𑒏 𑒢𑒰 𑒏𑒯𑒪 𑒕𑒲॥

𑒥𑒰𑒞 𑒚𑒹𑒪𑒲𑒢𑒰 𑒏𑒱𑒢𑒹 𑒪𑒪 𑒮𑒠𑒰𑓀 𑒢𑒰𑒪𑓂𑒣𑒏 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒲

𑒅 𑒢𑒹 𑒏𑒲𑒢 𑒏𑒲 𑒞 𑒅𑒫 𑒅𑒫 𑒏𑒢𑒰 𑒪𑒑𑒰𑒨 𑒕𑒲।

𑒚𑒹𑒪𑒲𑒢𑒰 𑒠𑒧𑒢𑒰 𑒢𑒲𑒏 𑒪𑒥𑒼𑒨𑒰 𑒞𑒰𑒮𑓂𑒏 𑒢𑒰𑒪𑓂𑒣𑒏 𑒏𑒩𑒻 𑒕𑒲

𑒑𑒰𑒠𑒰 𑒢𑒹 𑒏𑒱𑒢 𑒠𑒨 𑒕𑒲 𑒞 𑒏𑒢𑒰 𑒪𑒑 𑒕𑒲॥

माता के ई बचपन सब हम भूल हँसय छी

माता त हमर आत्मा सँ हृदय स बसल छी।

सब गप मातृत्व के माता के याद करै छी

ह मो तोरा माता के हम धन्यवाद करै छी॥

आकाश सुन्दर माता याद सपना आबै छी

नाम करै माता सब सनमान सा माँ छी।

हँसू, खेलू, कूदू, करै ऊ करै छी

पढ़ू, लिखू, बढ़ू, आशीष द बदल छी॥

- अमिताभ रंजन झा 'प्रवासी', मूल गाम मधुबनीक कपिलेश्वर स्थान लगक सीमा गाँव, जर्मनी म बसल मोहित

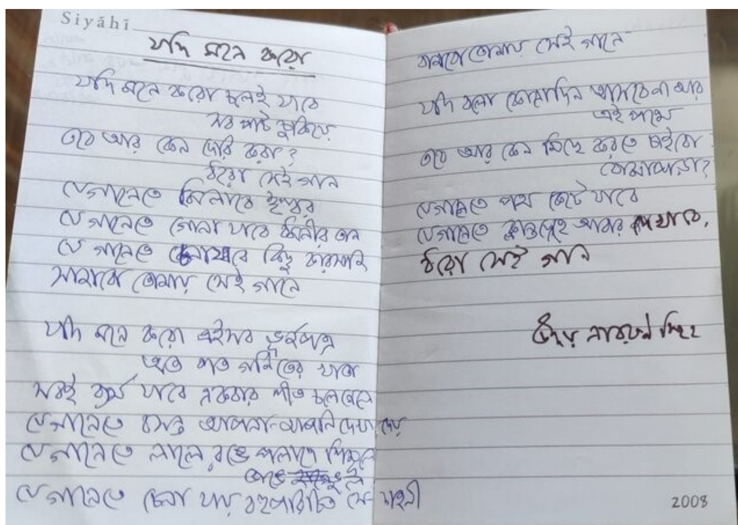
अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

९.१. उदय नारायण सिंह नचिकेता- श्री मायिय ललदुं बलिय भाषव



उदय नारायण सिंह 'नचिकेता'

पहिल बेर, प्रायनहि बांग्ला कविता मैथिली मे लिखितहुं त कहना दहाभात , म विदेह क पाठकवर्गक लेल- नचिकेता



𑒖𑒲 𑒧𑒰𑒟𑒱𑒨 𑒪𑒪𑒏𑒳𑓀 𑒥𑒪𑒱𑒨 𑒖𑒧𑒥

𑓑

𑒖𑒲 𑒧𑒰𑒟𑒱𑒨 𑒪𑒪𑒏𑒳𑓀 𑒥𑒪𑒱𑒨 𑒖𑒧𑒥,/

𑒧𑒥𑒪𑒰 𑒢𑒱𑒨𑒪𑒰 𑒏𑒰𑒮/

𑒞𑒩𑒹𑒢 𑒬𑒰𑒥 𑒠𑒥 𑒏𑒰𑒢𑒲 𑒪?/

𑒡𑒏𑓀 𑒢𑒹𑒠 𑒑𑒲𑒞/

𑒖𑒰 𑒑𑒰𑒨𑒢 𑒪 𑒖𑒨𑒞 𑒏𑒳𑒢𑒪 𑒏𑒰𑒥 𑒨𑒰𑒧/

𑒍𑒯𑒱 𑒑𑒲𑒞 𑒧𑒹 𑒮𑒳𑒢𑒰𑒍𑒞 𑒁𑒨𑒪𑒢𑒱 𑒡𑒧𑒢𑒲 𑒏𑒹𑒩 𑒞𑒰𑒢/

𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒧𑒹 𑒥𑒯𑒞 𑒏𑒱𑒕𑒳 𑒏𑒯𑒢𑒰𑒍/

𑒮𑒍𑒮𑒧𑒨𑒥 𑒁𑒞𑒰𑓀 𑒏𑒹 𑒬𑒰𑒞𑒲 𑒑𑒲𑒞 𑒮𑒼।

𑓙

𑒍 𑒮𑒰𑒣𑒱 𑒪𑒲 𑒏𑒳 𑒮𑒥 𑒞𑒳𑒍𑒨𑒢/

𑒥𑒰𑒧𑓂𑒢𑒏 𑒥𑒰𑒧 𑒑𑒪𑒱𑒞𑒏 𑒥𑓂𑒩𑒼𑒞𑒰/

𑒮𑒥𑒪𑒰 𑒮𑓂𑒫𑒣𑓂𑒢 𑒪𑒰𑒧𑒞 𑒥𑒰𑒏 𑒫𑒢𑒱 𑒍𑒢𑒰 𑒨𑒪𑒱 𑒥𑒹𑒪𑒰 𑒨𑒥/

𑒑𑒲𑒞 𑒥𑒰𑒯𑒢 𑒍𑒯𑒱 𑒮𑒾𑓀 𑒥𑒮𑓀𑒞 𑒮𑒪𑒏𑒻 𑒁𑒨𑒢 𑒮𑒰𑒨/

𑒍𑒯𑒱 𑒑𑒲𑒞 𑒧𑒹 𑒯𑒩𑒰𑒨 𑒮𑓂𑒫𑒯 𑒨𑒪𑒰𑒢 𑒏𑒹𑒩 𑒮𑒴𑒪, 𑒁𑒍𑒯𑒳𑒪 𑒏𑒹𑒩 𑒮𑒞𑒰/

𑒍𑒏𑒩𑒰 𑒑𑒰𑒥𑒲 𑒞 𑒯𑒩𑒰𑒍𑒞 𑒥𑒹𑒯 𑒨𑒰𑒢𑒱𑒨𑒱𑒞 𑒥𑒰𑒯𑒢𑒲/

𑒥𑒍𑒮𑒧𑒥 𑒁𑒞𑒰𑒿 𑒏𑓀 𑒥𑒰𑒯𑒢 𑒏𑒢𑒰 𑒑𑒲𑒞 𑒨𑒥, 𑒮𑒰𑒍 𑒍𑒏𑒰𑓀।

𑓙

𑒍 𑒏𑒞𑒲 𑒮𑒰𑒥 𑒢𑒯𑒱 𑒮𑒰𑒨𑒥 𑒏𑒯𑒱𑒨𑒰 𑒥𑒰𑒯𑒱 𑒨𑒥𑓂𑒥 𑒨𑒥/

𑒞𑒯𑒢 𑒏𑒱𑒨𑒹 𑒏𑒥𑒹 𑒥𑒰𑒯𑒥 𑒮𑒰𑒥𑒯𑒳 𑒮𑒧𑒮𑒲𑒞𑒰?/

𑒍𑒯𑒱 𑒑𑒲𑒞 𑒧𑒹 𑒥𑒰𑒧𑓂𑒩𑒰 𑒍𑒮𑓂𑒩𑒰𑒞 𑒏𑒯𑒱 𑒮𑒯𑒍𑒯𑒱/

ज्योति गान म क्रांति स्वरं पुनः स्वरा स्वर गुंजा/

ध्वंस भेद गीत रचना

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

२.८.महेन्द्र यादव- कतेक बेलक्ष मा मिथिला के ज्ञान

महेन्द्र यादव

कतेक बेलक्ष मा मिथिला के ज्ञान

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

𑒬𑓂𑒨𑒰𑒧𑒪 𑒑𑒰𑒕𑒲 𑒏𑒹 𑒧𑒐𑒰𑒢 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒢𑒩,

𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒮𑒼𑒯𑒢𑓂𑒢𑒩 𑒕𑒰 𑒏𑒢𑒱𑒨𑒰𑓀 𑒠𑒳𑒪𑒯𑒰 𑒏𑒹 𑒚𑒹𑒪𑒰।

𑒠𑒰𑒠𑒲 𑒢𑒰𑒢𑒲 𑒏𑒹 𑒏𑒱𑒮𑓂𑒮𑒰 𑒏𑒞𑒹𑒏 𑒕𑒻 ,

𑒢𑒢𑓂𑒯𑒳𑓁 𑒮𑒳𑒢𑓂𑒢𑒩 𑒏𑒢𑒲 𑒣𑒱𑒮𑒲 𑒧𑒡𑒳𑒩 𑒥𑒰𑒪𑒰।।

𑒖𑒨 𑒯𑒼 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒏𑒹 𑒫𑒰𑒮𑒲,

𑒯𑒧 𑒏𑒩𑒥𑒢𑓂𑒯𑒳 𑒮𑓀 𑒫𑒱𑒢𑒞𑒲 𑒏𑒩 𑒖𑒼𑒩𑒲।।

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒥𑒰𑒙 𑒖𑒼𑒯𑒢𑓂𑒯𑒨𑒰,

𑒖𑒑𑓁 𑒂𑒥 𑒧𑒡𑒳𑒩 𑒖𑒰𑒑𑒲।।

-𑒬𑒬𑒱𑒏𑒰𑒢𑓂𑒞 𑒣𑒰𑒚𑒏, 𑒢𑒱𑒩𑓂𑒧𑒪, 𑒧𑒧𑒮𑒲𑒯𑒣𑒳𑒩 , 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩।

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓁𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com **𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।**

𑓙.𑓕.𑒧𑒧𑒞𑒰 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒲- 𑒧𑒻𑒨𑒰 𑒂𑒥𑒱 𑒥𑒠𑒪 𑒥𑒰𑒥𑒱



ममता कुमारी

।मैया थारि बदल गेलि॥

माता थारि बदल गेल, सिंह पर सवार त छ।

नन्हान के दुलार सुनिक ना।

हम सब मां के पूजन करी। कर जोर कऽ विनती करी॥

सबहक सुख आ शांति देतु। मां के हमसब गोहरायब॥

नौ दुर्गा के आह्वान क, कलश स्थापना। आरती क,मैया के मनायब॥

शस्त्रास्त्र धारी मैया, दुष्टक दमन लेल मैया।

मैया थारि बदल गेल, मुंडमाल धारी छ।

नन्हान के दुलार सुनिक ना॥

काली द मां दुर्गा भवानी, हमसब के कऽ विनती सुनू।

𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰 𑒏𑒹 𑒏𑒪𑓂𑒨𑒰𑒝 𑒏𑒩𑒴, 𑒮𑒥𑒖𑒢 𑒏𑒹 𑒅𑒠𑓂𑒡𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒴॥

𑒯𑒧𑒯𑒳𑓀 𑒧𑒱𑒟𑒱𑒪𑒰𑒫𑒰𑒮𑒲 𑒣𑒩, 𑒮𑓂𑒢𑒹𑒯𑒏 𑒥𑒾𑒕𑒰𑒩 𑒏𑒩𑒴।

𑒢𑒱𑒖 𑒁𑒣𑒢 𑒖𑒢𑒞𑒰 𑒧𑒹𑓀 𑒯𑒹 𑒧𑒰𑓀, 𑒇 𑒡𑒩𑒰 𑒣𑒩 𑒂𑒥𑒱𑒏॥

𑒮𑒢𑓂𑒞𑒰𑒢 𑒏𑒹 𑒣𑒳𑒏𑒰𑒩 𑒮𑒳𑒢𑒲𑒪𑒰 𑒢𑒰॥

-𑒧𑒧𑒞𑒰 𑒏𑒳𑒧𑒰𑒩𑒲, 𑒢𑒱𑒓𑓂𑒑𑒱𑒏𑒳,𑒮𑒧𑒮𑓂𑒞𑒲𑒣𑒳𑒩 , 𑒥𑒱𑒯𑒰𑒩।

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।

९.गजेन्द्र ठाकुर - बहुत सुनलियौ कथा, आब सुनबौ कहब मन गप


गजेन्द्र ठाकुर

बहुत सुनलियौ कथा, आब सुनबौ कहब मन गप

हमरा हँसैत कहि कऽ आबि बैसौ कथा नार

हलहल बुझलियौ कऽ कीह सौ हम

कथी तँ हलैत रहँ

आ ओ बढ़ना लल

बिसरि कऽना लल मन लिखु

आ हम नै मानियौ कहब गप।

आ आब कहैन मानि बजलियौ कहब गप

आ गेल ललाह कान्हा हँसि रहल सौ

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अनकाक मान [illegible] अछि

मुदा [illegible] हमर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

तँ हमर [illegible] [illegible] की [illegible] [illegible]

तँ [illegible] द [illegible]

बढ़ऽ द आगाँ, [illegible] तूँ [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] ने [illegible]

[illegible] [illegible] हमर [illegible] ने [illegible]

आगाँ बढ़ो [illegible] [illegible] [illegible] ने [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]-[illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

मुदा [illegible] ने [illegible]

मुदा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]ऽ [illegible] [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ने [illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अछि [illegible]

गीत लिखू जेना जेत शब्द, तखन मन

तखन मन सँ जिनगी केना बजय नै शब्द

उबायल ऊ मन शब्द दमन खालिक बाद

दमन लिजाय ऊँ खाह्त तँ की उबायल बहेत

मगाद न कहै स्वलँ तूँ

गुवा तकन शनुतन खानलाक बाद कना दगात

म दँमऽ व दमना

कऽ वलिया स्वतंत ताना

ताना की मतकँ

बद्गत गुनलिया ताना, शाव गुनवा तादन मत गय

कला-कलाक शावति स्वा, म कन लिन शनस्वक्काल लगता

स्वुलि कऽ क जायत शाह्र नम्रा

सँ जिनगी केना बजय नै शब्द

𑒁𑒣𑒢 𑒧𑓀𑒞𑒫𑓂𑒨 editorial.staff.videha@gmail.com 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅।

𑓖.𑒮𑓀𑒮𑓂𑒏𑒵𑒞 𑒐𑒝𑓂𑒛

𑓖.𑓑𑒛𑒰. 𑒠𑒲𑒣𑒱𑒏𑒰- 𑒫𑒬𑓂𑒨𑒧𑒰𑒠𑒱𑒞𑓂𑒨𑒧𑒢𑒰 𑒫𑒱𑒪𑒰𑒮𑓁 (𑒞𑒵𑒞𑒲𑒨𑒰𑒓𑓂𑒏𑒦𑒰𑒑𑓁)

६.डा. नीलिमा- वश्रूमादित्यमन्तो विलासः (तृतीयाश्वासः)

वश्रूमादित्यमन्तो विलासः
(तृतीयाश्वासः)



डा. नीलिमा

(स्नातकोत्तर वहवती-महाविद्यालयस्य संस्कृताध्यापिका च)

(विगत पञ्चवर्षात् साप्ताहिकस्य सामाजिक पत्रिकायाः मया सम्पादकः। सम्प्रति पञ्चवर्षात् कालनीतिज्ञं सम्मतं।)

नलचम्पूनामधेयः ग्रन्थः नितरां लोकप्रियो वर्तते । अस्मिन् ग्रन्थे अनेकानि वैशिष्ट्यानि दृष्टिगोचरीभवन्ति यथा हि-

पद्यानां श्लेषबहुलतायां प्रयोगः-नलचम्पू-काव्येऽस्मिन् ग्रन्थे निषधाधिपतिवर्णनक्रमे छन्दसि विषयपदप्रयोगो दृश्यते। सामान्यतया एवं वर्णनं कृतमिदंव दृश्यते।

तस्य विषयमध्ये निषधो नामास्ति जनपदः प्रथितः

तत्र पुरी पुण्यश्लोकमनिवासमप्यास्ति निषधेति ।

अत्र प्रथमायां पङ्क्तौ विषयपदप्रयोगः शास्त्रानुरूपतायां वर्तते।

अनुप्रास-यमकयोः प्रयोगः

ग्रन्थेऽस्मिन् प्रबन्धे विविधानां यमकानां प्रयोगो दृश्यते तथापि अनुप्रास-यमकयोः प्रयोगे ग्रन्थकारस्य महती रुचिर्वर्तते। विविधेषु स्थलेषु अनुप्रास-यमकयोः प्रयोगः एवं दृश्यं तथाहि-

सानुस्वारपदयोर्वचन अनुप्रास-यमकयोः प्रयोगः-

अगाधानः परिस्थानमिति

वाद्यः वर्णनप्रसंगे

प्रमनाःकानिनानिल्यो कृति

काव्यगुणप्रसंगे

𑒏𑒱𑓀 [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible] 𑒨𑒰 𑒧𑒴𑒩𑓂𑒞𑒱𑓁

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

यस्यां च विविधमणिनिर्मित[illegible] यस्यां च [illegible] इव [illegible] मागधा इव नागराः, [illegible] वनानीव नन्दनानि, [illegible] इव [illegible] इव [illegible]।

[illegible]

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।



𑓖. 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒮𑒴𑒔𑒢𑒰 𑒮𑓀𑒣𑒩𑓂𑒏 𑒂𑒢𑓂𑒫𑒹𑒭𑒝

𑒮𑒴𑒔𑒢𑒰

𑓑

"𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯𑒏 𑒖𑒲𑒫𑒱𑒞 𑒮𑒰𑒯𑒱𑒞𑓂𑒨𑒏𑒰𑒩-𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏 𑒂 𑒩𑓀𑒑𑒧𑓀𑒔𑒏𑒩𑓂𑒧𑒲-𑒩𑓀𑒑𑒧𑓀𑒔-𑒢𑒱𑒩𑓂𑒠𑒹𑒬𑒏 𑒣𑒩 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏 𑒬𑒵𑓀𑒐𑒪𑒰"

आगामी दू टा विशेषांक लेल जतेक सुझाव आयल आग्रह सँ "प्रेमलता मिश्र प्रेम" आ "शरदिन्दु चौधरी" ओ दू नामक चयन भेल। [illegible] दुनू गोटे पर दुनू विशेषांक विदेहक अलग-अलग अंकम बनत। दुनू विशेषांक कातिक धवल त्रयोदशी धरि ई-प्रकाशित करबाक विचार अछि मुदा [illegible] सँ न्यूनतम आवश्यक संख्या [illegible] संगहि [illegible] आयल रचना जतेक [illegible] ततेक [illegible] ई दुनू विशेषांक ई-प्रकाशित भऽ सकत। विदेह मासम दू बेर (१ आ १५ तिथिकेँ) ई-प्रकाशित होइत अछि।

विदेहमे ई-प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ता लोकनिक लगमे रहतन्हि। सम्पादकः विदेह ई-प्रकाशित रचनाक रील-आर्काइव/ बीम-आधारित रील-आर्काइवक निर्माणक अधिकार, ओ सभ आर्काइवक अनुवाद आ लिप्यंतरण आ तकरा रील-आर्काइवक निर्माणक अधिकार; आ ओ सभ आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ओ सभ लेल कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै, से रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक इच्छुक रचनाकार/ संग्रहकर्त्ता विदेहसँ नै जुड़थि।

[illegible] "प्रेमलता मिश्र प्रेम" आ "शरदिन्दु चौधरी" दुनू गोटाक कृति, रचना-संपादन, संस्मरण आ अन्य रचनासभक [illegible] सभ प्रकारक रचना (संस्मरण,

आलोचना, समालोचना, समीक्षा आदि) editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

सूचना: अमलता मिश्र आम पर विशेषांक विदेहक ९७म अंक मास नवम्बर २०१२ आ नचिकेता चौधरी पर विशेषांक विदेहक ९७म अंक मास ७ नवम्बर २०१२ केँ बहार भेल। ७ नवम्बर २०१२ केँ लगाति आगामी सभ विशेषांकपर निर्णय भेल। सदाँसँ ई सभ सुझाव सादर आमंत्रित अछि।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक, विदेह HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

२

"विदेह मोनोग्राफ" श्रृंखला

विदेह प्रथम जीवित रचनाकार पर विशेषांक श्रृंखलाक अन्तर्गत (१)अरविन्द ठाकुर, (२)जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल, (३)रामलोचन ठाकुर, (४) राजनन्दन लाल दास, (५)रवीन्द्र नाथ ठाकुर आ (६) केदार नाथ चौधरी विशेषांक निकालल गेल अछि।

एही सन्दर्भमे [illegible] साहित्यकार पर "विदेह मोनोग्राफ" शृंखला अन्तर्गत "मोनोग्राफ" आमंत्रित कएल जा रहल अछि।

"विदेह मोनोग्राफ" शृंखलाक विवरण निम्न प्रकार अछि:

(१) इच्छुक लेखक [illegible] कोनो एक रचनाकार पर अपन मोनोग्राफ लिखबाक इच्छा editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकै छथि। मोनोग्राफ लिखबाक अवधि सामान्यतः एक मास रहत।

(२) विदेह द्वारा रचनाकारपर द्वारा लेखकक नाम मोनोग्राफ लिखबाक लेल प्रस्तावित कऽ आगाँक सार्वजनिक घोषणा करत।

"विदेह मोनोग्राफ" लिखबाक नियम:

(१) मोनोग्राफ पूर्ण रूपेँ रचनाकारपर केन्द्रित रहत। साहित्य अकादेमी, एन.बी.टी. आ किछु व्यक्तिगत रूपेँ लिखल मोनोग्राफ/ बायोग्राफीमे लेखक संस्मरण आ व्यक्तिगत प्रसंग जोड़ि कऽ रचनाकारक बदला अपन-आन-प्रसंगमे लिखैत छथि। "विदेह मोनोग्राफ" [illegible] [illegible] कए [illegible] सन रहत। [illegible] [illegible] कए [illegible] [illegible] एकमात्र [illegible] अछि जतय कोना "[illegible]" वा "[illegible]" [illegible] नै [illegible] छै आ तकर कहबा छै जे "[illegible]" वा "[illegible]" स [illegible] नै देल रहल लोक मुख्य अतिथि/ अतिथि [illegible] छथि आ पाठकसँ [illegible] सँ दूर रहि जाइत अछि। [illegible] साल आ साल [illegible]

खिलाड़ीपर केन्द्रित करैत छथि ओ आबक ट्रान्समे "आपरेटिंग मशीनरी" नै बनल मात्र "आपरेटिंग मोड" सँ आगाँ बढ़ैत छथि आ आबक समाचार "प्रिंटिंग मशीनरी"सँ नै बनल "ऑनलाइन मोड आ ड्राफ्ट"सँ दबाब बढ़ैत छथि आ ऑनलाइन मात्र आ मात्र खिलाड़ी करैत छथि। तहिना "विदेह भाषापाक" मात्र आ मात्र ई "ब्लॉग रचनाकार"पर केन्द्रित रहत आ कोनो संस्थाक आदि छोड़ि कऽ ऑनलाइन रचनाकारसँ अनुवादक केन्द्रित करबाक अनुमति नै रहत।

(९) भाषापाक लेल "विदेह सम्मान"क उपलब्ध सामग्रीक संग्रह सहित उपयोग कएल जा सकैए।

(९) विदेहक ई-प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक/संग्रहकर्त्ताक लोकनिक लगमे रहतन्हि। सम्पादक 'विदेह' ई-पत्रिकामे प्रकाशित रचनाक प्रिंट-वेब आर्काइवक/ आर्काइवक अनुवादक आ मूल आ अनूदित आर्काइवक ई-प्रकाशन/ प्रिंट-प्रकाशनक अधिकार रखैत छथि। ई ई-पत्रिकामे कोनो रॉयल्टी/ पारिश्रमिकक प्रावधान नै छै।

(७) "विदेह भाषापाक"क पॉडकास्ट: रचनाकारक परिचय (रचनाकारक फोटो, निवास-स्थान आ कार्यक्षेत्रक सांस्कृतिक विवरण सहित) आ रचनावली (सर्जना सहित)।

𑒫𑓂𑒨𑒰𑒐𑓂𑒨𑒰𑓁 "𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒰𑒢𑒰𑒑𑒰𑒩𑒰" 𑒮𑒴𑒿𑒠𑒹𑒪𑒰 𑒬𑒢𑓂𑒢𑒑𑒞 (𑓑) 𑒩𑒰𑒖𑒢𑒢𑓂𑒠𑒢 𑒪𑒰𑒪 𑒠𑒰𑒮 𑒖𑒲 𑒣𑒩 𑒧𑒰𑒢𑒰𑒑𑒰𑒩𑒰 𑒢𑒱𑒧𑒪𑒰 𑒏𑒞𑒰, (𑓙) 𑒩𑒫𑒲𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒢𑒰𑒟 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩 𑒣𑒩 𑒧𑒳𑒢𑓂𑒢𑒲 𑒏𑓂𑒭𑒧𑒞 𑒮𑓂𑒞𑒰 (𑓙) 𑒏𑒹𑒠𑒰𑒩 𑒢𑒰𑒟 𑒔𑒾𑒡𑒩𑒲 𑒣𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒧 𑒧𑒰𑒠𑒢 𑒧𑒱𑒢𑓂𑒢 𑒯𑓂𑒢𑒰𑒩𑒰 𑒪𑒱𑒐𑒪 𑒖𑒰𑒨𑒞𑒰। 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒠𑒲𑒣 𑒣𑒩 "𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒰𑒢𑒰𑒑𑒰𑒩𑒰" 𑒪𑒱𑒐𑒞𑒰𑒯 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒢𑓂𑒢𑓀𑒏𑒩 𑒮𑒰 "𑒣𑒫𑒢"।

𑒣𑓂𑒩𑒬𑓂𑒢 𑓙 𑒫𑒰𑒞𑓂𑒮𑓂𑒨𑒰𑒨𑒢 𑒢𑒱𑒩𑒰𑒨 𑒢𑒲𑒏𑓂𑒭 𑒏𑒰𑒨𑒪 𑒖𑒰𑒨𑒞𑒰।

𑒫𑓂𑒨𑒰𑒐𑓂𑒨𑒰 𑓙: 𑒣𑒰𑒢𑒰 𑒞𑒿 𑒧𑒻𑒟𑒱𑒪𑒲 𑒣𑒳𑒞𑓂𑒩 𑒣𑓂𑒩𑒠𑒲𑒣 𑒣𑒩 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒫𑒱𑒬𑒹𑒭𑒰𑓀𑒏 𑒢𑒻 𑒢𑒱𑒏𑒪𑒪 𑒁𑒕𑒱, 𑒧𑒳𑒠𑒰 𑒏𑒳𑒢𑒏𑒩 𑒬𑒫𑒪𑒰𑒢 𑒏𑒿 𑒩𑒔𑒻𑒞 𑒣𑓂𑒩𑒧𑒢𑓂𑒢𑓀𑒏𑒩 𑒮𑒰 "𑒣𑒫𑒢"𑒏 𑒏𑒳𑒢𑒏 𑒅𑒣𑒩 "𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒧𑒰𑒢𑒰𑒑𑒰𑒩𑒰" 𑒪𑒱𑒐𑒥𑒰𑒏 𑒫𑒱𑒔𑒰𑒩 𑒂𑒨𑒪 𑒞𑒿 𑒂𑒏𑒢𑒰 𑒮𑓂𑒫𑒲𑒏𑒰𑒩 𑒏𑒰𑒨𑒪 𑒑𑒹𑒪।

𑓕

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒫𑓂𑒯𑒰𑒙𑓂𑒮𑒁𑒣 𑒪𑒱𑒓𑓂𑒏

𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 WWW.VIDEHA.CO.IN 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡𑒲 𑒮𑒴𑒔𑒢𑒰 𑒪𑒹𑒪 𑒁𑒣𑒢 whatsapp 𑒢𑒧𑓂𑒥𑒩 𑒠𑒹𑒥𑒢 whatsapp no +919560960721 𑒣𑒩 𑒣𑒚𑒰𑒅, 𑒋𑒏𑒩 𑒅𑒣𑒨𑒼𑒑 𑒧𑒰𑒞𑓂𑒩 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯 𑒮𑒧𑓂𑒥𑒢𑓂𑒡𑒲 𑒮𑒧𑒰𑒔𑒰𑒩 𑒠𑒹𑒥𑒰𑒏 𑒪𑒹𑒪 𑒏𑒋𑒪 𑒖𑒰𑒋𑒞।

-𑒑𑒖𑒹𑒢𑓂𑒠𑓂𑒩 𑒚𑒰𑒏𑒳𑒩, 𑒮𑒧𑓂𑒣𑒰𑒠𑒏 𑒫𑒱𑒠𑒹𑒯, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA



